खण्ड-237, अंक-4
शनिवार, 17 अग्रहायण, शक संवत् 1884
(8 दिसम्बर, 1962 ई0)

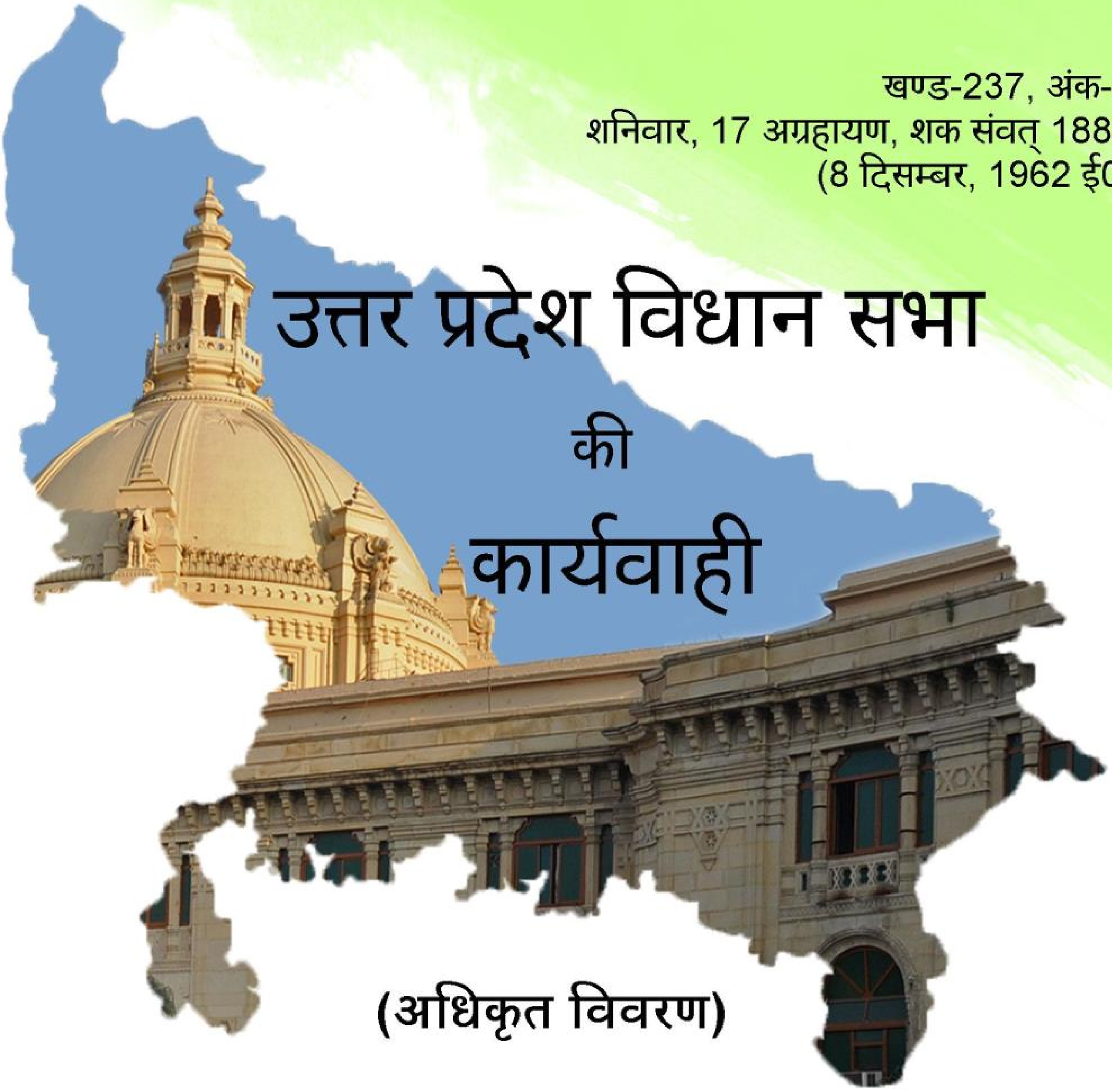

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

खण्ड 237 में 9 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:
निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ , उत्तर प्रदेश (भारत)
९१६३

मूल्य : बिना महसूल 25 पैसे, महसूल सहित 25 पैसे |
वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये |

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ-संख्या
उपस्थित सदस्य	४७३–४७७
यू० पी० मोटर वेहिकिल्स रूल्स में प्रख्यापित संशोधन (मेज पर रखे गये) ..	४७७
यू० पी० मोटर वेहिकिल्स टैक्सेशन रूल्स, १९३५ में प्रख्यापित संशोधन (मेज पर रखे गये)	४७७
वित्त (लेखा परीक्षा तथा बिक्री-कर) विभाग की विज्ञप्ति (मेज पर रखी गयी) ..	४७७
कार्य-स्थगन प्रस्ताव की सूचना (नियम ५२ के अन्तर्गत अनुज्ञा दी गयी) ..	४७७–४७८
लखनऊ विश्वविद्यालय कोर्ट के लिये निर्वाचित सदस्यों के नामों की घोषणा ..	४७८
इलाहाबाद विश्वविद्यालय कोर्ट के लिये निर्वाचित सदस्यों के नामों की घोषणा ..	४७८
राज्य मद्य निषेध बोर्ड के लिये निर्वाचित सदस्यों के नामों की घोषणा	४७८
उत्तर प्रदेश मालगुजारी तथा लगान पर आपातिक अधिभार विधेयक, १९६२ (प्रस्ताव पर कि विधेयक पर विचार किया जाय–विचार जारी)	४७८–५४२

विधान परिषद प्रदेश

उत्तर प्रदेश विधान सभा

शनिवार, ८ दिसम्बर, १९६२

विधान सभा की बैठक सभा-मण्डप, लखनऊ में १० १/२ बजे दिन में अध्यक्ष, श्री मदनमोहन वर्मा, की अध्यक्षता में आरम्भ हुई।

उपस्थित सदस्य—३५९

अक्षयवरसिंह, श्री
अखंडप्रतापसिंह, श्री
अजीज इमाम, श्री
अनीसुर्रहमान, श्री
अब्दुल समी, श्री
अब्दुल हसीब खां, चौधरी
अमजद अली, श्री
अयोध्याप्रसाद, श्री
अवधेशकुमार सिनहा, श्री
अवधेशप्रताप, राजा
अशरफ अली खां, श्री
अष्टभुजा, श्री
इन्द्रपाल, श्री
इन्द्रासनसिंह, श्री
इरतजा हुसैन, श्री
उग्रसेन श्री
उमादत्त, श्री
उमाशंकर, श्री
उमाशंकर तिवारी, श्री
उल्फतसिंह, श्री
ऊदल, श्री
ऋषिनारायण शास्त्री, श्री
एस० जी० दत्त, श्री
ए० सी० प्राइस, श्री
कंधईलाल, श्री
कन्हैयालाल, श्री
कलारानी मिश्रा, श्रीमती
कल्पनार्थसिंह, श्री
कल्याणचन्द मोहिले, श्री (उपनाम छुन्नन गुरू)
कल्याणराय, श्री
काशीनाथबहादुर पाल, श्री
काशीप्रसाद द्विवेदी, श्री
किशोरीलाल अग्रवाल, श्री
किश्वर आरा, बेगम
कृष्णचन्द, श्री
कृष्णसिंह, श्री
कृष्णा, श्री
कृष्णानन्द राय, श्री
केदारनाथ भार्गव, श्री
केशभान, श्री
केशरीप्रसाद पांडेय, श्री
केशव गुप्त, श्री
केशवराम, श्री
केशवसिंह, श्री
कैलाश, श्री
कोतवालसिंह भदौरिया, श्री
खुशीराम, श्री
खेमचन्द, श्री
गंगाधर मैठाणी, श्री
गंगाप्रसाद, श्री
गंगाप्रसाद वर्मा, श्री
गंगाप्रसादसिंह, श्री
गंगासिंह विष्ट, श्री
गणेशचन्द्र काछी, श्री
गणेशप्रसाद, श्री
गयाप्रसाद, श्री
गयाप्रसाद मेहरोत्रा, श्री
गिरजाप्रसाद, श्री
गिरवरप्रसाद, श्री
गुप्तारसिंह, श्री

गुलाबसिंह श्री
गेंदादेवी, श्रीमती
गेंदासिंह, श्री
गोकुलप्रसाद, श्री
गोविन्दसहाय, श्री
घनश्यामदास, श्री
घासीराम, श्री
चतुर्भुज शर्मा, श्री
चन्द्रजीत यादव, श्री
चन्द्रदेव, श्री
चन्द्रभानु गुप्त, श्री
चन्द्रसिंह रावत, श्री
चम्पावती, श्रीमती
चरणसिंह, श्री
चिरंजीलाल जाटव, श्री
चुन्नीलाल, श्री
चैतन्यराजसिंह श्री
छत्रपति अम्बेश, श्री
छांगुर, श्री
छेदालाल चौधरी, श्री
छोटेलाल पालीवाल, श्री
जगदीशप्रसाद, श्री (बहराइच)
जगदीशप्रसाद, श्री (मुरादाबाद)
जगदीशशरण अग्रवाल एडवोकेट, श्री
जगदीशशरण रस्तोगी श्री
जगन्नाथ चौधरी, श्री
जगन्नाथ राव, श्री
जगन्नाथसिंह, श्री
जगमोहनसिंह नेगी, श्री
जगवीरसिंह, श्री
जमादारसिंह, श्री
जमीलुर्रहमान किदवई, श्री
जयगोपाल, श्री
जलील अब्बासी, काजी
जुगलकिशोर, श्री
जेड० ए० अहमद, श्री
जे० पी० मिश्र, श्री
झारखंडेराय, श्री
झिलमिटराम, श्री
टम्बेश्वरीप्रसाद, श्री
डल्लाराम, श्री
डूंगरसिंह, श्री
तमेश्वरप्रसाद, श्री
तेजनारायण त्रिवेदी, श्री
तेजभानसिंह, कुंवर
त्रेपनसिंह, श्री
दयाराम शाक्य, श्री
दलजीतसिंह, श्री
दीनदयाल करबरिया, श्री
दीपनारायणसिंह, श्री
दुर्गाप्रसाद, श्री
दुर्योधन, श्री
देवदत्त मिश्र, श्री
देवीदत्त, श्री
देवेन्द्रसिंह, श्री
देशराज सिंह, श्री
दौलतलाल, श्री
द्वारकाप्रसाद पांडेय, श्री
द्विजेन्द्रनारायण, श्री
धर्मदत्त वैद्य, श्री
धर्मसिंह, श्री
धूमप्रसाद, श्री
नत्थाराम रावत, श्री
नन्दकुमारदेव वाशिष्ठ, श्री
नरदेवसिंह, श्री
नरसिंहनारायण पाण्डेय, श्री
नरेन्द्रसिंह, श्री
नरेन्द्रसिंह विष्ट, श्री
नरोत्तमसिंह, श्री
नवरंगसिंह, श्री
नाथूराम शिक्षक, श्री
नारायणसिंह, श्री
नित्यानन्द पाण्डेय, श्री
नियाज हसन खान, श्री
नियामतुल्ला अन्सारी, श्री
नेकराम शर्मा, श्री
नैनसिंह, श्री
नौनिहालसिंह चौधरी, श्री
नौरंगलाल, श्री
पंचमदास, श्री
परमाई लाल, श्री
पशुपतिनाथशरणसिंह, श्री
पातीराम अहरवार, श्री
पितईराम, श्री
पूरनलाल, श्री
प्रकाशवती सूद, श्रीमती
प्रेमसिंह, श्री
प्रेमसुन्दर, श्री
फूलसिंह, श्री
बंकटासिंह, श्री (टुन्नू सिंह)

बंशीधर पाण्डेय, श्री
बंशीधर मिश्र, श्री
बद्रीप्रसाद, श्री
बद्रीप्रसाद पालीवाल, श्री
बनवारी लाल विप्र, श्री
बनारसीदास, श्री
बब्बनसिंह, श्री
बलदेवसिंह आर्य, श्री
बलवीर सिंह , श्री
बसन्तलाल, श्री
बसन्तलाल शर्मा, श्री
बसन्तसिंह, श्री
बांकेलाल, श्री
बाबूसिंह, श्री
बालकराम वैश्य, श्री
बालोजी अग्रवाल, श्री
बिपिनबिहारी तिवारी, श्री
बिशनलाल यादव श्री
बृजबिहारी, श्री
बृजभूषण शरण, श्री
बृजमोहन लाल गुप्त, श्री
बृजराज सिंह, श्री
बृजरानी, श्रीमती
बेचनराम, श्री
बेदराम, श्री
बेनीबाई, श्रीमती
बैजूराम, श्री
ब्रह्मदत्त मायर, श्री
भगवानदास, श्री
भगवानदास यादवेन्दु, श्री
भगवानदीन, श्री
भगवानसहाय, श्री
भगौतीदीन, श्री
भानुप्रताप सिंह, श्री
भीखालाल, श्री
भीमाप्रसाद, श्री
मंगलप्रसाद आर्य, श्री
मंगलदेव, श्री
मतोलासिंह, श्री
मदनपालसिंह, श्री
मनसाराम, श्री
मन्नालाल, श्री
महमद अली खां, श्री
महमूद हसन खां, श्री
महरामसिंह, श्री
महावीरप्रसाद, श्री
महावीरप्रसाद श्रीवास्तव, श्री
महेन्द्रसिंह, श्री
माधोनारायण, श्री
माधोप्रसाद त्रिपाठी, श्री
मान्धातासिंह, श्री
मुकन्दीलाल बैरिस्टर, श्री
मुकुटबिहारीलाल, श्री
मुजफ्फर हसन, श्री
मुन्नूसिंह, श्री
मुरलीधर कुरील, श्री
मुलतानसिंह, श्री
मुहम्मद रफी खां, श्री
मूलचन्द शास्त्री, श्री
मेघनाथसिंह शिशोदिया, श्री
मेवालाल, श्री
मेड़ीलाल, श्री
मैनेजरसिंह, श्री
मोहनलाल, आचार्य
मोहनलाल अहिरवार, श्री
मोहनसिंह, श्री
यशपाल, श्री
यशोदादेवी, श्रीमती
यादवेन्द्रदत्त, श्री
यादवेन्द्रसिंह, श्री (लल्लन जी)
योगेश्वरप्रसाद खंडूड़ी, श्री
रक्षपालसिंह, श्री
रघुनाथ, श्री
रघुनाथसिंह, श्री
रघुवीर, श्री
रघुवीरसहाय कैथवार, श्री
रघुवीरसिंह, श्री
रणबहादुर सिंह, श्री
रतीपाल, श्री
रमाकान्तसिंह, श्री
रमेशचन्द्र शर्मा, श्री
राघवेन्द्रप्रतापसिंह, श्री
राजनाथ सिंह, श्री
राजनारायण, श्री
राजनारायण सिंह, श्री
राजनारायण मिश्र, श्री
राजाराम, श्री
राजेन्द्रकिशोरी, श्रीमती
राजेन्द्रकुमारी बाजपेयी, डाक्टर
राजेन्द्रसिंह, श्री

विधान सभा प्रदेश

राजेन्द्रसिंह यादव, श्री
राधेश्याम शर्मा, श्री
रामअधार कनौजिया, श्री
रामअधीनसिंह, श्री
रामअवध, श्री
रामआसरे, श्री
रामकिंकर, श्री
रामकिशोर त्रिपाठी, श्री
रामकिशोर वर्मा, श्री
रामकुमार शास्त्री, श्री
रामचन्द्र विकल, श्री
रामचन्द्रसिंह, श्री
रामचरण शाह, श्री
रामजीलाल सहायक, श्री
रामनाथ पाठक, श्री
रामपाल त्रिवेदी, श्री
रामपालसिंह, श्री
रामप्यारे, श्री
रामप्रसाद देशमुख, श्री
रामबली मिश्र, श्री
रामभजन, श्री
राममूर्ति 'अंचल', श्री
रामरती, श्रीमती
रामलखन वकील, श्री
रामलाल, श्री
रामशंकर रविवासी, श्री
रामसमझावन, श्री
रामसिंह, श्री (मैनपुरी)
रामसिंह, श्री (सहारनपुर)
रामसुन्दर पाण्डेय, श्री
रामसुन्दर शास्त्री, श्री
रामसूरतप्रसाद, श्री
रामायणराय, श्री
रामेश्वरनाथ, श्री (उपनाम चौबे)
रियासत हुसैन, श्री
रुकुमसिंह राठौर, कुंवर
रुद्रप्रतापसिंह, कुंवर
लक्ष्मीशंकर यादव, श्री
लखपतराम शर्मा, श्री
लखोसिंह, श्री
लालबहादुरसिंह, श्री (जौनपुर)
लालबहादुरसिंह, श्री (वाराणसी)
लोकपालसिंह, श्री
वशिष्ठनारायण शर्मा, श्री
विक्रमशाह, राजा
विचित्रनारायण शर्मा, श्री
विजयकुमार, श्री
विजयपालसिंह, श्री
विजयशंकर, श्री
विजयशंकरसिंह, श्री
विजयसिंह, श्री
विद्यावती राठौर, श्रीमती
विनयलक्ष्मी सुमन, श्रीमती
विश्वनाथ पाण्डेय 'प्रणव', श्री
विश्वनाथप्रसाद, श्री
विष्णुप्रतापसिंह, श्री
वीरसेन, श्री
वैजनाथ पाण्डेय, श्री
शंकरलाल, श्री
शकुन्तलादेवी, श्रीमती
शकुन्तला नायर, श्रीमती
शराफत हुसैन रिजवी, श्री
शशिभूषणसिंह, श्री
शान्तिचन्द्र शुक्ल, श्री
शान्तिप्रपन्न शर्मा, श्री
शारदानन्द, श्री
शिवदानसिंह, श्री
शिवनाथसिंह, श्री
शिवप्रसाद, श्री
शिवमंगल, श्री
शिवराजसिंह, श्री
शिवसम्पत्ति शर्मा, श्री
शिवेन्द्रप्रताप, श्री
शीतलप्रसाद, श्री
शुगनचन्द मजदूर, श्री
शुगनचन्द शर्मा, श्री
श्यामलाल, श्री
श्यामसुन्दर, श्री
श्रद्धादेवी, कुमारी
श्रीनिवास, श्री
श्रीपालसिंह, कुंवर श्री
श्रीराम, श्री
श्रीराम तिवारी, श्री
सईद अहमद, श्री
सत्यदेव, श्री
सत्यनारायण पाण्डेय, श्री
सत्यवीर कुंवर, श्री
सन्तसिंह यूसुफ, श्री
सहदेवसिंह, श्री
सियादुलारी, श्रीमती

सियाराम गंगवार, डाक्टर
सीताराम, डाक्टर
सुक्खनलाल, श्री
सुखदेवप्रसाद, श्री
सुखरामदास, श्री
सुखलाल, श्री (इटावा)
सुखलाल, श्री (लखनऊ)
सुदामाप्रसाद गोस्वामी, श्री
सुरजनराम विशारद, श्री
सुरेन्द्रदत्त बाजपेयी, श्री
सूबेदारसिंह, श्री
सूरजपालसिंह, श्री
सुरेन्द्रविक्रम, श्री
सुशीला रोहतगी, श्रीमती
सोहनलाल धुसिया, श्री
हमीद खां, श्री
हरिगैनराम, श्री
हरिनाथ तिवारी, श्री
हरीदत्त काण्डपाल, श्री
हरीशकुमार गंगवार, श्री
हरीसिंह, श्री
हलीमुद्दीन, श्री
हिम्मतसिंह, श्री
हुकुमसिंह विसेन, श्री
हेतरामसिंह, श्री
हेमराज, श्री
हेमवतीनन्दन बहुगुणा, श्री
होतीलाल अग्रवाल, श्री
होरीलाल यादव, श्री

नोट—नियोजन मंत्री, श्री हरगोविन्दसिंह तथा वन मंत्री, श्री अलगूराय शास्त्री भी उपस्थित थे ।

यू० पी० मोटर वेहिकिल्स रूल्स में प्रख्यापित संशोधन*

चिकित्सा उप-मंत्री (श्री धर्मसिंह)—अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी आज्ञा से यू० पी० मोटर वेहिकिल्स रूल्स, १९४० में, परिवहन विभाग की विज्ञप्ति संख्या एम० बी० आर-ए-एम०-४४—२२१६-टी०एम०—३०-बी०, दिनांक २४ सितम्बर, १९६२ के अधीन प्रख्यापित संशोधन को मोटर वेहिकिल्स ऐक्ट, १९३९ की धारा १३३ की उपधारा (३) के अनुसार सदन की मेज पर रखता हूं ।

यू० पी० मोटर वेहिकिल्स टैक्सेशन रूल्स, १९३५ में प्रख्यापित संशोधन*

चिकित्सा उपमंत्री (श्री धर्मसिंह)—अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी आज्ञा से यू०पी० मोटर वेहिकिल्स टैक्सेशन रूल्स, १९३५ में परिवहन विभाग की विज्ञप्ति संख्या एम०बी०टी० आर-ए०एम०/८-३६४७-टी०एम०/३०-बी०—१०५-पी-६१, दिनांक ६ अक्तूबर, १९६२ के अधीन प्रख्यापित संशोधन को, मोटर वेहिकिल्स टैक्सेशन ऐक्ट, १९३५ की धारा २१ के अनुसार सदन की मेज पर रखता हूं ।

वित्त (लेखा परीक्षा तथा बिक्री-कर) विभाग की विज्ञप्ति†

रसद उपमंत्री (श्री बलदेवसिंह आर्य)—अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी आज्ञा से उत्तर प्रदेश बिक्री-कर ऐक्ट, १९४८ की धारा (३-क) के अधीन प्रख्यापित वित्त (लेखा परीक्षा तथा बिक्री-कर) विभाग की विज्ञप्ति संख्या एस०टी०-६४३८/१०—१०-१२-६२, दिनांक १ दिसम्बर, १९६२ को उक्त धारा की उपधारा (३) के अनुसार सदन की मेज पर रखता हूं ।

कार्य-स्थगन प्रस्ताव की सूचना

श्री अध्यक्ष—एक कार्य-स्थगन प्रस्ताव आया है माननीय नाथूराम शिक्षक का । उसको मैंने नियम ५२ में स्वीकार किया है । माननीय खाद्य मंत्री, इस संबंध में आज वक्तव्य देंगे या कब देंगे ?

---

*छापे नहीं गये ।
†छापी नहीं गयी ।

रसद मंत्री (श्री जगमोहनसिंह नेगी)---अध्यक्ष महोदय, अभी मिला है यह। सोमवार को मेरे खयाल से ठीक रहेगा ।

श्री अध्यक्ष---ठीक है । उसका विषय इस प्रकार है---"प्रदेश में अनाज के दामों में भारी गिरावट हो रही है । दिन प्रति दिन मूल्य गिर रहे है । परन्तु किसान की आवश्यकता की अन्य वस्तुयें जैसे कपड़ा, तेल, शकर, लोहा, टीन, मसाले, लकड़ी, आदि के मूल्यों में कोई गिरावट नहीं हो रही है, बल्कि मूल्य बराबर बढ़ ही रहे हैं । इसी परेशानी की दशा में किसान पर लगान वृद्धि भी होने जा रही है ।

इस परिस्थिति की विषमता के कारण कृषक वर्ग की हालत अत्यन्त चिन्ताजनक हो रही है । सरकार परिस्थिति पर नियंत्रण कर पाने में बिलकुल असफल रही है । पूरे प्रदेश में सरकार के प्रति घोर असंतोष, उत्तेजना तथा अविश्वास का वातावरण व्याप्त हो रहा है जो कि इस संकट-काल में किसी भी प्रकार से श्रेयस्कर नहीं है ।"

यह इसका विषय है ।

लखनऊ विश्वविद्यालय कोर्ट के लिये निर्वाचित सदस्यों के नामों की घोषणा

सचिव, विधान सभा---लखनऊ विश्वविद्यालय के पांच सदस्य जो निर्वाचित हुये हैं वह इस प्रकार से हैं---

(१) श्री केशरीप्रसाद पांडेय (जौनपुर), २---श्री टम्बेश्वरी प्रसाद (सीतापुर), ३---श्री नरेंद्र सिंह विष्ट (अल्मोड़ा), ४---श्री बंशीधर मिश्र (खीरी), ५---राजा विजय कुमार (लखनऊ) ।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय कोर्ट के लिये निर्वाचित सदस्यों के नामों की घोषणा

सचिव, विधान सभा---इलाहाबाद विश्वविद्यालय कोर्ट के लिये निम्नलिखित सदस्य निर्वाचित हुये हैं---

१---श्री काशीनाथ मिश्र (बलिया), २---श्री जगन्नाथ सिंह (फतेहपुर), ३---श्री नौनिहाल सिंह चौधरी (इलाहाबाद) , ४---डाक्टर राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी (इलाहाबाद), ५---श्री रामसिंह चौहान (सहारनपुर) ।

राज्य मद्य निषेध बोर्ड के लिये निर्वाचित सदस्यों के नामों की घोषणा

सचिव, विधान सभा---राज्य मद्य निषेध बोर्ड के लिये निम्नलिखित सदस्य निर्वाचित हुये हैं---

१---श्री केशव सिंह (जिला शाहजहांपुर), २---श्री नरोत्तम सिंह (जिला बदायूं), ३---श्री रामकिशोर वर्मा (जिला फतेहपुर), ४---श्री श्याम लाल (जिला बस्ती)।

†उत्तर प्रदेश मालगुजारी तथा लगान पर आपातिक अधिभार विधेयक, १९६२---(क्रमागत)*

श्री अध्यक्ष---आज हमको यह सामान्य विवाद समाप्त करना है ।

नरश्रीसहनारायण पांडेय (जिला गोरखपुर)---मैं तो पांच मिनट ही लेना चाहता हूं ।

---

† ४ दिसम्बर, १९६२ की कार्यवाही में छपा है ।

* ७ दिसम्बर, १९६२ की कार्यवाही से ।

श्री अध्यक्ष—अच्छा तो कहिये।

श्री नरसिंहनारायण पांडेय—अध्यक्ष महोदय, मुझे यह निवेदन करना है कि यह जो बिल पेश किया गया है यह हमारी इस असेम्बली की लेजिस्लेटिव कांपिटेंस के बाहर है। इस पर डिस्कशन नहीं हो सकता। मेरा कहना दो बातों पर आधारित है। पहला यह है कि अगर आप इस उत्तर प्रदेश मालगुजारी तथा लगान पर आपातिक अधिभार विधेयक, १९६२ के सेक्शन ६ को देखें तो उसमें यह लिखा हुआ है कि—"आपात की उद्घोषणा" का तात्पर्य "भारत का संविधान" के अनुच्छेद ३५२ के खंड (१) के अधीन भारत के राष्ट्रपति द्वारा २६ अक्तूबर, १९६२ को जारी की गई आपात की उद्घोषणा से है। इसके उद्देश्य और कारणों में भी यही कहा गया है कि २६ अक्टूबर, १९६२ को प्रेसीडेंट ने एक प्रोक्लेमेशन किया और उस प्रोक्लेमेशन के मातहत आज हमारे देश और प्रदेश में एक आपत्ति आई हुई है। उस आपत्ति का मुकाबला करने के लिये और सुरक्षा की कार्यवाही करने के लिये हमको पैसे की जरूरत है इसलिये यह विधेयक प्रस्तुत है।

श्रीमन्, आपका ध्यान प्रेसीडेंट की उस घोषणा की ओर दिलाना चाहता हूं जो ३५२ (१) के अनुसार की गई है कि उसका क्या असर पड़ता है। इमरजेंसी काल में जो २६ अक्तूबर, ६२ को घोषणा हुई हमारे राष्ट्रपति की तरफ से उसका असर दो तरह से होगा—एक तो उसका असर एक्जिक्यूटिव पर होगा और दूसरा उसका असर हमारी लेजिस्लेटिव काम्पिटेंस क्या रह जाती है उस पर होगा। श्रीमन्, जब इस तरह की घोषणा होती है तो उस समय सारी पावर सेंटर में वेस्ट कर जाती है। अगर किसी प्रदेश के ऊपर आपत्ति नहीं होती तो उस समय उस प्रदेश को छोड़कर जहां पर आपत्ति पैदा होती है वहां पर प्रेसीडेंट की एक्जिक्यूटिव पावर लागू होती है और जो पावर पार्लियामेंट को लेजिस्लेटिव कांपिटेंसी की होती है वह लागू होती है। मैं आपका ध्यान ३५३ (बी) की तरफ दिलाना चाहता हूं। उसमें आप देखें—

"EFFECT OF PROCLAMATION OF EMERGENCY.

(*b*) the power of Parliament to make laws with respect to any matter shall include power to make laws conferring powers and imposition of duties, or authorising the conferring of powers and the imposition of duties upon the Union or officers and authorities of the Union as respects that matter, notwithstanding that it is one which is not enumerated in the Union List."

मेरे कहने का मतलब यह है कि लेजिस्लेटिव कांपिटेंसी यहां पर पार्लियामेंट को है न कि इस विधान सभा को है कि आप इस तरह का बिल ले आयें, क्योंकि अगर आप आगे देखेंगे तो ३५५ में आप पायेंगे कि बाहरी या अन्दरूनी कोई स्ट्राइफ, अगर किसी तरह की कोई हालत पैदा हो जाती है तो उस समय पार्लियामेंट की जिम्मेदारी हो जाती है स्टेट के विषय में भी कानून बनाने की। जब पार्लियामेंट और प्रेसीडेंट की बाहरी या अन्दरूनी हमला होने पर जिम्मेदारी हो जाती है तो उस प्रोक्लेमेशन के बाद पावर मेकिंग बाडी पार्लियामेंट है। देश के अन्दर या बाहरी जो हमले होते हैं उनकी जिम्मेदारी पार्लियामेंट के ऊपर होती है।

दूसरी बात यह है कि गवर्नर को यहां पर क्या पावर है, उसके बारे में अगर आप देखें तो गवर्नर २१३ आर्टिकिल के मातहत प्रोक्लेमेशन इमरजेंसी टाइम में करता है। अगर आप २१३ धारा को देखें तो उसमें आप देखेंगे कि उसके आखिर में यह लिखा हुआ है कि—

"He may promulgate such Ordinances as the circumstances appear to him to require."

गवर्नर ने इस प्रदेश में किसी तरह का कोई प्रोक्लेमेशन नहीं किया कि यहां पर कोई आपतकालीन स्थिति है। अगर कोई आपतकालीन स्थिति व्याप्त है और उसके लिये गवर्नर का अगर कोई प्रोक्लेमेशन होता तो उस समय आपातिक विधेयक को २१३ (ए) के अनुसार यहां पर लाते। अगर आप आपतकालीन विधेयक लाना चाहते हैं तो उसमें प्रेसीडेंट की

[श्री नरसिंहनारायण पांडेय]

असेंट की जरूरत होती है। गवर्नर भी कांपिटेंट नहीं है कि वह अपनी इच्छा के मुताबिक गवर्नमेंट को हुक्म दे कि वह कोई लेजिस्लेटिव बिल ला कर कोई उस पर डिस्कशन करे। श्रीमन्, इसलिये मेरा कहना यह है कि गवर्नर विद दि कंसेंट आफ दि प्रेसीडेंट कोई आपतंकालीन बिल इस सदन में पेश कर सकता है। न तो इस बिल पर गवर्नर की असेंट ली गयी और अगर ली गयी तो गवर्नर ने प्रेसीडेंट की कोई असेंट नहीं ली और इसलिये यह आपतकालीन बिल नहीं है और यह इस सदन की कांपिटेंस के बाहर है।

दूसरे यह कि २६ अक्तूबर को जो प्रेसीडेंट ने प्रोमलगेशन किया है वह सारे हिन्दुस्तान में हुआ है और उस के लिये पार्लियामेंट और प्रेसीडेंट जिम्मेदार हैं और उन्हीं को कोई इस प्रकार का बिल लाने का या टैक्स लगाने का अधिकार है।

तीसरे, सेक्शन २०२ का मैं हवाला देना चाहता हूं कि इसमें कोई वित्तीय ज्ञापन नहीं है, इस के लिये मैं आपका ध्यान आर्टिकिल २०२ की तरफ दिलाना चाहता हूं जिसमें लिखा है—

"(2) The estimates of expenditure embodied in the annual financial statement shall show separately—

(*a*) the sums required to meet expenditure described by this Co-stitution as expenditure charged upon the Consolidated Fund of the State ; and

(*b*) the sums required to meet other expenditure proposed to b made from the Consolidated Fund of the State."

तो इन तीन स्तम्भों पर मैं कह सकता हूं कि यह आपतकालीन जो विधेयक आया है और जिस तरह से लाया गया है यह हमारी लेजिस्लेटिव कांपिटेंस से बाहर है और इस पर यहां डिस्कशन नहीं हो सकता। इस के लिये यह असेम्बली कांपिटेंट नहीं है कि इस पर डिस्कशन करे और इसलिये इस पर यह विवाद समाप्त हो जाना चाहिये। मुझे दुख है कि इस पर यहां विवाद हो रहा है।

श्री अध्यक्ष—यह कोई प्वाइंट आफ आर्डर नहीं है। आपके भाषण का अंतिम भाग प्रोसीडिंग्स से काट दिया जायगा।

मैं इस संबंध में निवेदन कर दूं कि नियम ३०१ के अन्तर्गत जो प्रश्न माननीय नरसिंह नारायण जी ने उठाया है वह प्वाइंट आफ आर्डर नहीं है (व्यवधान)।

दूसरा प्रश्न यह है कि यह हमारी विधायनी शक्ति के अन्तर्गत है या नहीं। इसके लिये भी नियम १२५ के अन्तर्गत यह प्रश्न उस समय उठना चाहिये था कि जिस समय इस विधेयक के लिये अनुज्ञा प्राप्त की गयी थी। उस समय यह प्रश्न नहीं उठाया गया। अगर मैं इसको उठाने की आज्ञा भी दे दूं तो जिन अनुच्छेदों का आपने उल्लेख किया है उनके अन्तर्गत यह विधान सभा की शक्ति एब्रोगेट नहीं होगी। यहां का अधिकार समाप्त नहीं होगा। अगर उस अनुच्छेद को सूक्ष्म दृष्टि से पढ़ा जाय तो उसका मतलब यह है कि किस परिस्थिति में पार्लियामेंट की शक्तियां थोड़ी सी विस्तृत हो जाती हैं। उसमें और भी पावर्स इंक्लूड हो जाती हैं, लेकिन उसका मतलब यह नहीं है कि हमारा अधिकार समाप्त हो गया।

अन्त में तीसरी बात मैं यह अर्ज करना चाहता हूं कि थोड़ी देर के लिये यह प्रश्न गंभीरता-पूर्वक हमारे सामने आये भी कि कोई विधेयक हमारी विधायनी शक्ति के अंतर्गत है या नहीं, तो उस संबंध में मेरा मत यह है कि इस पर कोई प्वाइंट आफ आर्डर नहीं उठता। यह विषय ऐसा है कि जिसके संबंध में मैं समझता हूं कि सरकार ने स्वयं कानूनी राय ले ली होगी, एक बात। नम्बर दो यह कि, अगर सदन यह समझता है (व्यवधान) कि हमें अधिकार नहीं है इसे पास करने का तो सदन इसे अस्वीकार कर सकता है। तीसरी बात यह है कि यह प्रश्न मुख्यतः

अदालत ही तय कर सकती है। अदालत के सामने जब यह जायगा और अगर अदालत समझती है कि यह हमारी विधायनी शक्ति के परे है तो अदालत ऐसा फैसला देगी। लोक सभा में इस पर प्रश्न उठ चुका है, वह मैं आपके सम्मुख दृष्टांतरूप पढ़ कर सुनाये देता हूं—

"As regards the constitutional aspect of the point of order the Chair will not be willing to disallow any measure or any clause being considered by the House on its own merits and the House coming to its own decision, except in cases where the matter is so obviously *ultra vires*. It is properly the function of the Judiciary to decide on complicated points of that type and come to any conclusion as to whether a particular clause or a particular measure is *ultra vires* or is inconsistent with the Constitution".

तो यह विषय ऐसा है कि जिस पर हम बैठ कर निर्णय नहीं दे सकते। गर्वनर साहब की कन्सेन्ट का प्रश्न नहीं उठता है, वह मिल चुकी है।

श्री नरसिंहनारायण पांडेय—श्रीमन्, गर्वनर साहब कैसे कन्सेन्ट दे सकते हैं ?

श्री उग्रसेन (जिला देवरिया)—मेरा एक व्यवस्था का प्रश्न है।

श्री अध्यक्ष—इसलिये यह जितने प्रश्न उठाये गये हैं वह निराधार हैं और वह अस्वीकृत किये जाते हैं।

एक सदस्य—हमारी यह प्रक्रिया रही है कि...

श्री उग्रसेन—श्रीमन्, आपने यह जो लोक सभा की व्यवस्था दी कि जो मामला कम्पलीकेटेड हो उसके प्राइमाफेसी आप तो क्या सरकार भी, मेरा खयाल है कि, मानती है, मेरा यह कहना है कि वित्तीय विज्ञापन क्यों नहीं है, यह कह दीजिये कि यह भी लगा दें।

श्री अध्यक्ष—जो आप वित्तीय विज्ञापन की बात करते हैं वह प्रश्न कल उठाया जाना चाहिए था।

श्री उग्रसेन—श्रीमन्, कल तो मैं अपनी गलती से नहीं प्राप्त कर सका, तो आज ही दिला दीजिये।

श्री अध्यक्ष—अब आप कृपया बैठ जायें।

श्री कल्पनार्थसिंह (जिला गोरखपुर)—श्रीमन्, नियम ५२ पर वक्तव्य कब होगा ?

श्री अध्यक्ष—वह बाद में बता दिया जायेगा।

श्री नेकराम शर्मा (जिला अलीगढ़)—आदरणीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपका बड़ा आभारी हूं कि आपने कृपा करके मुझे अवसर दिया कि मैं इस विधेयक पर अपने विचार सदन के सम्मुख प्रस्तुत कर सकूं। यह सही बात है कि यह विधेयक इस सदन में लाया गया या मुख्य मंत्री जी ने लाने का साहस किया तो हमारे विरोधी दल के नेताओं की सलाह की वजह से अगर वह इसमें स्वीकृति न देते तो मुख्य मंत्री जी या यह सरकार कभी साहस न करती कि इतने कन्ट्रोवर्शियल बिल को इस समय इस सदन में लाया जाता।

जिस वक्त १२ तारीख को सर्वप्रथम नेताओं की मीटिंग हुई थी उसमें मैं भी मौजूद था और उसमें माननीय गेंदासिंह जी और जनसंघ के नेता, माननीय दुबे जी, और श्री उग्रसेन जी ने इस विधेयक का विरोध किया था और माननीय मुख्य मंत्री जी से यह प्रार्थना की थी कि इस विधेयक को न लायें और इस समय लड पर टैक्स न लगाये। यदि जरूरत होगी तो बाद में देखा जायगा, अभी तो आप सारे रिसोर्सेज को टैप कर दें।

श्री अध्यक्ष—देखिये, उस मीटिंग में क्या हुआ था इसका जिक्र करने से कोई लाभ नहीं होगा। इसलिये उसमें जो बातें थीं उसके डिटेल्स डिसक्लोज नहीं करने चाहिये।

श्री यादवेन्द्रदत्त (जिला जौनपुर)—श्रीमन्, इसमें मेरे नाम का प्रयोग हुआ है इस लिये मैं भी कुछ कहना चाहता हूं।

श्री अध्यक्ष—वह कह लें और खत्म कर लें तो कह दीजियेगा।

श्री मैनेजरसिंह (जिला बलिया)—श्रीमन्, उस पक्ष से बार बार जोर दिया गया है कि उस मीटिंग में लीडर्स ने तय किया, तो उसकी सफाई वह भी कर रहे हैं।

श्री अध्यक्ष—मैं नहीं था उस वक्त, नहीं तो मैं रोकता।

***श्री यादवेन्द्रदत्त**—मैं उपस्थित था, अगर आप कहें तो मैं उसको स्पष्ट कर दूं। मैं १२ तारीख को मीटिंग में था और जो चर्चा हुई उसे मैं साफ कर दूं। उस दिन माननीय गेंदा सिंह, माननीय उग्रसेन, माननीय डाक्टर जेड० ए० अहमद, माननीय नेकराम जी, आदि थे, शायद राजा मनकापुर नहीं आ पाये थे। उस समय हम सभी ने यह स्पष्ट कहा था कि लैन्ड टैक्स बिल आप न लायें और अगर आप अपने सब रिसोर्सेज को पहले देख लें, हर तरफ से इकोनामी करें, और उसके बाद अगर जरूरत हो तो बाद को इसको लायें.....

श्री अध्यक्ष—मैंने प्रारम्भ में ही कहा था कि मीटिंग में क्या हुआ, क्या नहीं, उसको यहां कहने से कोई लाभ नहीं। मेरी तबियत खराब थी, इस कारण मैं नहीं आ सका था। प्रत्येक सदस्य को इसके मेरिट्स पर बोलना चाहिये।

श्री यादवेन्द्रदत्त—पहले दिन जब शुरुआत हुई थी तो श्रीमान् इस कुर्सी पर थे, जब माननीय राजस्व मंत्री जी ने यह कहा था.....

श्री अध्यक्ष—मैं नहीं था, जिस वक्त माननीय राजस्व मंत्री बोल रहे थे उस वक्त मैं कमरे से यहां आया था और जब उन्होंने यह जिक्र किया कि मीटिंग में क्या हुआ, तो मैंने माननीय राजस्व मंत्री से प्रार्थना की कि मीटिंग में जो बात हुई उसको यहां न कहा जाय। उन्होंने मेरी प्रार्थना को स्वीकार करके उसे नहीं कहा। तो अगर आपको कोई पर्सनल एक्सप्लेनेशन देना हो तो दे दें।

श्री यादवेन्द्रदत्त—मैं उसी बात को स्पष्ट कर रहा था। अब ढाई घंटे की बात को इतनी जल्दी एक दो मिनट में तो कहना सम्भव नहीं होगा.....

श्री अध्यक्ष—तो आप अपना पर्सनल एक्सप्लेनेशन नेकराम जी के बाद दे दीजियेगा।

श्री नेकराम शर्मा—मैंने इसलिये थोड़ी सी चर्चा उसकी की थी, क्योंकि उसकी काफी चर्चा यहां हुई है। श्रीमन्, जब देश पर संकट हो, हमारी मान मर्यादा का प्रश्न हो, तो प्रत्येक भारतवासी का यह कर्त्तव्य है कि वह तन, मन, धन से देश की रक्षा करे। श्रीमन्, जो व्यक्ति इसमें सहयोग नहीं देते वे देश भक्त हो सकते हैं या नहीं, या वे पंचमांगी हो सकते हैं या नहीं, इसको माननीय सदस्य निश्चित कर सकते हैं। श्रीमन्, संकट के समय जब हमको तन मन और धन सब चीजों की जरूरत पड़ती है तो धन से ही केवल हम किसी देश की सुरक्षा नहीं कर सकते, मन, वचन और उत्साह आदि सब चीजों की भी जरूरत पड़ती है। ये सभी चीजें जब होंगी, तो हमारी जंजीर पूरी होगी और अगर उसमें एक कड़ी की भी कमजोरी होगी तो हम अच्छी तरह से दुश्मन का मुकाबला नहीं कर सकते। संकट के समय, अच्छा होता, मुख्य मंत्री जी और यह सरकार इस विवाद-ग्रस्त विधेयक को यहां न लाये होते। प्रदेश में एकता की भावना फैली थी।

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

इस सदन में विरोधी दलों ने पहले और दूसरी तारीख को बिना बहस बहुत से विधेयक पास कर दिये ।

श्रीमन्, यह सही है कि धन की जरूरत है और वह देना चाहिये, लेकिन अच्छा होता अगर हमारे उपनेता जी सबसे पहले जो धन देने लायक हैं, धनिक हैं, जिन पर हमारा रुपया बाकी है, जिन्हें हमने कर्ज दिया और जिस परपज के लिये दिया उसमें उन्होंने इस्तेमाल भी नहीं किया, गन्ने के सेस का रुपया बाकी है, उनसे वसूल करते । किसान अपने बच्चों को लड़ाई पर भेज रहा है और रुपया भी स्वेच्छा से दे रहा है, अपना खून दे रहा है और उससे २५ फीसदी क्या ५० फीसदी भी लिया जाता तो वह खुशी से देता, लेकिन इस सबसे पहले सरकार को ऐसे कानून यहां लाने चाहिये कि जो देने लायक कैपिटेलिस्ट हैं उनसे लिया जाता । क्या यह सही नहीं है कि कानपुर में जिन लोगों पर सरकार का रुपया बाकी है उसकी वसूली के लिये कोई कुर्की आज तक नहीं हुई ? मुख्य मंत्री ने उन्हें बुलाकर कहा, लेकिन कोई कुर्की नहीं हुई और न उसकी वसूली के लिये कोई लेजिस्लेशन लाया गया । मैं ईमानदारी से कहता हूं कि मैं इस विधेयक का विरोध नहीं करता अगर माननीय मुख्य मंत्री जी २५ परसेंट वालंटरी कट सर्विसेज के ऊपर भी कर देते । १ अरब २२ करोड़ रुपया सरकारी कर्मचारियों के वेतन में, उनके एलाउन्सेज में, उनकी कंटिजेंसी में, कुल २ अरब के हमारे बजट में से खर्च होता है । उन पर यह ६२ या ६३ पर सेंट खर्च होता है । १९६१ के सरकारी आंकड़ों में ही लिखा है कि ५६ करोड़ रुपया सैलेरीज पर खर्च हुआ । अगर २५ परसेंट कम कर देते तो १४ करोड़ रुपया एक साल में ही मिल जाता ।

अभी हमने पैसेंजर टैक्स और दूसरे टैक्सेज बढ़ाने की अनुमति दी । इन सब का भार भी किसान पर पड़ता है । किसान से चन्दा लेने वाले आपके कन्सालिडेशन आफिसर हैं, स्कूल वाले हैं, हैल्थ स्कीम के लोग हैं, ब्लाक वाले हैं, ये सब हैं । जब किसान स्वयं दे रहा है और स्वेच्छा से देना चाहता है, तो क्या जरूरत है कि इस कंट्रोवर्सी को पैदा किया जाता ? अगर आपने किसान से कानून के जोर से रुपया लेकर उसे लड़ने के लिये बन्दूक दी कि जाओ, चीनियों को भगाओ, तो उसके दिल में अगर उमंग नहीं होगी तो बन्दूक भी नहीं चलेगी । अगर उनके दिलों में उमंग होगी तो लड़ाई आसानी से जीती जा सकती है । पंजाब का उदाहरण मौजूद है । सारे हिन्दुस्तान में सर्व प्रथम ४ ।। करोड़ रुपया सुरक्षा में उसने दिया । उसने वहां के पूंजीपतियों से रुपया जबर्दस्ती वसूल किया, जबर्दस्ती का मतलब है कि मारल प्रेशर डाल कर वसूल किया । गुप्ता जी कहते हैं कि हम मंत्रि-मंडल को कम नहीं कर सकते हैं, चूंकि और प्रदेशों के मुकाबले में हमारा खर्च कम है और प्रदेशों से हमारा प्रदेश पिछड़ा भी तो है । अगर मुख्य मंत्री जी चाहते हैं किसानों से संकट के नाम पर रुपया लेकर सर्विसेज को मजबूत करने में खर्च करें या तनख्वाहों में खर्च करें, तो जनता और सदन के माननीय सदस्य कभी भी इसे स्वीकार नहीं कर सकते । सरकार यह घोषणा करे कि किसानों से वसूल हुए रुपये को केवल सुरक्षा के लिये और हमारे लड़ने वाले जवानों के लिये काम में लाया जायगा और इसे हम अपने प्रधान मंत्री जी के पास भेज देंगे । अगर आपने इस पैसे से ब्यूरोक्रैसी को मजबूत किया तो मैं ही नहीं, इस सदन के दोनों तरफ के बैठने वाले सदस्य इसका घोर विरोध करेंगे । संकट के लिये हम रुपया देना चाहते हैं, लेकिन उसे आप प्राइम मिनिस्टर्स फंड में मिलिटरी के लिये भेज दीजिये । आपको यह भी घोषणा करनी होगी कि केवल संकट के समय ही आप इस लैवी को लेंगे और जैसे ही संकट समाप्त होगा इसे तुरन्त वापस कर लेंगे ।

श्रीमन्, हमने यह भी आशा की थी कि टैक्स लगाने से पहले सरकार सदन में एक ब्लू प्रिन्ट पेश करती और यह बतलाती कि उसने यह इकोनामी की है, इतना रुपया और चाहिये और वह इस काम में खर्च किया जायगा । माननीय वित्त मंत्री जी ने उस दिन घोषणा की थी, लेकिन वह ब्लू प्रिन्ट आज तक नहीं आया । इकानामी कमेटी बैठाई गई और एक साल के अन्दर उसकी शायद परसों एक मीटिंग हुई । आज तक सदन के माननीय सदस्यों को या, नेताओं को कोई ब्लू प्रिन्ट नहीं दिया गया कि आखिर सरकार क्या कमी कर रही है और कितना रुपया और चाहिये । हमारे फाइनर सेंटीमेंट्स को और देश प्रेम को सरकार संकट के नाम पर एक्सप्लायट

[श्री नेकराम शर्मा]

करना चाहती है। एग्जाम्पिल इज बैटर दैन प्रीसैप्ट (Example is better than precept) सरकार स्वयं संकटकालीन उदाहरण दे।

माननीय गोविन्दसहाय जी ने कहा कि अगर विरोधी दल के लोग मान लें कि वे विरोध नहीं करेंगे ५ साल तक और सरकार से सहयोग करेंगे, तो वह इस्तीफा दे देंगे। श्रीमन्, हमारा निश्चित मत है कि अगर यह लैंड टैक्स इस वक्त नहीं आता तो कोई विरोध नहीं होता। एंटरटेनमेंट टैक्स और स्टाम्प टैक्स १ और आधे घंटे में पास हो गये। और भी ऐसे मेजर्स का कोई विरोध नहीं होता, लेकिन यह बिल एक दम किसानों पर टैक्स का आया, चूंकि शायद माननीय मुख्य मंत्री जी की जिद थी कि किसानों पर कर टैक्स लगा छोड़ेंगे, उनके दिमाग में यह था कि ऐसे विधेयक को पोस्टपोन करने से उनकी पराजय हो गई थी। अगर इसलिये यह लाया गया तो बहुत दुःख की बात है।

श्रीमन्, ११ पार्लियामेंटरी सेक्रेटरीज और १३ डिप्टी मिनिस्टर्स कमरे घेरे हुए पड़े हैं। अगर संकट का सवाल होता तो ९०,००० रुपया क्यों खर्च किया जा रहा है एयर-कंडीशनिंग के लिये? ३९,३०,००० रुपये की मोटरें आ रही हैं। यह अनुपूरक बजट में है जो अभी पेश हुआ है। संकट के समय डिप्टी मिनिस्टर्स और पार्लियामेंटरी सेक्रेटरीज के लिये २१,००० के टाइपराइटर्स खरीदे जा रहे हैं। मैं जानता हूं कि हमारे पार्लियामेंटरी सेक्रेटरी साहब अलीगढ़ का कितना दौरा करते हैं। आप स्वयं पता लगा लें, अध्यक्ष महोदय, कि भत्तों में कितना खर्चा होता है। इस फौज की क्या जरूरत है? मैंने परसों-तरसों कहा था कि गुप्ता जी की मजबूरी है कि वह नहीं कह सकते कि आप इस्तीफा दीजिये, तो यदि उनमें देश-प्रेम है, संकट है, तो आप सब लोग इस्तीफे दे दीजिये। लेकिन कोई भी मिनिस्टर, डिप्टी मिनिस्टर या पार्लियामेंटरी सेक्रेटरी मैदान में नहीं आया। केवल गोविन्द सहाय जी आये। जिन लोगों ने आजादी की लड़ाई लड़ी, और जिन्होंने अंग्रेजों को भगाया, उनमें से अभी भी इस रैन्क में बैठने वाले मौजूद हैं। गुप्ता जी ने, ठाकुर हुकुम सिंह जी ने लड़ाई लड़ी। उन लोगों के दिल में अभी भी देश-प्रेम है। वे अब भी जानते हैं कि हमको चीन से लड़ना है। जिन लोगों ने आजादी की लड़ाई लड़ी वह आज भी चीन से लड़ना चाहते हैं, लेकिन मैं इस समय उन लोगों से कहना चाहता था कि अगर गुप्ता जी नहीं कहते तो उनको अपने इस्तीफे दे देने चाहिये थे। लेकिन इस्तीफे की बात तो दूर रही एक एक पार्लियामेंटरी सेक्रेटरी को दौरों में दो दो हजार रुपये महीने के करीब पड़ता है। दो दो चपरासी, टाइपराइटर, क्लर्क आदि उनके साथ चलते हैं। फर्स्ट क्लास में जाते हैं। "साइन्स आफ दि टाइम्स" में निकला कि किसी मिनिस्टर साहब ने पहले से ही फर्स्ट क्लास कब्जा करा लिया। अब अगर जनता यह खयाल करे कि जैसा ये लोग जनता से चाहते हैं वैसा स्वयं नहीं करते हैं तो फिर क्या दूसरों से कुर्बानी की बात कहते हैं? जैसा डाक्टर अहमद साहब ने कहा, सारी कुरबानी जनता से ही चाही जाती है। गरीब जनता तो कुरबानी करती रही है, कर रही है और करेगी, लेकिन बनारसीदास जी के अनुसार अमीर लोग क्या कर रहे हैं? कांग्रेस के नेता लोग क्या कर रहे हैं? जब कोई अमीरों के पास चन्दा लेने के लिये जाता है तो वे ताला बंद करके चले जाते हैं। आज चीजों की प्राइसेज बढ़ रही हैं। किरोसिन आइल और वूलेन कपड़े के दाम बढ़ गये हैं। क्या इसमें कोई आदमी गिरफ्तार हुआ? यह सब बिजनैस क्लास ही तो कर रही है। यह सरकार किसानों की सरकार नहीं है। अगर किसानों की सरकार होती तो उसको किसानों के लिये दर्द होता। यह सरकार किसानों की दुश्मन है इसलिये हम इसका विरोध कर रहे हैं अन्यथा हम तन, मन और धन से चीनी आक्रमणकारियों से लड़ने के लिये तैयार हैं।

आज चीनियों से तो कांग्रेस और उसके नेतागण ही लड़ने को तैयार हैं, लेकिन वे पार्टियां जो अब देश भक्ति और देश प्रेम का नारा लगाती हैं, उनकी देशभक्ति सन् १९३० से ४२ तक कहां चली गयी थी? उससे पहले तो वे विक्टोरिया और विक्टोरिया के राज्य और वंशज के गुणगान करते थे। लेकिन आजादी के बाद जब आज कांग्रेस के नेता गण और नेहरू जी चीनियों से लड़ना

चाहते हैं, उस वक्त कहते हैं कि हम सरकार के मित्र हैं और मित्र की हैसियत से आलोचना करते हैं। इनके बारे में नेहरू जी क्या कहते हैं :

"Speaking at a meeting of the Congress Parliamentary party on Thursday the Prime Minister said that the Jan Sangh and the Swatantra Party's public pronouncements needed close scrutiny. These parties said they were offering co-operation to the Government in the defence effort. But they were opposed to the policies of the Government. In fact they appeared to be more interested in political power than in national defence instead of co-operating, they were working for a change of Government."

यदि ईमानदारी से हम देश की रक्षा करना चाहते हैं तो नेहरू जी के विचारों के अनुसार ही उनको काम करना चाहिये, बिना आलोचना के देश की रक्षा करनी चाहिये, लेकिन उनका मकसद तो नेहरू जी के विरुद्ध आन्दोलन चलाना है। बड़े बड़े अखबारों के द्वारा उनका विरोध किया जाता है। अगर कृष्णा मेनन गलत था तो उसको अलग कर दिया गया। तो फिर चुप होकर आपको नेहरू जी के नेतृत्व में लड़ाई लड़नी चाहिये थी। फिर आज क्यों नेहरू जी का विरोध हो रहा है और क्यों अखबार वाले और खास कर "हिन्दुस्तान टाइम्स" जैसे महत्वपूर्ण डेली अखबार जिसका सम्बन्ध बिड़ला ग्रुप से है—नेहरू जी पर आक्रमण कर रहे हैं? कांग्रेस वालों ने देश की आजादी के लिये लड़ाई लड़ी और देश को आजाद कराया और आज भी वे ही नेहरू जी ने के नेतृत्व में देश की रक्षा कर सकते हैं। जब अंग्रेजों से मुकाबला करने का समय था तो समाजवादी पार्टी, प्रजा समाजवादी पार्टी के लोग व राजा साहब मनकापुर भी कांग्रेस के साथ थे, लेकिन आज जो नेहरू जी का विरोध कर रहे हैं वे अमन सभा के मेम्बर बने हुए थे। उस समय न उनके सामने भारत माता थी, न देशभक्ति थी और न कुछ और था। आज जो महात्मा गांधी व नेहरू जी की आलोचना कर रहे हैं उनके साथ मेरा सहयोग नहीं हो सकता है।

इसके अलावा समाजवाद का नारा लगाने वाले समाजवादी भाइयों से मैं कहना चाहता हूं और उनसे प्रार्थना करता हूं कि अगर आप समाजवाद को बचाना चाहते हैं तो बिना किसी शर्त के नेहरू जी के नेतृत्व को बचाइये और उनकी पालिसी का समर्थन कीजिये और तभी देश जिन्दा रह सकेगा। हमारे कई समाजवादी मित्र लेजिस्लेचर को खत्म करने की बात कह सकते हैं लेकिन यह तो प्रजातांत्रिक ढांचे को समाप्त करने जैसी बात ही होगी। हिटलर ने क्या किया था? मुसोलिनी ने क्या किया था? उनकी नीति को मान कर चलने वाले लोग समाजवाद के घोर विरोधी हैं। कृष्णमेनन को समाप्त करने के बाद वे नेहरू जी को भी समाप्त करना चाहते हैं। ये जितने यूनाइटेड रिएक्शनरी ग्रुप्स हैं वे नेहरू जी के खिलाफ अपनी सारी शक्तियां लगा रहे हैं। फिर जब प्रजातंत्र ही खतम हो जायगा तो समाजवाद की रक्षा ही कौन करेगा? इसलिये जिन लोगों ने भी आजादी लड़ाई है, चाहे वे आज सोशलिस्ट हैं या प्रजा सोशलिस्ट हैं या कम्युनिस्ट हैं, उनसे मेरी प्रार्थना है कि अगर उनका समाजवाद में थोड़ा सा भी विश्वास है तो वे कांग्रेस सरकार के साथ सहयोग करके ही चीन को यहां से भगा सकेंगे। जहां तक चीन से लड़ने की बात है, अगर चीन की हिम्मत लड़ने की होती तो वह इतनी जल्दी हिन्दुस्तान से भागता नहीं। यहां की जनता के आत्म बल और मनोबल को देख कर ही उसकी हिम्मत टूट गयी और यहां से भागा और हमारे स्थानों को खाली कर रहा है।

(व्यवधान)

माननीय मुख्य मंत्री जी इस समय यहां मौजूद नहीं हैं, लेकिन ठाकुर हुकुम सिंह जी मौजूद हैं, मैं उनसे निवेदन करूंगा कि डिफेंस कमेटी में जिसको भी वे रखना जरूरी समझें रख सकते हैं, इसकी उनको पूरी आजादी है। किस पार्टी के आदमी को रखें, किस पार्टी के आदमी को न रखें, यह उनके ऊपर है, क्योंकि देश की सुरक्षा का भार जब कांग्रेस सरकार के ऊपर है तो जो सही नीति हो सबका सहयोग लेने के लिये वह अपना सकती है। देश के इस संकट काल में पंचमांगियों पर दृष्टि रखना सरकार का मुख्य कर्त्तव्य है जो आज भी देश में सिविल वार की तैयारी में हैं ऐसे तत्वों को रोकना पड़ेगा। अगर ईमानदारी से देखा जाय तो कांग्रेस के नेता ही सही नेता हैं और कांग्रेसी

[श्री नेकराम शर्मा]

नेता पंडित जवाहर लाल नेहरू के नेतृत्व में ही देश की सुरक्षा निर्भर करती है। जहांतक डिफेंस कमेटी में सदस्यों के रखने की लिये २२ नवम्बर वाले सर्क्युलर के भेजने की बात हैं, जिसके बारे में पांडेय जी ने बतलाया था, मैं समझता हूं कि अगर देश की रक्षा करनी है तो वह सर्क्यूलर भेजना सही नीति है। आज जब कि देश के ऊपर खतरा है अगर आप अपने सिद्धान्त व आदर्श—सोशलिस्टिक पैटर्न आफ सोसायटी का जो आब्जेक्टिव तय हुआ था—अगर उससे हम विचलित हो गये तो हमारा आब्जेक्टिव ही समाप्त हो जायगा। सावधानी की जरूरत है और साथ ही मैं आपसे निवेदन करता हूं कि सम्भव हो सके.....

एक सदस्य—आप क्या कर रहे हैं ?

श्री नेकराम शर्मा—वह तो समय जानता है कि किस ने क्या किया, किस ने योग दिया। आजादी की लड़ाई में सब जानते हैं कि उनके क्या कार्य हैं और उनकी क्या करने की नीयत है। वह हम, नेहरू जी और देश के नेता सब जानते हैं।

(लाल बत्ती होने पर)

श्रीमन्, मैं दो-तीन मिनट और कहूंगा।

एक सदस्य—कृष्णामेनन ने साबित कर दिया।

श्री नेकराम शर्मा—वह आप से लाख दर्जे अच्छे हैं। वह देशभक्त हैं, वह वह आदमी हैं जो..... (व्यवधान) देश की एकता के लिये, देश की रक्षा के लिये आज मौन बैठ गया है। उसने वफादारी और ईमानदारी से काम किया है और आप मालूम होता है कि उनकी थोड़े ही दिन पहले की सेवा को भूल गये, लेकिन अब यह नेहरू जी के खिलाफ क्यों हवा फैल रही है ? क्यों दिल्ली के अन्दर.....

श्री अध्यक्ष—आप का एक मिनट और है।

श्री नेकराम शर्मा—२ मिनट और दे दें श्रीमन्, चाहें कृष्णमेनन हों या कोई हों उस पर हम नहीं जाते लेकिन हमारे सीधे उसूल होने चाहिये। मैं माननीय हुकुम सिंह जी से कहूंगा कि जो जेल गये हैं उन से कहिये कि रक्षा करना आप का कर्त्तव्य है। आप अपनी पालिसी बनाइये कि रक्षा समिति में आप तपे तपाये आदमियों को ही रखिये, किसी पार्टी को प्रतिनिधित्व उसमें देने की जरूरत नहीं है या तो सब को दीजिये या किसी को न दीजिये, जिन को आप मुनासिब समझें उन को रखिये हम को सहयोग देना होगा तो हम वैसे ही देंगे।

अन्त में मैं पुनः कहूंगा कि एकोनामी का ब्लू-प्रिन्ट आप सदन समाप्त होने से पहले सदन के सामने रखें और साथ ही माननीय माल मंत्री यह घोषणा कर दें कि कबतक के लिये यह लेवी लगाई गई है। यह इसी खरीफ फसल के लिये है या लडाई भर के लिये है या स्थायी है। इस के अलावा जितनी भी सुपरफ्लुअस पोस्ट्स हैं उन को आप समाप्त कर दें। यह एडीशनल डायरेक्टर एजूकेशन और एक्साइज डिप्टी कमिश्नर। जो अभी एक मास पहले बनाई गई हैं उन पोस्टों को समाप्त किया जाय। इस के अलावा जो नान-टेक्निकल क्लेरिकल पोस्ट्स हैं उन में एक्सटेंशन ५५ साल के बाद न दिया जाय वर्ना जो ५८ साले से ५५ साले का उद्देश्य था वही खत्म हो जायगा। अन्त में मैं माननीय मुख्य मंत्री जी से और सरकार से प्रार्थना करूंगा कि यह दो काम वह अवश्य कर दें और माननीय बहुगुणा जी। जो डिप्टी मिनिस्टर हैं उन से भी प्रार्थना करूंगा कि सबसे पहले आप एकोनामी के लिये अपना इस्तीफा दे दें, आप की कुरबानी का असर होगा और माननीय गोविन्द सहाय जी और अपने गुरू जी से भी मैं कहूंगा कि वह भी स्तीफा दे दें।

श्री यादवेन्द्रदत्त—श्रीमन्, मुझे अपना पर्सनल एक्सप्लेनेशन देने का मौका दिया जाय। आप चेयर पर हैं, चेयर के अनुसार ही आप डायरेक्शन दें।

श्री अध्यक्ष—थोड़े में कहिये ।

श्री यादवेन्द्रदत्त—मैं पर्सनल ही कहूंगा । मैं यह कह रहा था कि १२ तारीख को जो मीटिंग हुई थी उस में सब लोगों ने सारे विवाद के बाद कहा था कि लैंड टैक्स लास्ट रिजार्ट होना चाहिये, पहले ब्लूप्रिन्ट रखना चाहिये और पूरी तस्वीर सदस्यों के सामने आनी चाहिये ।

नियोजन मंत्री (श्री हरगोविन्दसिंह)—श्रीमन्, संकटकालीन परिस्थिति में संकट-कालीन गम्भीरता से नीचे उतर कर यदि हम प्रस्तुत विधेयक पर विचार करेंगे तो शायद हम सही नतीजे पर पहुंचने में असमर्थ रहेंगे । २, ३ दिन से वाद विवाद सुनता रहा, मैं नहीं समझ पाया उसमें आवेश की बात कहीं थी । यह बात कहां थी कि हम किसी एक वर्ग के दुश्मन हैं ? आज देश पर संकट है इसमें दो रायें नहीं । कल आपने माननीय सदस्यों से अपील की थी कि देश पर संकट को सम्मुख रख कर ही इस विधेयक पर विचार करेंगे तो सदन और सदस्यों के लिये गौरव की बात होगी । मैंने समझा कि आपकी अपील के बाद हम ऐसा व्यवहार यहां करेंगे जिससे बाहर के लोगों पर यह छाप पड़ सके कि हम वह व्यक्ति नहीं जिनकी निस्बत यह कहा जाता है कि "नीरो बांसुरी बजा रहा था जब रोम जल रहा था" । मैं दुःखित हृदय से कहता हूं और माननीय सदस्यों से अपील करता हूं और स्वयं अपने दिल पर हाथ रख कर पूछें क्या उनके २, ३ रोज के वितंडावाद से जनता पर यह छाप पड़ी है कि हम एक क्षण के लिये भी आततायी चीन को अपने देश की एक चप्पा भूमि पर देखना नहीं चाहते ? कल मैं एक अखबार में पढ़ रहा था, श्री मसानी ने एक छोटी सी तालिका दी कि इस लड़ाई में हमें क्या लाभ हुआ और क्या हानि हुई । लड़ाई में लाभ की चर्चा करते हुये कहा कि हमने इस लड़ाई में भारत का जोश पाया, सहयोग पाया और अद्वितीय एकता पायी । जहां भारत माता का आंचल खींचा जाता हो, जहां हमारे नौजवान पहाड़ के दुर्गम स्थान पर अपनी जान से बाजी खेलते हों वहां यह सदन इस प्रकार का वाद विवाद करता हो और यह उन्हें संदेश भेजता हो कि नहीं, हमको परवाह नहीं तुम लद्दाख में हो चाहे जहां हो हम तुम्हें इस लड़ाई के लिये रुपया नहीं दे सकते (व्यवधान—गलत है) आप कह रहे हैं गलत है । श्रीमन्, जहां हमारा इतिहास भरा हो त्याग और बलिदान से, जहां हमारा इतिहास यह बताता हो कि जंगल में घास की रोटी बनी वह भी बिल्ली खा गई, लड़का रोने लगा लेकिन फिर भी उसने अपना मस्तक नहीं नवाया । आज जब उन नौजवानों के खून में वह रक्त बह रहा है और वह अपनी जान की बाजी लगा रहे हैं तहां हम लोगों को हतोत्साहित कर रहे हैं और कह रहे हैं कि नहीं, हमारी हालत ठीक नहीं है । कल ही मैं एक किताब पढ़ रहा था, क्योंकि मुझको तो कुछ पढ़ने का एक नशा सा है और मैं पढ़ता हूं । उस किताब को जाफरी क्राउथर ने लिखा है । उन्होंने इंगलैंड और अमेरिका की वार इकोनामी के बारे में बतलाया है । मैं उसमें से कुछ उदाहरण देता हूं । (व्यवधान) आपको थोड़ी शिक्षा ही मिलेगी । आपके ज्ञान का वर्द्धन कर रहा हूं, कोई जहर नहीं दे रहा हूं । उसने यह कहा था—

"When a nation is fighting for survival the question it asks is not is it worth it or can we affored it but is it physically possible ?"

राष्ट्र यह सवाल नहीं पूछता क्या हम इसको कर सकते हैं क्या हमको करना चाहिये, क्या यह बोझ हम सहन कर सकते हैं । वह राष्ट्र तो एक सवाल पूछता है और यह कहता है कि हमें इसको करना है । आगे चल कर उसने एक बात और कही और बड़े महत्व की बात कही । उसने कहा 'लड़ाई के समय यह सोचना कि धन कहां से आयेगा यह कायर ही सोच सकता है । उसको तो केवल एक ही फैसला करना होता है कि इस चीज की आवश्यकता है और फिर सारे देश की जनशक्ति, धन शक्ति जितनी भी होती है उसके कमांड पर होना चाहिये तब तो वह लड़ाई लड़ सकता है ।' आज स्थिति क्या है ? मैं राजा साहब जौनपुर का भाषण सुन रहा था और उन्होंने यह कहा कि उनके उपनेता ने एक पत्र लिखा था और यह कहा था कि यदि हमको यह विश्वास हो जाय कि यह धन जो इस बिल के द्वारा उपलब्ध होगा वह सुरक्षा

[श्री हरगोविन्दसिंह]

में लगाया जायगा तो हमको कोई एतराज नहीं है। वह पत्र मुझे पढ़ने को मिला था और उसका उत्तर भी पढ़ने को मिला। उसमें उत्तर में यह बात कही गयी कि सुरक्षा एक बड़ा व्यापक शब्द है। जैसा गोविन्द सहाय जी ने बतलाया कि किसी भी लड़ाई में यह सोचना कि लड़ाई केवल वहीं हो रही है जहां गोली चलती है तो यह गलत है। लड़ाई में एक प्रयत्न तो होता है, एक मोर्चा वहां होता है जहां गोली चलती है, दूसरा मोर्चा वहां होता है जहां प्रत्येक नागरिक अपने क्षेत्र में काम करता है और इसलिये श्रीमन् यह कहना कि यह धनसुरक्षा में ही जाय मैं स्वयं उसका मतलब नहीं समझ सका। श्रीमन्, आपने वर्जित कर दिया है मैं उस चीज पर नहीं जाऊंगा, न उसकी चर्चा करूंगा गोकि उसकी हरएक मीटिंग में रहने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ था। लेकिन उस पत्र को पढ़ने से मेरे ऊपर तो यह असर पड़ा कि शायद देश के इस आपतकालीन स्थिति का हमारे ऊपर कोई असर नहीं है और हम राजनीति के उस गर्त में पहुंच गये हैं कि चाहे देश बरबाद हो जाय, चाहे चीन आ जाय, लेकिन हमारी नजर तो इन कुर्सियों पर है क्योंकि जो पढ़ा लिखा आदमी हो, जो इस सम्मानित भवन का आदरणीय सदस्य हो, वह सुरक्षा का अर्थ न समझे मेरी समझ में नहीं आया, वह यह न समझ सके कि सुरक्षा का अर्थ यह है कि अगर हम अपने खेत में एक मन के बजाय सवा मन पैदा कर लें तो हम देश की सुरक्षा में भाग लेते हैं। श्रीमन्, बड़ी हैरत हुई देख कर कि वकील जिनकी वृत्ति कानून है, वह यहां यह बहस कर रहे थे कि डिफेंस के लिये आप कुछ नहीं कर सकते। यह तो सेंटर की चीज है। अगर आप चाहते हैं तो मैं आपके प्रान्त के एक तुच्छ मंत्री की हैसियत से आपसे वादा करता हूं कि इसका एक एक पैसा, यही नहीं बल्कि सब, सुरक्षा में जायगा बशर्ते कि आप सुरक्षा की परिभाषा में हमसे सहमत हों। आप परेशान क्यों हो रहे हैं? अगर मैं कोई गलत बात कह रहा हूं तो आप पूछ सकते हैं। मैं ऐसा कोई डराउक आदमी भी नहीं हूं कि आपके बोलने से बैठ जाऊंगा। लेकिन जब आप सुनना नहीं चाहते हैं तो मुझे ईसा मसीह का वह वाक्य याद आता है

"God, forgive them, for they know not what they say."

ईश्वर इनको क्षमा करिये क्योंकि यह बेचारे भोले कुछ नहीं जानते कि यह क्या कह रहे हैं। यह हंसी की बात नहीं है। यह लज्जा की बात है। हमको और आपको लज्जा से सर नीचा कर लेना चाहिये। आपने देखा कि बगैर आपके मांगे हुये, दुनिया की बड़ी बड़ी शक्तियों ने आकर आपकी जितनी जरूरत थी, उन्होंने इस बात का इंतजार नहीं किया कि आप उनके पास जायं उन्होंने इतने बड़े बड़े लड़ाई के मिशंस भेज दिये, क्योंकि उनके ऊपर एक छाप पड़ी थी। वह यह छाप पड़ी थी कि हिन्दुस्तान में पंचमांगी नहीं हैं। वह यह समझते थे कि यह चीन से लड़ने के लिये कटिबद्ध हैं। आज मैं आपसे पूछता हूं– हंसिये मत, रोइए इस बात पर कि आज इस भवन ने दुनिया पर क्या छाप डाली है। यह छाप डाली है कि आपके ऊपर कोई इस बात का असर नहीं है कि आपके एक बड़े भूखंड पर चीन ने कब्जा कर लिया है और आपको चुनौती दे रहा है। हमारे राष्ट्र नेता ने तो उसकी चुनौती मान ली है और यह विश्वास दिलाता हूं कि आपने जिस सहयोग का परिचय यहां दिया है चाहे आपका यह सहयोग इस किस्म का सहयोग मिले या न मिले और बड़ी कृपा होगी अगर न मिले, लेकिन हम इस लड़ाई को जीतेंगे, हम इस लड़ाई में विजयी होंगे और आप सहयोग की बात करते हैं! जहां लड़ाई के जमाने में यह होता है कि हमारा एक नेता है, हम उस नेता के पीछे मर मिटेंगे वहां आप यह कहते हैं कि यह नेता खराब है, यह नेता हटाइए। हम आपके साथ हैं, लेकिन पैसा नहीं देंगे। लड़ाई में रुपया न लगाइए, यह न कीजिये, वह न कीजिये, लेकिन हम आपके साथ हैं। यह सहयोग किस बाजार में किस दाम बिकेगा, मैं नहीं जानता। किस बाजार में इसको लेकर जाऊं और यह कहूं कि हिन्दुस्तान के इन भाइयों का सहयोग यह मेरे पास है, यह मैं नहीं जानता। कहने के लिये ईश्वर ने शायद इसी कारण जिसमें कहने में सुविधा हो, जल्दी से बात कही जा सके, मुंह बड़े नजदीक दे दिया। हम खून देंगे, हम आखिरी

बूंद तक देंगे, लेकिन हम पैसा आपको नहीं देंगे। यह है आपका सहयोग! उस सहयोग को जैसा मैंने कहा कहां ले जाऊं? आज आप दुनियां को यह दिखला रहे हैं और एक सम्मानित सदस्य होते हुये दुनिया को आप दिखला रहे हैं कि चीन की लड़ाई में हम एक ऐसे साथी हैं कि अगर आपको साथ लेकर के हम लड़ाई में जायं तो शायद पीछे से आप ही गोली मार दें। यह तो आपका रवैया है।

श्री उग्रसेन--अध्यक्ष महोदय, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है। माननीय मंत्री जी चीन की लड़ाई की बात कर रहे हैं। इसके बारे में हमारा एक प्रस्ताव है, उस प्रस्ताव पर फुल फ्लेज्ड डिबेट हो जाय, वह बाजार कौन है और गद्दार कौन है, इसकी बहस एक दिन असेम्बली में हो जाय। इसके लिये हमारा प्रस्ताव आपके पास है। (शोर)

श्री अध्यक्ष--अच्छा बैठिये। आप बोल चुके हैं और वह बोलेंगे।

श्री हरगोविन्दसिंह--शायद इसी कारण श्रीमन्, तुलसीदास जी ने एक दोहा लिखा था। उसकी पहली लाइन मुझे याद नहीं है, लेकिन दूसरी याद है अगर गुस्ताखी न हो तो उसे दोहरा दूं--"शूर समर करनी करहिं कायर करहिं प्रलाप।" यह उन्होंने लिखा है।

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष--आर्डर। आप जब बोलते हैं तो यह आशा करते हैं कि दूसरे सुनें और आपको बोलने का मौका दें। तो आपका भी फर्ज है कि आप दूसरों को मौका दें।

(व्यवधान)

श्री राधेश्याम शर्मा (जिला मथुरा)--माननीय मंत्री जी ने कहा कि हम गोली मार देंगे तो हम सदन में ही मारधाड़ क्यों न करें? ऐसी बात कही गई कि जो बिलकुल लज्जा की बात है।

श्री हरगोविन्दसिंह--श्रीमन्, मैंने यही कहा था और यही फिर कहता हूं कि आज हमको एक गम्भीरता से, गम्भीर स्थिति में, गम्भीर मुद्रा में अपनी समस्याओं पर ध्यान देना चाहिये, और क्या करना चाहिये। इस अवस्था में इस पर विचार करना चाहिये। अब कल को अगर इस बाहरी आक्रमण की सम्भावना समाप्त नहीं हुई तो किसानों के खेत भी नहीं रहेंगे और आप लोगों की बड़ी बड़ी अट्टालिकाएं भी नहीं रहेंगी। वे सब धराशायी हो जायेंगी। खेद इस बात का है कि इस समय आप अपनी चिन्ता भी नहीं कर रहे हैं.....

(व्यवधान)

श्री उग्रसेन--अपनी वोट की बात कहिये।

श्री अध्यक्ष--जब दूसरे लोग आपकी बात सुनते हैं तो आपको भी उनकी बात सुननी चाहिये। (व्यवधान) सुनना पड़ेगा। (शोर)

श्री केशरीप्रसाद पांडेय (जिला जौनपुर)--आपने कहा कि सुनना पड़ेगा। तथ्य की बात हमको सुननी पड़ेगी तो हम उसको सुनने के लिये तैयार हैं।

X X X

श्री हरगोविन्दसिंह--श्रीमन्, अगर मेरे शब्दों से किसी माननीय सदस्य को चोट लगी हो तो मैं उस से माफी मांगता हूं। लेकिन मैं इतना जरूर कह दूंगा उन से कि प्रत्येक व्यक्ति अपने स्तर से जांचा जाता है।

[XXX] माननीय अध्यक्ष के आदेश से हटा दिया गया।

[श्री हरगोविन्दसिंह]

यह बात तो उनको बाहर भी अगर कम से कम वह उसको बरत सकें तो करनी चाहिये। तो फिर भवन में जब तक सदस्य की हैसियत से बैठे रहें, तो इस नियम का पालन उनके द्वारा होता रहेगा तो फिर इसमें कोई गड़बड़ी नहीं होगी। मैं यह कहना चाहता हूं कि यह तो हमारे नेता ने स्वीकार किया। एक बात और बतला देना चाहता हूं कि यह तो सब को ही मालूम है कि हमारे ऊपर यकायक हमला किया गया और उसके लिये हम पहले से तैयार नहीं थे। हमारे नेता ने कहा कि वह एक स्वप्न की दुनिया में थे और वह यह समझ रहे थे कि.....।

श्री अध्यक्ष--आपके केवल ४ मिनट और शेष रह गये हैं।

श्री हरगोविन्दसिंह--श्रीमन्, बीच में यह जो व्यवधान भी हुआ है।

श्री अध्यक्ष--इसीलिये आपको ५ मिनट और दिये हैं।

श्री राधेश्याम शर्मा--श्रीमन्, यह मंत्री जी का भाषण पार्लियामेन्ट में हो रहा है या कि उत्तर प्रदेश की विधान सभा में ?

श्री अध्यक्ष--आप कृपया बैठ जायें। अगर माननीय राधेश्याम जी पार्लियामेन्ट में बैठे हैं तो पार्लियामेन्ट में हो रहा है और यदि विधान सभा में बैठे हैं तो यहां हो रहा है।

श्री हरगोविन्दसिंह--श्रीमन्, मैं यह कह रहा था कि हमारी सीमा पर ऐसे समय पर अचानक आक्रमण हुआ कि हम इसके लिये किसी भी रूप से तैयार नहीं थे। लेकिन हम को उस आक्रमण से चोट के साथ साथ जो शिक्षा मिली है वह यह कि यदि आप स्वयं चाहते हो कि आप शांति से रहो तो भी अपने देश में यह आवश्यक है कि देश की इतनी सैनिक शक्ति अवश्य होनी चाहिये कि दुनियां का दूसरा देश हमारे ऊपर आंख न उठा सके। परन्तु यह सब तभी हो सकता है कि हमारे जैसे गरीब देश में जनता के अन्दर उत्साह फूंका जाय जब कि जनता को प्रोत्साहित किया जाय। परन्तु यहां उसका मापदंड रुपये की शक्ति रखा गया है। परन्तु यह सब को मालूम है कि एक गरीब आदमी ज्यादा उत्साह से बलिदान कर सकता है बनिस्बत अमीरों के और हमको प्रत्यक्ष ऐसा दिखाई भी दे रहा है। लेकिन ऐसा मापदंड रखकर हम गरीबों का अपमान कर रहे हैं। शायद आपको मालूम नहीं है कि गांवों में जनता कितनी उत्सुक है धन देने के लिये, लेकिन हमारे एक मित्र ने कहा कि चन्दे से लड़ाई नहीं लड़ी जा सकती है। आप ५-६ करोड़ रुपये की बात करते हैं तो मैं यह कहूंगा कि मैं कोई सीक्रेट बात नहीं कह रहा हूं कि यदि आप हमारे लेखे जोखे को देखें तो आपको मालूम होगा इससे कहीं ज्यादा हम खर्च कर चुके हैं। इसलिये ऐसी बात कहना नामुनासिब होगा। वह शायद ऐसी बात इसलिये करते हैं कि वह यह जानते हैं कि चीन कोई भारतवर्ष को हड़प तो जायगा नहीं और चुनाव तो फिर आयेगा ही तो क्यों न हम यह कह लें। ताकि जनता के सामने यह तो कह सकें कि तुम्हारे उस टैक्स को देखो हमने विरोध किया था परन्तु सरकार नहीं मानी। परन्तु आप यह भूल जाते हैं कि जनता आज आपसे भी आगे है। वह खुशी से दे रही है और देगी और देना भी चाहती है। आज जनता स्वयं हमारे और आपके विचारों को निर्धारित कर रही है और हमारे सिद्धांतों को एवं निर्णयों को निर्धारित कर रही है। आप यह मत समझें कि आप कोई बड़ी भारी चीज कह रहे हैं। आप जनता के मनोभावों को समझने का प्रयास करें, नहीं तो उस पर वज्रपात होगा और वह हतोत्साहित होगी। देश किस गति को पहुंच सकता है उसकी शिक्षा आपको पिछली लड़ाई से लेना चाहिये। फ्रान्स तो चुपचाप बैठा हुआ था। वह यह समझता था कि मैजिनों लाइन पर हमला नहीं हो सकता। मगर हिटलर ने वहां के कुछ लोगों को फुसलाकर क्या किया यह आप सब जानते हैं। एक दिलचस्प किस्सा है, उसको जानकर आपका ज्ञान बढ़ेगा। उसने वहां के कुछ फ्रान्सीसियों के हाथ में काला बिल्ला बांध दिया। वह रेस्ट्रां आदि में बैठ जाता था। जब लोग अपनी बीबी, बच्चों आदि को लेकर वहां जाते थे तो वह एक कोने में

बैठ कर रोने लगता था। लोग चारों ओर इकट्ठा हो जाते थे और उसको रोता देख उससे उसका कारण पूछते थे, समझते थे कि इसका कोई संबंधी मर गया है। जब लोग चारों ओर इकट्ठा हो जाते थे तो यह कहता था कि जर्मनी में मैंने देखा कितनी तैयारी है, कितनी बड़ी सेना है, कितनी बड़ी तादाद में साज-सामग्री आदि है, और यहां आपकी यह खुशी देख रहा हूं तो यह सोचता हूं कि जर्मनी एक दिन हमला कर देगा और यह बीबी बच्चे सब मर जायेंगे, बस यही सब सोच कर मुझे रुलाई आने लगती है। आप जानते हैं कि उसका क्या नतीजा हुआ? एक लेखक ने जैसा कि लिखा है, जर्मनी की फौज जब फ्रांस में घुसी तो इस तरह घुसी जैसे कि मक्खन में चाकू घुस जाता है। हमने देखा कि वही फ्रांस १४ दिन के अन्दर जर्मनी के पैरों के नीचे रौंदा जाने लगा। इसलिये आप हमसे राजनीति में विलग रहिये। आज देश के मरने और जीने का सवाल है। मैं आपसे प्रार्थना करूंगा कि आप कोई ऐसा कार्य न करें जिससे हमारे जवान यहां की कार्यवाही को पढ़ कर यह समझें कि हम इन्हीं के लड़के हैं जिनका यह खयाल है कि लड़ाई में रुपया नहीं देना चाहिये। (व्यवधान)

श्री उग्रसेन--यह किसने कहा है कि लड़ाई में रुपया नहीं चाहिये, एक वाक्य तो माननीय मंत्री जी ऐसा बता दें?

श्री हरगोविन्दसिंह--आप अपने लिये संतोष यह कह कर कर लें कि मैंने नहीं कहा था। मैं पूछता हूं कि आखिर इस बिल में है क्या? इसमें केवल यही तो है कि हम अपनी जनता से यह अपील कर रहे हैं कि हमारी भारत माता अपना आंचल खोलकर अपने बच्चों के पास जा रही है और कह रही है कि हमारी लाज आज लूटी जा रही है अकारण ही, और हमारे बच्चे आज पहाड़ों के दुर्गम स्थानों में बर्फ से गले जा रहे हैं, उसके लिये हमारी सहायता करो जिससे कि वे इस रण में विजय प्राप्त कर सकें। बस इतना ही मुझे कहना था।

श्री अध्यक्ष (कुंवर श्रीपाल सिंह से)--आपको अब १० मिनट में अपना भाषण समाप्त कर देना है।

कुंवर श्रीपालसिंह (जिला जौनपुर)--और लोगों को तो आपने अधिक समय दिया है। अगर आप दस ही मिनट देंगे तो मुझे नहीं बोलना है।

श्री अध्यक्ष--जो माननीय सदस्य दस मिनट बोलना चाहें वे खड़े हो जायं।

श्री राघवेन्द्रप्रतापसिंह (जिला गोंडा)--और जो भी पार्टियां हैं उनके २-२, ३-३ सदस्य बोल चुके हैं, हमारी पार्टी का कोई भी नहीं बोला है।

श्री अध्यक्ष--ठहर जाइये मैं आपको बताये देता हूं कितने कितने बोले हैं। पी० एस० पी० के दो बोले हैं और आपकी तरफ से एक और पी० एस० पी० की संख्या दुगनी है। अब एक एक और बोल लेंगे तो उनके तीन और आपके दो हो जायेंगे।

***श्री रामायणराय** (जिला देवरिया)--मान्यवर, आपने यह निश्चय किया था कि किसी दल के नेता को २० मिनट का वक्त मिलेगा। मैं अपनी पार्टी की तरफ से बोल रहा हूं, मैंने अपने दल के नेता से आज्ञा ले ली है इसलिये मुझे अधिक समय दिया जाय।

श्री अध्यक्ष--आप भाषण तो दीजिये। देख लिया जायगा।

श्री रामायणराय--मान्यवर, मैंने माननीय हरगोविन्द सिंह जी के भाषण को बड़े ध्यान से सुना। उन्होंने हमसे यह कहा था कि उनके द्वारा जो विचार सदन में व्यक्त किये जा रहे हैं उनसे हमें कुछ सीखने को मिलेगा। उन्होंने एक इंग्लैन्ड के राइटर का हवाला दिया और कहा कि सुरक्षा के लिये किन-किन बातों की आवश्यकता होती है। उन्होंने अपने देश के

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री रामायणराय]

भी एक नेता का हवाला देते हुये यह कहा कि इस लड़ाई से हमको क्या क्या फायदे हुए हैं । देश के हर वर्ग का सहयोग मिला है, देश को एकता मिली है । लेकिन मैं उनसे यह अर्ज कर देना चाहता हूं कि जहां हमें इस युद्ध से ये सारी चीजें मिली हैं वहां हमारे कुछ भाई बार न्यूरोसिस से सफर करने लगे हैं और वे घबरा कर न जाने क्या क्या बातें कहने लगे हैं । मंत्री जी ने कहा कि जो कुछ हम कर रहे हैं उससे मोर्चे के लोगों की हिम्मत पस्त होगी और वे सोचेंगे कि हम उनके लिये धन नहीं देना चाहते । मैं उन जैसे बुजुर्ग से कम से कम यह आशा करता था कि वे विरोधी-दलों की ओर से जो प्रस्ताव आया है, उस को देखने की कृपा करते । प्रजा सोशलिस्ट पार्टी की ओर से यह प्रस्ताव आया है कि इसको प्रवर समिति को सुपुर्द कर दिया जाय, उसके साफ माने यह होते हैं कि बिल की जो मंशा है उससे सहमत हैं, उसके सिद्धान्तों को हम मानते हैं, लेकिन ब्योरे के अन्दर वे कुछ ऐसी बातें चाहते हैं कि जिन बातों का समावेश होने के लिये वे उस बिल को प्रवर समिति के सुपुर्द करने की बात करते हैं । मान्यवर, मुझे हैरानी हुई कि उन्होंने जिस ढंग से इधर के लोगों से सहयोग पाने की उम्मीद की थी और जैसी प्रेरणा उन्होंने दी . . . .

श्री हरगोविन्दसिंह---वैसा सहयोग नहीं चाहिये ।

श्री रामायणराय---मैं आपसे अर्ज करता हूं कि बड़े गर्व के साथ उन्होंने कहा कि चाहे इधर वालों का सहयोग मिले या न मिले हम इस युद्ध में अवश्य विजयी होंगे । मैं आपसे अर्ज नहीं करता, पर आज हिन्दुस्तान के सारे लोगों के सामने यह बात साफ हो चुकी है कि हिन्दुस्तान की अगर विजय होनी है तो हिन्दुस्तान की जनता में आज जो मनोबल पैदा हो गया है उस मनोबल के सहारे ही विजय होगी । आज हिन्दुस्तान के लोगों को इस युद्ध के चलते जो भी क्षति उठानी पड़ी है आप पंडित जवाहर लाल जी के शब्दों में क्यों नहीं कबूल करते कि हमें धोखे में रखा गया था, हमें गलतफहमी में रखा गया था और सुरक्षा की जो व्यवस्था होनी चाहिये, जो तैयारी होनी चाहिये, वह तैयारी हम नहीं कर पाये । आज एक स्वर से इस बात को स्वीकार किया गया है ।

मान्यवर, मैंने स्वयं आपसे निवेदन किया था कि इस युद्ध के संबंध में जब कभी सदन में विवाद हो तो उसको दो सीमाओं को हमेशा अपने ध्यान में रखना होगा । एक सीमा की ओर संकेत करते हुये मैंने आग्रह किया था कि अपने मुंह से हम ऐसी बात न निकालें जिससे जनता का मनोबल टूटे, उसका साहस बिखरे, उसका उत्साह भंग हो । इसके साथ ही दूसरी तरफ मैंने यह भी संकेत किया था कि हमें अपने को सेल्फ कम्प्लिसेंसी से सपने में न रख कर वास्तविकता के धरातल पर खड़ा होना चाहिये । और आज मैं फिर देख रहा हूं कि माननीय मंत्री जी जनता को सेल्फ कम्प्लिसेंसी की ओर ले जाना चाहते हैं । आखिर विरोधी दल आपसे कहता क्या है, वह परेशान क्यों होता है, इसके ऊपर जरा आप गौर तो करें । इधर का कोई बैठने वाला यह नहीं कहता है और कहने की बात आज क्या है ? मैं तो आपसे यह कहता हूं और चुनौती देकर कहता हूं कि पिछले दिनों जब सदन भंग किया गया था तो किस विधायक और किस दल ने इस पुनीत काम में सहयोग दिया है, इस बात का पता लगाया जाय । जहां तक मेरे दल का संबंध है, उसकी चर्चा मैं नहीं करना चाहता हूं . . . . . .

श्री हरगोविन्दसिंह---आप अपने दल की बात कहें ।

श्री रामायणराय---अपने दल के बारे में मैं कुछ नहीं कहूंगा, इतिहास में ये सारी बातें आयेंगी कि इस प्रकार का एक अकेला दल था जिसने बार बार इस बात से आगाह किया कि हमारे मुल्क पर संकट आनेवाला है ।

श्री अध्यक्ष---श्री रामायण राय जी, इस वक्त आपके दल का नेतृत्व कौन कर रहा है ? अगर आप ही अपने दल के नेता का काम कर रहे हैं तो २० मिनट तक आप बोलना चाहें तो बोल सकते हैं । बात यह है कि १०-१० मिनट मैंने निश्चित किया था जिसे सदन ने भी स्वीकार

किया है । अगर आप १० मिनट से ज्यादा बोलना चाहते हैं तो फिर आपके दल के नेता बाद में अपने लिये कोई क्लेम न करें, यह मैं जानना चाहता हूं । श्री बलवान सिंह जी, क्या आपकी तरफ से ये बोल लें ?

श्री बलवानसिंह (जिला कानपुर)---जी हां ।

श्री रामायणराय---मान्यवर, मैं उन बातों की चर्चा क्या करूं जो कि सर्वविदित हैं । एक प्रश्न जो इस बिल के चलते हमारे दल से सम्बद्ध है, केवल उसी की तरफ माननीय मंत्री जी का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं । है आपके दल में ऐसा कोई चरित्रवान् नेता जिसने अपनी बातों को लेकर अपने दल की नेतागिरी तक का मोह छोड़ दिया हो ?

श्री हरगोविन्दसिंह---आपने निकाल दिया तो वे क्या करें ?

श्री रामायणराय---आपको ज्ञात होना चाहिये कि हमारे दल ने अपने नेता को निकाला नहीं है बल्कि हमारे दल के नेता ने स्वयं इस परिस्थिति में इस देश के उन लोगों की शान के लिये जो कुर्बान हुए हैं, त्याग-पत्र दिया है । माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे हैरानी उस समय हुई जब कल इस सदन में ऐसे लोग जो सचमुच जनता के मनोलब को तोड़ने में जुटे हैं उनकी वक्तृता को सुनकर उधर से तालियां पीटी जा रही थीं । मैं उन बातों की तरफ ध्यान आकृष्ट करूंगा जो बातें आपके सामने आने वाली हैं । सच बात तो यह है कि इस देश में इस तरह की लड़ाई पहली बार आई है इसलिये जो कुछ आपको सोचना चाहिये वह आप सोच भी नहीं पाते । मैं आपको याद दिलाऊंगा कि जब किसी देश में ऐसी परिस्थिति आती है तो उसमें एक जोश, एक उमंग और उत्साह होता है लेकिन लड़ाई के चलते कुछ महीने अगर बीते और धीरे धीरे हमारे कुछ आदमी उसमें अगर बलिदान होते हैं, कुछ हमारा जीवन स्तर फिर अगर नीचे को हटा तो उससे भग्नाशा उत्पन्न होगी और इस भग्नाशा के क्षणों में कुछ लोग ऐसी स्थिति की तैयारी में लगे हैं और आज तालियां पीटते हैं । अब मैं आप की खिदमत में यह पेश कर रहा हूं । "सकिश्ता जिन्दगी" एक किताब है उसमें जामिया मिलिया के गुलाम रब्बानी साहब ने लिखा है और वे देश की एक खास पार्टी के एक बहुत बड़े नेता हैं । जो शेर उन्होंने लिखे हैं वह मैं पेश करता हूं और अगर हिम्मत हो तो समझिये कि इसमें क्या कहा गया है ।

"चीन, चर्चिल, पटेल और नेहरू ट्रूमेन और मार्शल के लिये
च्यांग और च्यांग की तरह के डाकुओं की सियाकारियों के लिये
जहर और मौत का जाम है

अब एक लाइन और आगे सुनिये :---

माउत्से तुंग की फौज का एक खून का सैलाब है
उसमें मालाबार का और तेलंगाने का खून है
शेर का और अपसाने का खून है
इसमें कश्मीर का और आलमगीर का खून है
इसमें स्पेन का और यूनान का खून है
इसमें इन्सान का खून है
जो बहाया गया है
और चूसा गया है
जिससे सरमायदारी को, जागीरदारी को सींचा गया है ।

जरा और सुनिये---

किस की हिम्मत है जो इसकी यूरिश को रोके
किस की हिम्मत है जो इसको टोके

[श्री रामायणराय]

अब यह सैलाब बढ़ता चला जायगा
चीन की सरजमीन से मलाया तलक
और मलाया से बर्मा तलक
और बर्मा से हिन्दुस्तान
और हिन्दुतान से फिलस्तीन व यूनान स्पेन तक
अब यह तूफान बढ़ता चला जायगा
चीन के सरकशो चीन के बागियो मरहबा
और आगे बढ़ो और आगे बढ़ो
वार पर वार करते चलो।"

मैं जिम्मेदारी के साथ इसको पेश कर रहा हूं आप जरा सुनिये--

"सुनना हराम है और न सुनाना हराम है
सुनने के बाद जोश में आना हराम है।"

वह कहते हैं कि :--

"शेख फूलों के सीने में शबनम के मोती भरे हैं
और तुम्हारी दहकती हुई उंगलियां
राइफल और बन्दूक थामे हुये हैं
जिन की आवाज में अमन का गीत है
आदमियत का संगीत है।"

तो मैं अर्ज करना चाहता हूं कि आप गलतफहमी में न रहें। आपको अगर हमारी बात बुरी लगती हो तो मैं कतई उन बातों का जिक्र नहीं करना चाहता, लेकिन मैं एक देशभक्त के नाते आप से कहना चाहता हूं और यह कम्युनिस्टों की पालिसी है डामीनेट आर डिसरप्ट। किसी समाज पर कब्जा कर लो अगर नहीं कर सकते हो तो डिसरप्शन की उनकी नीति होती है। केरल में आप भूल गये जब उनकी सरकार वहां बनी तो फौरन ऐलान कर दिया स्टूडेंट्स फ़ारमेशन नहीं होना चाहिये। सारे मुल्क में आज छात्र संगठन बनाये हैं, मजदूर यूनियन बनाये हैं लेकिन जिस समय हुकूमत हुई तो जो फैसला हुआ वह भूल गये क्या। पीटिये तालियां खूब उनके भाषण पर। चीन को न्योता किसने दिया? इस सवाल पर भी गौर करना चाहिये। उसका श्रेय हमारे बगल में बैठे हुए कम्युनिस्ट पार्टी के लोगों को है। (कम्युनिस्ट पार्टी की तरफ से आवाज "बिल्कुल गलत है") कभी सुना आपने पीकिंग रेडियो क्या कहता है? चीन की फौज लिबरेशन आर्मी है। अभी गोरखपुर में जो गोलीकांड हुआ उसकी खबर किसने वहां तक पहुंचायी? मैं अपने राज्य के होम डिपार्टमेंट से पूछना चाहता हूं यह खबर पीकिंग किसने भेजी। वह कहता है हमारे मुल्क में सरमायेदारों की हुकूमत है गरीब जनता को निजात दिलाने के लिये वह सेना आ रही है। यह प्रोपेगेन्डा वहां से होता है। इनकी शक्ल ठीक वही है जैसा आपने देखा होगा कहीं कहीं तमाशा होता है तो इस तरफ से शिव और दूसरी तरफ से पारवती दिखाई देते है। इनके खूनी इतिहास को सब जानते हैं, किस तरह बेरिया का सर तोड़ दिया गया। यह कभी गलतफहमी में आयेंगे? मैं इतना जरूर कहना चाहता हूं अपने दल की ओर से और यही क्यों इधर बैठने वाले भी इंसान ऐसे नहीं हैं जिनकी यह इच्छा हो कि इस मुल्क पर चीन कब्जा करे। अर्ज केवल इतना किया गया कि जिसके पास जवान है उससे जवान लो और जिसके पास धन है उससे धन लो। क्या आपने नहीं सुना अभी मेरठ में भर्ती करने के लिये कुछ अफसर गये किसानों के बीच में तो वहां के जाट काश्तकारों ने कहा कि जिस वक्त तुमने गन्ने का मूल्य घटाया उस वक्त नहीं सोचा हमारे जवान लड़ने को जायेंगे। आज बनारसी दास जी ने देखा होगा गांवों में स्त्रियों की सबसे प्रिय वस्तु गहना होती है, आज अपने सोहाग का टीका भी मुख्य मंत्री के चरण में पेश करते हुए हमारी मातायें, बहनें अपना गौरव समझती हैं। तो आप क्यों शक करते हैं कि यदि कोई जायगा

तो युद्ध के लिये सहायता नहीं करेंगे । आप जन समाज से सहयोग लीजिये, सारा जन समाज आपकी अगुआई में इस मुल्क की स्वाधीनता के लिये अपना सर्वस्व न्यौछावर करने के लिये तैयार है । आपको शक क्यों होता है ? इस बिल के चलते अगर कोई विवाद, बुद्धि भेद खड़ा हुआ है तो वह श्रेयस्कर नहीं होगा । इसलिये मैं आपसे यह अर्ज करना चाहता हूं कि आज आपके पास ताकत है और आप एक क्या अनेक बिल पेश कर सकते हैं । लेकिन मेरी आखिरी प्रार्थना सुन लें कि शब्दों का प्रयोग आप जब करें तो यह समझें कि प्रत्येक शब्द का एक इतिहास होता है और जनता के मन पर उसका प्रभाव होता है । टैक्सेशन के प्रति जनता प्रिजूडिस हो गयी है । १८८५ से १९४२ तक का इतना बड़ा स्वतंत्रता संग्राम आप जनता के चन्दे से लड़ सकते हैं तो क्यों नहीं हिम्मत होती कि इस महान् संकट की वेला में भी समूचे राष्ट्र का सर्वस्व बलिवेदी पर चढ़ाने के लिये आप अपना नमूना पेश करें । जिस समय कहा जाता है कि मंत्रिमंडल से कुछ सदस्यों को कम करो तो आप यह समझते हैं कि आपकी कुर्सी का हमें लालच है । लेकिन यकीन रखें कि रामायण राय जैसे लोगों को लालच होता तो आपके बगल में बैठे होते । पिछले स्वतंत्रता संग्राम में आपसे कम बलिदान इधर के बैठने वाले लोगों ने नहीं किया है । कुछ ऐसी बात है जिसकी वजह से हम आपकी आलोचना कर रहे हैं और अगर स्वस्थ आलोचना करना भी गुनाह है तो हम ऐसा समझते हैं कि डेमोक्रेसी को भी आपको गुनाह मानना चाहिये । डेमोक्रेसी का यही अर्थ होता है और जैसा कि पुराने लोगों ने भी कहा है कि जब किसी प्रश्न पर विवाद होता है तो दोनों पक्ष स्वस्थ ढंग से प्रस्तुत किये जाते हैं । तभी वास्तविकता का ज्ञान होता है । आज अगर संकट की वेला में इधर के बैठने वाले आपसे कुछ आग्रह कर रहे हैं तो आपको इधर के बुजुर्ग आदमी फिफ्थ कालमिस्ट दिखाई पड़ने लगते हैं । मैं समझ नहीं पाया कि ठाकुर साहब को कैसे इस बात का साहस हुआ, कौन सा अपराध किया सोशलिस्ट पार्टी ने, जनसंघ ने ? (व्यवधान) मैं उनमें से हूं जिनका यह विश्वास है कि आज प्रश्न यह है कि देश रहता है या नहीं और फिर प्रश्न है कि देश रहता है तो जनतंत्र रहता है या नहीं । हम सब को मिल कर इन दोनों प्रश्नों को हल करना है ।

अन्त में यही मेरा आग्रह है कि जनता के मनोबल को बनाये रखने के लिये इंग्लैंड की पोथी पढ़ने की जरूरत नहीं है । साथी उग्रसेन जी ने जैसा कहा आई० एन० ए० की फौज के सिपाही कुछ चन्दा मांगने गये तो वे लोग परेशान हो कर सुभाष बाबू के पास गये और पूछने लगे कि कितना धन वे दें । सुभाष बाबू ने कहा कि अगर हमारे आई० एन० ए० के सिपाही भी यह पूछें कि हम कितना लड़ें तब ? तो इस लड़ाई को चलाने के लिये आज यह प्रश्न नहीं है कि कौन कितना दे । आज प्रश्न यह है कि समूचे देश की शक्ति का मोबिलाइजेशन होना चाहिये और जिस सिद्धान्त का मैंने प्रतिपादन किया है कि जिसके पास जवान है उससे जवान लिया जाय और जिसके पास धन है उससे धन लिया जाय, उसको अमल में लाया जाय तो एक चीन नहीं अनेक चीन भी हमारे देश पर कब्जा नहीं कर सकते । आखिर में मेरा अनुरोध यही है कि पंचमांगियों से सावधान रहने की जरूरत है ।

श्रम उपमंत्री (श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा)—माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपका बड़ा अनुगृहीत हूं कि आपने माननीय रामायण राय जी के ओजस्वी भाषण के बाद मुझे अपनी बात कहने की आज्ञा दी । स्वयं रामायण राय जी ने काफी काम मेरा हल्का कर दिया है अन्त में अपने भाषण में सुभाष बाबू का तजकिरा करके, जिन्होंने उनसे पूछा था कि हम कितना करें तो सुभाष बाबू ने कहा कि अगर सिपाही भी पूछें कि हम कितना लड़ें तो फिर क्या उत्तर होगा । सिपाहियों से उन्होंने कहा कि अपना सर्वस्व अर्पण करके लड़ो और शेष लोगों से उन्होंने यह कहा कि तुम भी अपना सर्वस्व अर्पण करो । उसमें उन्होंने अपनी तरफ से एक बात जोड़ दी कि जिसके पास जो है वह दे । जाहिर है कि उनके सारे तर्क के पीछे एक सिद्धांत निहित है । उनका खयाल है कि जिस पर हम लगान बढ़ोत्तरी के साथ लगाने जा रहे हैं वह हम से कहने वाला है कि लगान हमारे पास है, इस बढ़ोत्तरी को देने के लिये मेरे पास नहीं है । इतनी बात शायद उनके दिल में है लेकिन उन्होंने अपने भाषण में यह भी कहा कि जहां तक देने का सवाल है, अपनी मांग का

[श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा]

टीका तक दिया गया । इससे श्रीमन्, स्पष्ट हो गया कि इस स्थिति में जो हमारे ऊपर आपत्ति आयी हुई है कौन क्या दे सकता है इसका प्रश्न नहीं है, प्रश्न यह है कि सबको सब कुछ देना है । तो मैं आपको विश्वास दिलाना चाहता हूं कि थोड़ी सी बढ़ोत्तरी इस विधेयक द्वारा लगान में मांग रहे हैं । उसको देने में किसान अपने को असमर्थ नहीं पाता । हां, एक बात होती है, हकीम कभी-कभी बीमार से ज्यादा परेशान रहता है । मैं उनकी नीयत पर हमला नहीं करता । उनका नब्ज देखने का जो तरीका है, उससे वह इस नतीजे पर जाते हैं कि हम किसान की शक्ति से बाहर मांग रहे हैं । हमने भी उसकी नब्ज देखी है । हम भी उनकी तरह एक हकीम हैं । जैसे वह देशभक्त हैं, इधर के लोगों को भी देशभक्त मानने में वह इनकार नहीं करेंगे । हम उसकी नब्ज देख कर इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि वह इतना बोझ उठाने में सशक्त होगा, और नहीं होगा तो पेट पर पट्टी बांध कर सहायता करेगा ।

श्री अध्यक्ष---मैं यह देख रहा हूं कि बहुत से माननीय सदस्य बोलना चाहते हैं । अगर सबका एक मत हो, तो लंच आवर में भी हम बैठें ?

(किसी ने विरोध नहीं किया)

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा---माननीय रामायण राय जी ने अपने दल की तरफ से, उसके प्रवक्ता के नाते यह बात कही, उन्होंने दल के शेष लोगों की सलाह से यह बात कही, या उनकी बिना सलाह के कही, इसकी जानकारी मुझे नहीं है लेकिन अगर इस बिल के सिद्धांत को वह स्वीकार करते हैं, तो सारे शेष तर्क उनके बेकार हो जाते हैं । उन्होंने कहा कि प्रवर समिति में ले जाने का प्रस्ताव करने का मतलब यह है कि सिद्धांततः वह इस विधेयक को स्वीकार करते हैं । मुझे उनको मुबारकबाद देना है । जैसा मैं देख रहा हूं, मेरी बात से उनके दल में भी कुछ इधर शुरू हो गया है, मुझे डर लगने लगा है । बदकिस्मती से प्रजासमाजवादी दल की कुछ दिनों पहले एक तस्वीर आयी है, उससे भी मुझे हमदर्दी है क्योंकि माननीय गेंदा सिंह ने इस देश की सुरक्षा के लिये जो ठीक समझा वह किया था । दल के शेष लोगों ने उनकी बात नहीं समझी । तो वह उस पद से अलग हो गये । लेकिन रामायण राय जी ने कहा कि है कोई ऐसा चरित्रवान् दूसरे दलों में ? यहां तो ऐसे ऐसे चरित्रवान् हैं कि मुख्य मंत्री का पद छोड़ कर चले गये और उससे सबक सीखना हो तो जरूर सीखना चाहिये । और हम भी सीख सकें तो हमें भी सीखना चाहिये । मैं गेंदा सिंह जी को बधाई देता हूं, उनके दल को नहीं, क्योंकि दल का भी धर्म होता है कि उसका नेता अगर कोई बात कह दे तो उस बात की रक्षा करे । आपने उचित नहीं समझा, नहीं किया । मैं कोई राय नहीं देता । इतनी भी चर्चा उसकी आ गई, अगर माननीय रामायण राय जी इस बात को न उठाते तो न आती । मान्यवर, प्रवर समिति में ले जाने से अगर वह शांत होते हैं, वह उसके सिद्धांतों से ऐग्री करते हैं तो सब तर्क और बहस बन्द । चलिये प्रवर समिति में भी हम बैठेंगे और विचार करेंगे । कितने दिन कितने घंटे बैठेंगे ? कुल ९ क्लाजेज का बिल है । वह मानते हैं संकटकालीन स्थिति है, ज्यादा देर नहीं लगनी चाहिये तो दो तीन दिन में कर लें । लेकिन कुल ९ क्लाजेज के इस बिल के लिये हाउस में तीन दिन का समय रखा है । तो बजाय २० ज्यादा अक्ल वालों के साथ साथ तीन दिन वहां बैठकर हम बाकी जो कम अक्ल वाले भी हैं, वह २० अक्ल वालों के साथ शामिल होकर इस सदन में ही सब बैठें और बात करें तो और अच्छा रहेगा । तीन दिन में हम और आप बैठकर ९ क्लाजेज के इस बिल को पास कर लें । इतना छोटा सा यह विधेयक है । और फिर एक खतरा और है, प्रवर समिति में ले जाने में । वैसे तो मैं भी अपने मंत्रिमंडल के वरिष्ठ साथियों को यह सलाह दे देता कि ले चलो प्रवर समिति में ही और यह देवता जहां जहां से जाकर इनकी पुजाई करने से शांत हो जायं, वहां वहां ही ले चलो, अपने को उससे कोई झगड़ा नहीं है, लेकिन उसमें फिर कहीं ऐसा न हो कि वह लोग जो उसमें नामजद हों, जब वह विधेयक वहां से लौटकर आवे तो उनको अपने दल के सचेतक के पद से इस्तीफा दे देना पड़े या किसी को ऐसा करना पड़े कि अपने असेम्बली के पद से भी

इस्तीफा देना पड़े। इसलिये मैं तो उससे चन्द लोगों पर जो दुश्वारियां और परेशानियां आयद ही जायंगी उनको बचाना चाहता हूं।

(इस समय १२ बजकर ३१ मिनट पर अधिष्ठाता, श्री जगदीशशरण अग्रवाल एडवोकेट पीठासीन हुए।)

उन्होंने एक बात यह कही कि उनके लोगों की बड़ी इच्छा है कि देश को सशक्त बनाया जाय। यह बात कही गई कि हम लोगों को इस कदर कुर्सियों से मुहब्बत हो गई है, इतना प्रेम हो गया है कि कुर्सियां हमको नहीं छोड़तीं और हम कुर्सियों को नहीं छोड़ना चाहते। नेकराम जी ने एक अपील सुबह की थी। मैं अपनी तरफ से वादा करता हूं कि अगर इस बात की शांति इससे हो तो मैं आज ही इस्तीफा देता हूं, मगर इस देवता के शांत होने का कोई उपाय तो निकले। लेकिन हमें तो ऐसा लगता है कि जैसे रावण के एक सिर को काटो तो दूसरा सिर फौरन लग जाता था तो उसी तरह से यहां भी है कि एक चीज अगर करो तो दूसरी उसकी जगह फौरन आकर खड़ी हो जायेगी। मगर मैं फिर कहता हूं और बड़ी हिम्मत के साथ कहता हूं कि मैं बिलकुल उसके लिये तैयार हूं और मैं इसको कोई त्याग नहीं कहता। त्याग के माने क्या होते हैं? एक सेवा मैं यहां कर रहा हूं। यहां नहीं रहूंगा बाहर रहूंगा, दूसरी सेवा बाहर करूंगा। हमारे और आपके भाग्य में सेवा से त्याग नहीं लिखा हुआ है। इस प्रदेश और देश की सेवा करने का जो बोझ हम पर आया हुआ है वह एक ऐतिहासिक बोझ है एक राष्ट्रीय बोझ है। मैं अगर यहां नहीं भी रहूंगा तो भी देश की सेवा में रहूंगा। तो अगर, मेरे इस्तीफे से यह देवता शांत होते हों तो हम उस ओझाई को भी स्वीकार कर लेंगे, चलो एक बकरा और भी सही। लेकिन मुश्किल तो यह है देवता शांत नहीं होते। एक कहावत है, लोग कहते हैं कोई जानवर ऐसा होता है जैसे मान लीजिये कोई घोड़ा किसी ने खरीदा और जिस दिन वह घोड़ा खरीद कर उसके घर आया उसी दिन उसके लड़के की टांग टूट गई। अब पता लगाया जाता है कि आखिर क्या बात है तो मालूम पड़ता है कि यह घोड़ा जिस-जिस के घर गया उस उस के घर कोई न कोई ऐसी बात हुई। तो कुछ ऐसा मामला है कि इस विधेयक के बारे में समझदारी से ताल्लुक जिस किसी को होने लगता है वह खतरे में पड़ जाता है। एक आध को खतरा हो चुका है और ईश्वर न करे कि किसी और को भी खतरा हो।

एक बात मैं और निवेदन करता हूं। उत्तर प्रदेश में ही नहीं, पार्लियामेंट में तो उन लोगों का मुंह भी खुल गया जो लोग कहने लगे हैं कि यह पार्लियामेंट्री सिस्टम बड़ा कास्टली है, कुछ हाउसेज एबालिश कर दिये जायं। जवाहर लाल जी ने उनको उत्तर देते हुये कहा, नहीं हमको यह साबित करना है कि इस टेस्ट और इस स्ट्रेस के होते हुये पार्लियामेंटरी सिस्टम में रहते हुये भी हम इस स्थिति को फेश कर सकते हैं। अब पार्लियामेंटरी डेमोक्रेसी में मिनिस्ट्री भी एक चीज है। जैसे आप सब हैं। कुछ खर्च आप पर है कुछ हम पर है। कुछ लोग यह भी तो कह सकते हैं तो चलिये जितना रेशियो हमारा आपका है, उसी रेशियो में हम लोग सब इस्तीफा दे दें ताकि जनता का बोझ थोड़ा हट जाय। आखिर ४३० यहां क्या करते हैं बैठकर? बहुत से तो मुंह भी नहीं खोलते हैं, मुंह खोलना चाहें भी तो मौका नहीं मिलता है। (शोर)

एक सदस्य—माननीय अधिष्ठाता महोदय, माननीय बहुगुणा जी.....

श्री अधिष्ठाता—आपका क्या व्यवस्था का प्रश्न है?

एक सदस्य—मैं एक क्लेरिफिकेशन चाहता हूं।

श्री अधिष्ठाता—तो आप कृपया स्थान ग्रहण करें। अगर व्यवस्था का प्रश्न हो तो आप कर सकते हैं।

श्री मैनेजरसिंह—मैं तो यह निवेदन करता हूं कि जब तक आपातिक समय रहे तो मंत्री लोग अपना वेतन छोड़ दें। इधर के लोग भी छोड़ने के लिये तैयार हैं।

श्री नेकराम शर्मा—हम लोग भी अपना वेतन छोड़ने के लिये तैयार हैं यदि कांग्रेस के लोग और मंत्रिगण अपना वेतन छोड़ दें ।

श्री अधिष्ठाता—अब आप कृपया बैठ जायं ।

श्री रघुनाथसिंह (जिला वाराणसी)—सब लोग अपना वेतन छोड़ दें तो यह बड़ा अच्छा काम हो जायगा । यह घोषणा सरकार की तरफ से अभी हो जाय यह मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं । यह बहुत बढ़िया प्रस्ताव है ।

श्री उग्रसेन—आप इस समय इस बात पर व्यवस्था दें कि इस किस्म का प्रस्ताव जब हेमवती नन्दन जी की तरफ से आया है कि हम सब सदस्य इस समय अपना भत्ता छोड़ दें और हम सब इसके लिये तैयार हैं तो इस समय आपको क्या कठिनाई है कि उस प्रस्ताव को इस समय न लिया जाय । सोशलिस्ट पार्टी इसका समर्थन करती है ।

श्री अधिष्ठाता—आप स्वयं कदाचित् समझते होंगे कि जो प्रश्न आपने उठाया है वह व्यवस्था का प्रश्न नहीं हो सकता ।

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—मेरी बदकिस्मती यह है कि कुछ देर के लिये मेरे मित्र उग्रसेन जी यहां पर नहीं थे । यदि उन्होंने मेरी बात सुनी होती तो उनको शिकायत न होती .....

श्री बलवानसिंह—मेरा व्यवस्था का प्रश्न है । मेरा प्रस्ताव यह है कि .....

श्री अधिष्ठाता—इस समय प्रस्ताव नहीं हो सकता । भाषण के बीच में प्रस्ताव नहीं हो सकता ।

श्री बलवानसिंह—मेरा व्यवस्था का प्रश्न है ।

श्री अधिष्ठाता—कहिये क्या कहना है ।

श्री बलवानसिंह—श्रीमन्, मैं उपमंत्री जी से कहना चाहता हूं कि अगर हम लोग अपनी तमाम सैलरी छोड़ दें तो वह अपनी सैलरी छोड़ने के लिये तैयार हैं । उग्रसेन जी ने इसका समर्थन किया । अपनी पार्टी की तरफ से मैं समर्थन करता हूं मैं समझता हूं जब मंत्री जी की तरफ से यह प्रस्ताव आया है तो सब की और मंत्रियों की तनख्वाह आज से ही बन्द होनी चाहिये ।

श्री अधिष्ठाता—मैं फिर बताना चाहता हूं कि इसके कहने का अवसर आपको अपने भाषणों में मिलेगा लेकिन व्यवस्था का प्रश्न उठाकर अव्यवस्था करना अशोभनीय है ।

श्री चन्द्रजीत यादव (जिला आजमगढ़)—मैं समझता हूं कि माननीय सदस्य अपनी पार्टी की तरफ से लिखकर दे दें तो वह हो जायगा । हम भी उसका समर्थन करेंगे ।

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—मुझे इसमें कोई आपत्ति नहीं है । यह सदन बना इसलिये ही है कि उधर के लोग जो कहें इधर के लोग सुनें और इधर के लोग जो कहें उधर के लोग सुनें । इसलिये नहीं बना है कि जो कोई न कहे वह बात भी उसके मुंह में डाल दी जाय । मैं चर्चा कर रहा था कि जैसे आपको मंत्रिमंडल बेकार लगता है । वह प्रश्न आपने उठाया और आपने उस अपनी राय को रखा । वह आपकी राय होगी । अगर आवश्यक होगा और समय आयेगा तो उसका उत्तर दिया जायगा । कुछ लोग ऐसे हैं जो यह समझते हैं कि ४३० सदस्यों की क्या जरूरत है । २०० ही रहें, आपत्तिकाल के लिये नहीं, हमेशा के लिये । सिर्फ आपत्तिकाल का सवाल नहीं है । दूसरे, हमारे दोस्तों ने प्रस्ताव किया कि हम तनख्वाह छोड़ते हैं । बेशक, अगर ऐसा प्रस्ताव करना है तो कोई सब्सटैंसिव मोशन आप सामने लाइये । नियम ५२ के

प्रस्ताव रोज छपते हैं, रोज नये नये सवाल आते हैं, यह मेरा सौभाग्य होगा कि मेरी बात सुनने के बाद ऐसा प्रस्ताव आप लायें। इसके लिये मैं आपको बधाई दूंगा। जहां तक नेकराम जी की बात का ताल्लुक है, उसका मैं उत्तर दे चूका हूं। (व्यवधान)

मान्यवर, मैं आज एक निवेदन करना चाहता हूं। अगर सदन में इसी प्रकार चर्चा रही और हर किसी के बोलने के बीच में ही, हर एक, तुरन्त उस पर राय देना चाहे तो मैं लाचार हूं। मैं कमजोर आदमी हूं, बैठ जाऊंगा। मैं वाक्शक्ति की इस तरह की लड़ाई नहीं कर सकता, विचारों की लड़ाई जरूर कर सकता हूं, उनका आदान-प्रदान जरूर कर सकता हूं। एक बात और कहना चाहता हूं। यह क्या बात हुई कि अगर ऐसा हो जाय तो युद्ध में सहयोग देने हेतु यह कर दूंगा। गोया देश के रहने वाले अगर यह कहें अपने सिपाहियों से कि अगर तुम दुश्मन को मार भगाते जाओगे तो हम तुम्हारी मदद करेंगे तो हालत क्या होगी। यह तो कोई बहस नहीं है। अगर किसी ने ऐसी शर्त लगायी तो वह गलत बात होगी। हम जीतें या हारें उनको भगा सकें या न भगा सकें, हमें अपने सिपाहियों की आखिरी समय तक मदद करनी है और इसमें कोई कोताही नहीं होनी चाहिये।

अब मैं दूसरी तरफ आता हूं। उधर के लोग कहते हैं कि मंत्रिमंडल बहुत बड़ा है। उन्हें फिक्र है खर्चे की। अब अगर देश का कोई अगुआ आपकी यह अक्ल की बात नहीं समझता और फिजूलखर्ची करता है तो उसके माने यह हैं कि लड़ाई के लिये हमारे पास रुपये की कमी हो जायगी। तब तो भाई और जरूरी है कि फजूलखर्ची करने वाले को थोड़ा रुपया और दिया जाय ताकि लड़ाई के काम में कोई कमी न हो। यह भी कोई बहस हुई नहीं। आप समझते हैं कि पैसे की कमी होने वाली है और इसलिये तो आपको और पैसा भिजवाना चाहिये, नहीं तो क्या फर्क पड़ेगा पांच आदमियों के बैठ जाने से? लेकिन इस के साथ ही मैं एक बात साफ कह दूं। आप लोगों के दिमाग में यह है कि उधर के बैठने वाले ही केवल देशसेवी हैं। यह ठीक है कि आप में देशसेवा की भावना है लेकिन आप यह समझ रहे हैं कि जब ऐसा है तो हमारी बात यह लोग क्यों नहीं समझ रहे हैं। यह सवाल उनके मन में जरूर पैदा होता होगा। लेकिन अक्सर ऐसा होता है और उसका एक उदाहरण मैं आपको देना चाहता हूं। कालिदास जिस डाल पर बैठा था उसी को काटता जाता था बिना जाने, बिना समझे। उसकी नीयत खराब नहीं थी, उसकी भावना में कोई कमजोरी नहीं थी लेकिन वह उसी डाल को काटते-काटते जब मन्दिर पर गिर पड़ा तो भगवान् को दया आई। लेकिन आज जो हमारे सामने सवाल है उसमें अगर हमने कालिदास की तरह काम किया.....

(व्यवधान)

श्री अधिष्ठाता—आप लोग जरा शान्त रहें।

श्री उग्रसेन—८ सितम्बर के प्रस्ताव में जो मांग रहे हैं उसमें क्या यह साफ नहीं है कि ८,००० वर्गमील भूमि हमारी तिब्बत और चीन में चली जायगी। यह डाल आप काट रहे हैं या हम?

श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा—मान्यवर मेरे लिये केवल दस मिनट का समय है। (व्यवधान) उग्रसेन जी जांच तो बहुत चीजों की होगी और जांच इसकी भी होगी कि किसने इस देश में क्या किया। किसने इस देश में जब लड़ाई हो रही थी तो शल्यवादी प्रवृत्तियों को जोर दिया, किसने कहा कि हमारी तैयारी नहीं है। लेकिन हम सहायतार्थ तैयार हैं। जिस समय हमारे देश का बहादुर युद्ध के मैदान में हो उस समय पार्लियामेंट में, हमारे कमरे में भले ही हम कुछ कहें, लेकिन देश के रहने वालों को अगर आप यह कहेंगे, करोड़ों नर नारियों को अगर आप यह कहेंगे कि हम तैयार नहीं हैं, जिस समय कि देश का जवान जान देने के लिये तैयार है तो वह उचित नहीं होगा। मैं स्पष्ट कह देना चाहता हूं कि हम तैयार हैं, तैयार थे और तैयार रहेंगे। इस तरह की स्थिति का मुकाबला करने के लिए जो हमारे सामने आयी है। इस देश की रक्षा करने का जो बोझ हमारे ऊपर पड़ा है उसको उठाने में हमने कोई कोताही नहीं की और न

[श्री हेमवतीनंदन बहुगुणा]

हम कोई कोताही करेंगे । यह एक बड़ा सवाल है और इसका उत्तर इस दस मिनट में नहीं दिया जा सकता ।

आखिर में मान्यवर, मैं एक बात और कह दूं । माननीय नेकराम जी ने बात उठायी थी, किसी खास भावना से नहीं, किसी खास केस को उछालने के लिये भी नहीं, लेकिन फिर भी हाथ जोड़ कर विनती करता हूं कि उधर के लोग माननीय नेता और सदस्य नेकराम शर्मा जी से सहमति रखते हैं । तो मैं तो यही कह सकता हूं कि मेरे इस्तीफे के मामले को लेकर यदि कोई बात हो तो मैं अभी और इसी वक्त अपना इस्तीफा माननीय मुख्य मंत्री जी को भेजने को तैयार हूं । (व्यवधान)

जहांतक मेरी सेवाओं का ताल्लुक है वह देश और प्रदेश की खिदमत में सदैव रहने वाली हैं और वैसे भी रही हैं । मैं तो यह समझता हूं कि अगर हर आदमी अपनी जगह पर ईमानदारी से काम करे तो चाहे वह मंत्री हो, चाहे वह तहसीलदार हो, या चाहे वह एक सिपाही हो तो मैं यही कह सकता हूं कि हम सब मिल कर अपने देश का बोझ उठा सकते हैं । लेकिन इस बहस का उत्तर कि मंत्रिमंडल के सदस्य कम हों, इसका उत्तर मुख्य मंत्री जी कई दफा दे चुके हैं । यदि यह कन्ट्रोवर्सी सिर्फ १—२ को कम करके ही हल हो सकती है तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है। आपको मैं बताऊं कि उत्तर प्रदेश की जो जनता है उसने देश में संकट काल की स्थिति के बाद से इस विधेयक के विरोध में सभायें नहीं कीं और न प्रस्ताव ही आये। पहले इसी तरह के दूसरे विधेयक के विरोध में सभायें हुई थीं।

(इस समय १२ बजकर ४६ मिनट पर उपाध्यक्ष, श्री होतीलाल अग्रवाल पीठासीन हुए ।)

आप देखें कि उत्तर प्रदेश की जनता आज बहुत आगे है और उसका चरित्र और मनोबल बहुत ऊंचा है। सभी को जनता को और प्रोत्साहन देना चाहिये न कि ऐसी बातें करके उसको और हतोत्साहित करने की बात करनी चाहिये। आपसे मेरी बस यही प्रार्थना है कि देश की सुरक्षा हेतु साधनों को जुटाने में हम सभी अपना सहयोग प्रदान करें।

श्री भानुप्रतापसिंह (जिला बस्ती)—माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं इस सदन के सम्मुख प्रस्तुत विधेयक का समर्थन करने के लिये खड़ा हुआ हूं। संभव है कि इस पर कुछ लोगों को आश्चर्य हो। परन्तु मेरी पार्टी ने चूंकि पहले वादा किया था इसलिये मैं उस वायदे को निभा रहा हूं। मैं दिये हुए वचन को बहुत अधिक महत्व देता हूं। हम उस परम्परा को निभाने वाले हैं कि "प्राण जायं पर वचन न जाई।" परन्तु इस बात को हम यदि नजर-अन्दाज भी कर दें तो भी देश में जो परिस्थिति है उसको देखते हुए इस विधेयक का विरोध नहीं करना चाहिये। इसका समर्थन ही देश और प्रदेश के लिये हितकर होगा। मैं इस विधेयक पर बाद में आऊंगा। पहले मैं माननीय डा० अहमद और श्री गोविन्द सहाय जी ने जो कुछ कल जिक्र किया था उनके बारे में कुछ कहूंगा ।

डा० अहमद ने जिस तरह से इस बिल की पैरवी की उससे उन्होंने कम्युनिस्ट पार्टी को निर्दोष साबित करने की कोशिश की है । उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिज्म को भी बिलकुल निर्दोष साबित करने की कोशिश की है । चीन के आक्रमण में उन्होंने कम्यूनिज्म को नहीं बल्कि चीन की प्रसारवादी नीति को दोषी ठहराया है। परन्तु यह तो सर्वविदित ही है कि यदि अमरीका और ब्रिटेन जैसे देशों ने भी वैसा ही रुख अपनाया होता जैसा कम्युनिस्ट देशों ने अपनाया है और भारत की सहायता न की होती तो चीन भारत का सफाया कर सकता था । मैं यह जानना चाहता हूं कि कौन सा कम्यूनिस्ट देश ऐसा है, जिसने भारत पर चीन द्वारा किये गये आक्रमण को आक्रमण माना हो और चीन को आक्रामक कहा हो, केवल यूगोस्लाविया को छोड़ कर संसार के किसी भी कम्यूनिस्ट देश ने स्पष्ट शब्दों में चीन की निन्दा नहीं की

है। सभी चुप रहे हैं। मैं यह पूछना चाहता हूं कि जब चीन की फौजें तेजी से देश में बढ़ रही थीं तो कौन से कम्यूनिस्ट देश ने हमारी मदद की। प्रवदा में जो पहिला लेख निकला था उसमें भी चीनी पक्ष की ही पुष्टि की गई थी और कहा गया था कि मैकमोहन रेखा मान्य रेखा नहीं है। रूस ने भी बाद में रुख बदला। परन्तु यह भी विचारणीय है कि क्यों बदला। सम्भव है रूस ने चीन से कहा हो कि तुम आक्रमण करो, यदि हिन्दुस्तान पश्चिमी देशों से सहायता नहीं मांगता है या वह देश उसकी सहायता नहीं करते हैं, तो तुम अपना काम खत्म कर सकते हो। परन्तु स्थिति खराब होने पर हम बीच-बचाव करके मामला ठंडा कर देंगे। यदि वास्तव में भारतीय कम्यूनिस्ट इतने निर्दोष हैं जितना कि डाक्टर साहब ने साबित करने की कोशिश की है तो क्या कारण है कि प्रधान मन्त्री नेहरू जिनकी ये बड़ी प्रशंसा करते हैं उनकी सरकार ने कम से कम ५०० उच्च कोटि के कम्यूनिस्टों को नजरबन्द कर रखा है।

इसके बाद श्रीमन्, मैं कुछ उन बातों पर विचार व्यक्त करना चाहता हूं जो माननीय गोविन्द सहाय जी ने कल कहीं। मैं उन्हें एक बहुत बड़ा विचारक तथा जनतन्त्र के पोषकों में से मानता हूं, किन्तु कल के उनके विचारों को सुन कर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। कल वे मूर्ति-पूजक हो गये। उन्होंने कहा कि राष्ट्र के सिम्बल को तोड़ने की कोशिश नहीं करनी चाहिये, उस पर आक्रमण नहीं करना चाहिये। सिम्बल से उनका तात्पर्य किसी राष्ट्रीय ध्वज से नहीं बल्कि प्रधान मन्त्री नेहरू से था, ऐसा मैं समझता हूं। श्रीमन्, प्रजातन्त्र में जो कोई भी प्रधान मन्त्री के पद पर होगा उसे आलोचनाओं को सुनना पड़ेगा और उसकी आलोचना होगी। मेरी समझ में नहीं आता कि क्या आप उस व्यक्ति की पूजा उसी तरह करना चाहते हैं जिस तरह से रूस में होती है। क्या वही परिस्थिति आप यहां पैदा करना चाहते हैं कि कोई उसके खिलाफ आवाज न उठाये ? आज हमारे देश की जो तौहीन हुई है सारी दुनिया के सामने जो हमें हाथ पसारना पड़ा है, उसके लिये किसकी सरकार जिम्मेदार है ? मैं पूछना चाहता हूं कि कौन वह व्यक्ति था जो असलियत की दुनिया से दूर था ? स्वयं नेहरू जी ने स्वीकार किया है कि वे ऐसी दुनियां में रह रहे थे जिसका वास्तविक दुनियां से कोई सम्बन्ध नहीं था। तो क्या आप इतने से ही संतुष्ट नहीं हो जाते कि राष्ट्र ने आपको क्षमा कर दिया और आपको फिर अवसर दिया। मैं यह स्पष्ट कहना चाहता हूं कि जहां तक देश की सुरक्षा का सम्बन्ध है हम और हमारी पार्टी आपके साथ रहेगी, जितनी कुर्बानी की जरूरत होगी उसके लिये तैयार रहेंगे, किन्तु अगर आप यह चाहते हैं कि आपकी गलतियों की आलोचना करना छोड़ दें हम अपने इस जनतन्त्रीय अधिकार को छोड़ दें, तो ऐसा करने के लिये हम तैयार नहीं हैं। श्रीमन्, यह बार-बार कहा जाता है कि चीन ने हमको धोखा दिया। कौन-सा उसने धोखा दिया ? हमें मालूम था कि उसने लद्दाख में सड़क बनायी है, हमें मालूम था चीन ने तिब्बत पर आक्रमण किया और उस पर अपना अधिकार जमाया। चीन ने भारत को दोषी ठहराया कि तिब्बत की सहायता कर रहा है। उसने हमारे सिपाहियों को कैद किया और हमारी सरहद की चौकियों पर आक्रमण किया और अधिकार किया। उसने अपने नक्शे में हमारी जमीन दिखाई। ये सब क्या धोखे की बातें हैं ? ये सब बातें क्या हमारी सरकार को मालूम नहीं थीं ? इस देश के अनुभवी राजनीतिज्ञों ने जब कहा कि चीन से खतरा सामने है तो उसे प्रधान मन्त्री सुनने के लिये तैयार नहीं हुए। तो जो देखेगा नहीं, सुनेगा नहीं, उसे धोखा नहीं होगा तो क्या होगा ? मेरी प्रार्थना है कि सत्तारूढ़ पार्टी इससे सन्तोष करें कि राष्ट्र ने उनको एक बार क्षमा कर दिया है।

हमारे माननीय गोविन्दसहाय जी ने कहा कि आप १० बूंद अमृत में १ बूंद जहर की क्यों मिला देते हैं। मैं बतलाना चाहता हूं कि १० बूंद अमृत की जो हैं वे राष्ट्र के लिये हैं और जहर की बूंद आपके लिये तो नहीं, लेकिन आपकी गलतियों के लिये जरूर हैं जिससे भविष्य में आप ऐसी गलतियां न करें।

माननीय गोविन्द सहाय जी ने यह भी कहा कि विरोध के लोग समर्थन देते हुए इफ्स और बट्स लगाते हैं। मैं मानता हूं कि यह इफ्स और बट्स का अवसर नहीं है। जब हमारे देश में और घर में आग लगी हुई है तो हम यह मांग करें कि सहायता या समर्थन जब देंगे कि आप

[श्री भानुप्रतापसिंह]

पहले हिसाब दिखला देंगे कि कहां कितना खर्च होगा, यह रवैया उचित नहीं है। लेकिन गोविन्द सहाय जी ने प्रस्ताव रखा कि अगर आप ५ साल के लिये सब बातें मान लें और सरकार को पूर्ण समर्थन दें तो वह इस्तीफा देने के लिये तैयार हैं इसमें कितने इफ्स और बट्स हैं? बहुगुणा जी ने भी यही कहा। मैं मानता हूं कि इस समय शर्तें नहीं होनी चाहियें। मैं इधर वालों से भी कहता हूं यदि इस बिल का विरोध किया गया होता तो सरकार को मन्त्रि-मण्डल घटाना ही पड़ता। आज इस बात की आवश्यकता है कि दोनों पक्ष उदाहरण प्रस्तुत करें। हमको यह जानने की जरूरत नहीं होनी चाहिये कि दूसरे क्या कर रहे हैं। दूसरे गलती करेंगे लेकिन हमें गलती नहीं करनी है बल्कि उदाहरण पेश करना है। तो इफ्स और बट्स की बात दोनों ओर से समाप्त होनी चाहिये। सरकार जानती है कि जनमत इतने बड़े मन्त्रि-मण्डल के विरुद्ध है तो फिर उसे बिना शर्त इसे कम करना चाहिये।

मैं इस विधेयक का विशेष महत्व मानता हूं। सम्भव है कि लोग पूछें कि आपने ५० दिन पूर्व इस सदन में जोत-कर विधेयक का इतना जोरदार विरोध किया था, तो आज क्या बात है कि आज उसका इतना समर्थन कर रहे हैं। श्रीमन्, मेरी पार्टी की नीति नहीं बदली है। सिद्धांत अब भी यही है कि किसानों पर मालगुजारी नहीं लगनी चाहिये केवल आय-कर लग सकता है। जिस दिन अवसर आवेगा स्वतन्त्र पार्टी अपने इस वचन को पूरा करेगी। किसान इस स्थिति में नहीं है कि वह इस बोझ को बर्दाश्त कर सके। उसकी पैदा की हुई चीजों का मूल्य गिर रहा है और उसकी जरूरत की चीजों के दाम बढ़ रहे हैं। लेकिन हमें यह भूल जाना चाहिये कि लड़ाई कोई आराम और सुख की चीज है। किसानों को तकलीफ होगी। सम्भव है उन्हें ८ छटांक की जगह ७ १/२ छटांक ही खाने को मिले या १२ गज कपड़े की जगह १० गज ही मिले लेकिन लड़ाई जीतने के लिये बड़े से बड़े त्याग और बलिदान की आवश्यकता है और हमें किसानों को उसे करने के लिये प्रेरित करना चाहिये।

यह भी कहा गया कि बड़े या मालदार आदमियों ने कुछ नहीं दिया। मैं इसे नहीं मानता हूं। दरभंगा के महाराजा ने अभी १५ मन सोना दिया है जिसका मूल्य ५० लाख रुपये होता है। लेकिन जैसा मैंने पहले कहा है यह ऐसा अवसर नहीं है कि हम हिसाब लगावें कि किस वर्ग ने कितना दिया और किसने नहीं दिया। इस वक्त तो जरूरत इस बात की है कि जिससे जितना हो सकता है वह दे। जब घर में आग लगती है, तो यह हिसाब नहीं लगाया जा सकता है कि कौन कितनी बाल्टियां पानी आग बुझाने के लिये डाल रहा है। मुझे गर्व होगा, किसानों को गर्व होगा, अगर उन्होंने सुरक्षा कार्य के लिये अपनी हैसियत से और अनुपात से अधिक योगदान दिया। आज की बदली हुई परिस्थिति में मैं इस बिल का समर्थन करता हूं और देश के लिये और किसानों के लिये मैं विशेषकर इसे हितकर समझता हूं। जो लोग किसानों के बड़े हमदर्द बनकर इसका विरोध कर रहे हैं उनसे मैं पूछता हूं कि यदि चीन या उसके साथी हमारे देश में प्रभुता प्राप्त कर लेते हैं तो किसानों की क्या दशा होगी।

हमारा समर्थन किसी प्रकार से सीमित या संकुचित नहीं है। हम हर प्रकार से सुरक्षा कोष के लिये सहायता करने के लिये तैयार हैं। मैं कोई शर्त नहीं लगाता हूं लेकिन फिर भी सरकार ने कुछ वायदे किये हैं। मैं आशा करता हूं कि राजस्व मन्त्री जब जवाब देंगे तो वह इन बातों को स्पष्ट करेंगे। पहली बात तो यह है कि जो रुपया जमा होगा वह केवल सुरक्षा के कामों में ही लगाया जायगा। मैं यह मानने के लिये तैयार हूं कि कृषि उत्पादन बढ़ाना, सड़क बनाना इत्यादि भी सुरक्षा के काम हैं। लेकिन यदि सरकार अपना कोई खयाली पुलाव पकाना चाहती है ऐसी योजनाओं के लिये व्यय करती है जिनका सुरक्षा से कोई सम्बन्ध नहीं है तो हमें अफसोस होगा कि हमको धोखा हुआ, और हमने इस बिल का समर्थन किया। राजस्व मन्त्री जी यह आश्वासन भी दें कि यह लेवी केवल इसी साल के लिये है।

माल मंत्री (श्री हुकुमसिंह विसेन)--बिल्कुल हमने कह दिया है।

श्री भानुप्रतापसिंह—धन्यवाद, किफायतशारी को आप अपनावें। हमारे वित्त मन्त्री जी ने कहा कि वे २२ या २५ करोड़ बचायेंगे मैं चाहता हूं कि आप अपनी किफायतशारी का प्रचार जन-साधारण में भी करें। जब आप यहां के बैठने वालों को भी सहमत नहीं कर सके तो जनता को कैसे कर सकेंगे? आवश्यकता इस बात की है कि आप अच्छे काम करें, उन्हें साबित करें और उनका प्रचार भी करें।

अन्य वर्गों पर आपने टैक्स लगाने का वायदा किया है और वह आप अगले बजट के समय अवश्य पूरा करें। चौथी बात यह है कि इस टैक्स के लगने के बाद कम से कम वह तरीका चन्दा वसूल करने का जो किसी-किसी जिले में प्रचलित हो गया है कि गांव वालों से कहा जाता है कि उनको एक एकड़ पर या एक बैल पर इतना धन देना होगा, यह बन्द होना चाहिये। इस टैक्स को हम किसानों की तरफ से केवल एक संगठित चन्दा समझते हैं इसके बाद अगर किसी दूसरे प्रकार का चन्दा वसूल किया जाता है तो मैं यह स्पष्ट कह देना चाहता हूं कि हम उसका विरोध करेंगे और अगर सख्ती होगी तो उसका हम एक्सपोजर करेंगे, ऐसी स्थिति में मैं समझता हूं कि हमें "इफ ऐंड बट" को छोड़कर, जो कुछ भी हो सकता है, राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में जो भी योग दे सकते हैं, दें।

श्री जगदीशशरण अग्रवाल एडवोकट (जिला बरेली)—आदरणीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं उन लोगों में से हूं जो यह समझते हैं कि देश भक्ति और राष्ट्र भक्ति का सारा ठेका इधर के बैठने वाले लोगों ने ही नहीं लिया है। आज राष्ट्र के सामने जो यह संकट आया हुआ है उससे सभी पार्टियों के हृदय प्रभावित हैं और सभी लोग यह समझते हैं कि आक्रान्ता के ऊपर किसी न किसी प्रकार से विजय प्राप्त की जाय। मान्यवर, मैं यह कहने के लिये मजबूर हूं कि अब तक जो भी भाषण हुये हैं उनको सुन कर मुझे निराशा ही नहीं हुई वरन अत्यन्त ही दुख हुआ जैसा कि कदाचित् और मौकों पर न हुआ होगा। एक नयी परिपाटी यहां पड़ती जा रही है कि यदि किसी की कोई बात अप्रिय होती है तो वह सुनी नहीं जाती है और वहीं उसका जवाब देने का प्रयत्न किया जाता है। मैं आपके द्वारा माननीय सदस्यों से अपील करना चाहता हूं कि वे इस परिपाटी को समाप्त करें। चीन का हमारे देश पर आक्रमण करने का ध्येय केवल यही नहीं है कि वह हमारी कुछ भूमि को हड़पना चाहता हो वरन् वह हमारी विचार-धाराओं पर भी हमला करना चाहता है। हमारे यहां जो प्रजातन्त्र है उसको भी वह नहीं चाहता। मुझे खतरा लगता है कि हम स्वयं अपने आदर्शों से लोगों की आस्था कम करने में जाने या अनजाने सहयोग दे रहे हैं।

मैंने उग्रसेन जी के प्रस्ताव को ध्यानपूर्वक पढ़ा। माननीय उग्रसेन जी वैसे तो दावा करते हैं कि उन्हें सबसे ज्यादा संकटकालीन स्थिति की फिक्र है और देश को उन्नति के मार्ग पर ले जाया जाय लेकिन उन दोनों दावों को मैंने उस प्रस्ताव के प्रकाश में तौलने की कोशिश की तो मैं हैरान हो गया। उनका प्रस्ताव है कि इस विधेयक को ६ महीने के लिये जनमत के लिये घुमाया जाय। प्रजातन्त्र में ही ऐसी कल्पना की जा सकती है कि कोई आदमी ऐसा प्रस्ताव करने का साहस करे और साथ ही देशभक्ति का दावा भी करे। युद्धकालीन अवस्था हो, सीमान्त पर फौज खड़ी हो और रुपया इकट्ठा करने वाला विधेयक हमारे सामने आये जिससे हम फौज की मदद कर सकें तो कहा जाय कि इसको ६ महीने के लिये घुमा दिया जाय। माननीय कमलासिंह जी ने कहा कि वे इस प्रस्ताव का समर्थन करने के लिये तैयार हैं यदि सरकार मितव्ययता करने को तैयार हो। इसमें दो रायें नहीं हो सकतीं। इस बारे में सरकार ड्रास्टिक मेजर्स ले रही है। माननीय नेता विरोधी दल के भाषण को सुनकर मैं चकित हुआ। कम से कम उनको तो जानकारी है कि आज सरकार कैसे एकोनामिक मेजर्स ले रही है। मैं भी एकोनामिक कमेटी का सदस्य हूं और वैधानिक परम्परा के नाते मैं उसकी आन्तरिक बातों को तो नहीं कह सकता, लेकिन इतना तो कह सकता हूं कि आज सरकार और इकोनामी कमेटी रात दिन इस प्रयत्न में लगी है कि और यहां बड़ी-बड़ी ड्रास्टिक इकोनामी की गयी हैं और ऐसे अवसर भी आये हैं कि इधर के बैठने वाले और उधर के बैठने वाले सदस्यों को मजबूर होकर यह कहना पड़ा है कि ये कट बड़े ड्रा-

[श्री जगदीशशरण अग्रवाल एडवोकेट]

स्टिक हैं और इस संकटकालीन अवस्था में भी इतना ज्यादा कट करने की जरूरत नहीं है। तो इस बात का प्रयत्न हो रहा है और प्लान में और नान-प्लान में काफी बड़ा कट करने की योजना सरकार के विचाराधीन है। सबकी जानकारी और सहमति से उस पर निश्चय लिया जा चुका है। २०–२५ करोड़ रुपये की बचत अगर प्लान में की जा सके एक वर्ष में और नान-प्लान में ही ४–५ करोड़ की बचत की जा सके तो यह ठोस बचत है, बड़ी बचत है। इस बचत की जानकारी सबको पहले से है और मैं तो आशा करता था कि माननीय नेता विरोधी दल का वह आक्षेप भी दूर हो जाता है जो उन्होंने पत्र द्वारा इस सदन में रखा था कि अगर सरकार इस तरह का इकोनामिक मेजर लेगी तभी हम इसका समर्थन करने को तैयार रहेंगे। अब तो उनकी जानकारी में यह हो चुका है कि सरकार उसकी ओर प्रयत्नशील है और सरकार की तरफ से यह खुली हुई दावत है कि अगर और भी कोई इकोनामिक मेजर लेने की बात सामने आयेगी तो हम उसे भी मानने के लिये तैयार हैं।

माननीय कमला सिंह यादव ने यहां भाषण देते हुये चार-पांच बातों की तरफ ध्यान दिलाया। एक तो उन्होंने फैमिली प्लानिंग स्कीम को स्क्रैप करने की बात कही, दूसरे एजूकेशन के खर्च में कुछ कमी करने की बात कही, तीसरी बात उन्होंने इलाहाबाद में जो आफिसर्स ट्रेनिंग स्कूल है उसको बन्द करने की बात कही, चौथी और पांचवीं बात उहोंने पी० डब्लू० डी० के रोड्स व ब्रिज के खर्च में कुछ कमी करने की बात कही। पांचवीं बात को मैं पूर्णतया मानने के लिये तैयार नहीं हूं, इसलिये कि संकटकालीन अवस्था में जहां धन को जोड़ना चाहिये वहां पर यह भी आवश्यक है कि कुछ रोड्स व ब्रिज भी जो स्ट्रेटेजिक प्वाइंट्स पर होते हैं उनको बनाना भी पड़ता है। एक तरफ जहां कट करना पड़ता है वहां दूसरी तरफ खर्च भी करना पड़ता है। आपकी आज्ञा से मैं इन ४–५ बातों के अलावा उनमें २०–२५ मदें और जोड़ सकता हूं जहां इकोनामी की जा सकती है।

सरकार द्वारा करीब-करीब यह निश्चय लिया जा चुका है कि किसी विभाग की कोई भी नयी बिल्डिंग जो उत्तर प्रदेश में बनने वाली थी लेकिन अभी शुरू नहीं हुई है, वह नहीं बनने जा रही है। इससे करोड़ों रुपये की बचत होगी। जब तमाम मेटिरियल वार एफर्ट के लिये जरूरी है तथा सुरक्षा के लिये धन बचाने की भी जरूरत है तो इस तरह का ऐक्शन लेना जरूरी था जो सरकार द्वारा लिया गया है। आप जरा देखें कि यह जो अगर मगर की शर्त है इसके पीछे भावना क्या है। कहा गया है कि सिम्बल की पूजा करना मूर्तिपूजा की तरह है। मैं भी इस बात से सहमत हूं कि जहां तक सिद्धान्त का सम्बन्ध है कि राष्ट्र किसी व्यक्ति से, किसी बड़े से बड़े नेता से भी बड़ा है, ठीक है। लेकिन मैं प्रार्थना करता हूं कि माननीय सदस्य आवेश व रोष से हट कर शांति से विचार करने की कृपा करें और देखें कि इस अवस्था में हमारा कर्तव्य क्या है। जब लड़ाई मोर्चे पर छिड़ी हो उस समय सेना जो पीछे होती है उसका कर्तव्य है कि वह अपने कमांडर की आज्ञा का पालन करे।...

श्री नरसिंहनारायण पांडेय—श्रीमन्, सदन में कोरम नहीं है, ऐसी हालत में सदन की कार्यवाही नहीं होनी चाहिये।

श्री उपाध्यक्ष—अगर आप इस पर इंसिस्ट करेंगे तो फिर मुझे कोई कार्यवाही करनी ही पड़ेगी, लेकिन लंच में कोरम का होना आवश्यक नहीं है।

श्री रामसुन्दर पांडेय—श्रीमन्, यह पहले तय हो चुका है कि लंच में कोरम का होना आवश्यक नहीं है। एक बजे से दो बजे तक कोरम का सवाल नहीं उठता है वही पुरानी परिपाटी आज के लिये रखी जाय।

श्री उपाध्यक्ष—वही मैंने कहा था।

श्री जगदीशशरण अग्रवाल एडवोकेट—यह भी दुर्भाग्य की बात है कि जिस समय ऐसे विषय पर विवाद होता हो कोरम की भी.....

मैं यह निवेदन कर रहा था कि जब फौजें मोर्चे पर खड़ी होती हैं तो एक कमांडर चुनना पड़ता है, कोई सिम्बल की पूजा का इसमें सवाल नहीं है, हमें आलोचना करने का अधिकार है, लेकिन आलोचना का समय होता है। अगर सरकार गलती करती है तो उसकी जिम्मेदारी उसके ऊपर है और सन् १९६७ में उसको भी बदलने का समय आयेगा, उस वक्त आप जनता से कह सकेंगे कि एक युद्ध छिड़ा था, चीन का आक्रमण हुआ था और उस समय सरकार ने अपना कर्तव्य पूरा नहीं किया और इस वास्ते उसको निकालना चाहिये। लेकिन जब इस वक्त हमारी फौजें लड़ाई के मैदान में खड़ी हैं ऐसे समय में आलोचना करना उचित नहीं है और यह कहना कि नेहरू जी उसी शाख को काट रहे हैं जिस पर वह बैठे हैं, इस तरह तरह से हमारा मारल नहीं बन सकता और क्या इस तरह से हमारी प्रतिष्ठा दूसरे देशों में हो सकती है? आज संकटकालीन समय में हमारे देश का मोरेल ऊंचा है। ऐसे अवसर पर हमें अपने एक नेता के आदेश को मानना होगा और उसमें अपनी सारी आस्था को निहित करना होगा और उसी दशा में हम लड़ाई को जीत सकते हैं। हमारे रामायण राय जी हमारे सबसे जोशीले सदस्य और नवयुवक हैं उन्होंने बड़े जोश से भरा भाषण दिया लेकिन अपना 'सकिश्ता जिन्दा' पढ़ते हैं यह कुछ उल्टी बात मालूम होती है, नेहरू जी के लिये जहर के प्याले की बात जिस किताब में लिखी है वह उसको पढ़ना उचित समझते हैं, उनकी जबान से यह शोभा देता है यह तो वह जानें यह उनके सोचने की बात है। अगर हम आज इतना भी न सोचें तो वास्तव में हमारे लिये चीन के आक्रमण का खतरा बड़ा व्यापक हो जाता है। आपसी समझौते वाली तमाम बातों का जिक्र मैं नहीं करता, लेकिन रामायण राय जी ने खामख्वाह एक ऐसी चीज सामने रख दी इसलिये मुझे इसका जिक्र करना पड़ता है। यह मसला सारे देश का है और ऐसे संकट के समय अगर मशविरे के बाद कोई चीज लाई जाती है और बाद में अगर उस कमिटमेंट से अलग हो जायं तो इससे देश का कल्याण नहीं हो सकता। आज तो सारा राष्ट्र ही सेना है हर एक को अपने को सेना मानना होगा तभी सारा राष्ट्र आगे बढ़ सकता है तब फिर हमें एक सेनापति भी चुनना होगा, उसकी आज्ञा को मानना होगा और सिम्बल की इज्जत भी उस हद तक करना हमारा फर्ज हो जाता है।

एक बात का और जिक्र करूंगा, कहा गया कि अमीरों पर चन्दे का बोझ पड़ना चाहिये। हमारा दुर्भाग्य है कि आज जिनमें ज्यादा शक्ति है, सामर्थ्य है उनसे लड़ाई के लिये उतना सहयोग नहीं मिला है जितना मिलना चाहिये, बड़े दुख और लज्जा की बात है और अगर उधर से उचित सहयोग नहीं मिलता है तो हमारा कर्तव्य हो जाता है कि हम उस कर्तव्य की पूर्ति करें, हमें ऐसे मेजर्स लेने पड़ेंगे जिनसे उनसे भी धन प्राप्त हो। आज मनोबल को बढ़ाने के लिये देश में जागृति पैदा करने की जरूरत है, जनता के सहयोग की जरूरत है। किसानों पर लेवी, जहां तक देश की रक्षा का सम्बन्ध है हम लगायें लेकिन इसके माने यह नहीं हैं कि जिन लोगों में उनसे ज्यादा शक्ति है वह वंचित रह जायं। मैं मानता हूं इसका पूरा प्रयत्न किया जाय कि उन वर्गों से काफी मात्रा में धन आये। एक जगह सोना १५ मन दे देने से सारे देश की समस्या हल नहीं होती है। आज ४३–४४ करोड़ आदमियों में ४० हजार ग्राम सोना आये यह लज्जा की बात है। एक बात और कहना चाहता हूं मैंने इस बिल को सुबह पढ़ा और एक बात मुझे खली जिसके लिये मैं मन्त्री जी से कहना चाहता हूं। आज सारे देश के प्रदेश इस बात की व्यवस्था कर रहे हैं कि जो सैनिक लड़ाई में लड़ रहे हैं उनके लिये जमीनों का इन्तजाम करें ताकि वहां से जब वे लौटें या उनके परिवार को क्षति उठानी पड़े तो उनको जमीन मिल जाय लेकिन आपने इसमें सैनिक या उनके परिवार के लिये कोई छूट नहीं रखी है। मैं चाहता हूं जो सैनिक अपना जीवन बलिदान कर रहे हैं उससे या उनके बेटों से कहें तुम इस लड़ाई के लिये २५ फीसदी लेवी दो यह अनुचित है और इससे कोई

[श्री जगदीशशरण अग्रवाल एडवोकेट]

उत्साह नहीं हो सकता। मैं मन्त्री जी से कहूंगा कि वे चाहे सरकारी संशोधन लायें या जिस तरह से भी मुनासिब समझें इतना सा अपवाद अवश्य कर दें कि जो सैनिक आज लड़ाई में लड़ रहे हैं उन पर या उनके परिवार पर लैंड लेवी नहीं लगेगी।

अन्त में एक निवेदन और करना चाहता हूं कि इस बिल पर जिस तरह का वातावरण पैदा हुआ है कृपया इस बात का ध्यान रखें उसकी प्रतिक्रिया सारे प्रदेश में होती है। बड़ी खुशी का मौका था सारे प्रदेश में हम एक आवाज से, एक लक्ष्य की पूर्ति में लगे हुये थे। लेकिन जो वादविवाद यहां हुआ है उसका असर बाहर भी पड़ता है। परन्तु अब तक जो हुआ सो हुआ अब तो ऐसा वातावरण पैदा करें जिससे हमारे प्रदेश में जो स्वस्थ्य वातावरण पैदा हुआ है, जिस लक्ष्य की पूर्ति की तरफ हम तेजी से बढ़ते जा रहे हैं उसमें यहां का पैदा किया हुआ वातावरण सहायक हो।

*श्री बिपिनबिहारी तिवारी (जिला सीतापुर)—श्रीमन्, मुझे बड़ा आश्चर्य है आज जब हम इस सदन में इस बिल का विरोध करते हैं तो कांग्रेस दल के लोग उसका स्वागत करने के लिये तैयार नहीं हैं। हम जब यहां से उठे थे और जब चीन का संकट आया था तो सबसे पहले विरोधी दल की ओर से इस बात का प्रयास किया गया था कि असेम्बली का सारा बिजनेस समाप्त करके शीघ्र हम सब अपने क्षेत्रों में जायं और वहां पर एक मनोबल तैयार करें, जनता को जागृत करें और हर प्रकार का सहयोग सब मिल करके इस संकट के लिये उपलब्ध करें। यह विरोधी दल का इनीशियेटिव था और उसका परिणाम हुआ। विधान सभा का सारा काम समाप्त हो गया और सब एकता के स्वर में, एक सूत्र में बंधकर यहां से गये और उम्मीद थी इस इनीशियेटिव में कांग्रेस के लोग सहयोग देंगे और वह भी इनीशियेटिव लेंगे लेकिन एक भी उदाहरण कांग्रेस की तरफ से ऐसा नहीं प्रस्तुत हुआ जो यह सिद्ध कर सके कि उन्होंने विरोधी दल के सहयोग की कोई कामना की है। एक महीने के अन्दर हमने कांग्रेस की गतिविधियां देखीं। सरकार के आदेश जिलाधीशों के पास गये तो हमको शंका हो गई कि वास्तव में वह हमारा सहयोग लेना नहीं चाहती है और इसी कारण आज इस विधान सभा में यह वातावरण दिखाई पड़ता है। जब हम विरोध करते हैं तो इसका अर्थ यह नहीं है कि हम देशभक्त नहीं हैं, हमको चीनी संकट का ज्ञान नहीं है। इस सदन में माननीय हरगोविन्द सिंह ने यह कहा कि हम देशभक्त नहीं हैं। गोविन्द सहाय जी ने भी कहा कि विरोधी दल की तरफ से कोई सहयोग का वातावरण पैदा नहीं हो रहा है। ये सारी बातें तथ्य से परे हैं और इन पर हमको गम्भीरतापूर्वक विचार करना पड़ेगा कि आखिर यह वातावरण क्यों पैदा हो रहा है।

इसके तीन प्रमुख कारण हैं। हरगोविन्द सिंह जी ने कहा कि देश के अन्दर अमेरिका और इंग्लैंड के लोगों ने तुरन्त सहायता भेजी और १८ घंटे के अन्दर सारी सहायता पहुंचाने का उन्होंने प्रयास किया और अपने शस्त्र यहां भेज दिये, लेकिन यहां पर श्री मेनन को हटाने का प्रश्न पैदा हुआ तो १८ दिन के अन्दर यह निर्णय नहीं हो सका कि हमको श्री मेनन को हटाना है या नहीं। लिहाजा आप अपना उदाहरण देखिये।

पहला कारण यह है कि आपने सुरक्षा कौंसिल बनाई। उसमें सरकार ने विरोधी दल के सदस्यों को अपने मन से सदस्य घोषित कर दिया। आपको विरोधी दल के लोगों को सुरक्षा समितियों में लेना था तो पार्टी के अध्यक्षों को सचेत किया जाता और वे अपनी पार्टियों से जिन्हें उचित समझते उनको आपकी सुरक्षा समितियों में भेज देते। यह उनका काम था, आपका काम नहीं था।

दूसरा कारण यह है कि कांग्रेस कार्य समिति ने नवम्बर के महीने में एक प्रस्ताव पास किया और उसका सर्कुलर प्रदेश की सभी शाखाओं में भेज दिया गया। "आज" में एक

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

कार्टून भी छपा जिसमें इस बात का संकेत था कि १९६७ के चुनाव में कांग्रेस फिसड्डी न कही जाय इसलिये सुरक्षा कार्यों में तेजी से काम करो। चुनाव का भय कांग्रेस को दिखायी दे रहा है और प्रादेशिक कार्य समिति का यह सर्कुलर उसका सबूत है। उसका परिणाम यह हुआ कि कांग्रेस के लोगों ने सर्वदलीय समितियों का सहयोग समाप्त करके जनता के अन्दर यह छाप बिठाने का प्रयास किया कि सुरक्षा का जितना कार्य हो रहा है वह कांग्रेस का कार्य है। अभी मेरे क्षेत्र लहरपुर में २९ नवम्बर, ६२ को माननीय बनारसीदास गये। मुझ को उनके प्रोग्राम की सूचना मिली। मैंने जिलाधीश से कहा कि चूंकि मेरे क्षेत्र में श्री बनारसीदास जा रहे हैं और मुझे सुरक्षा के कार्यक्रम में सहयोग देना है, इसलिये उनका कार्यक्रम मैं दो जगहों पर चाहता हूं। जिलाधीश ने उसकी स्वीकृति दी, लेकिन जब वह प्रोग्राम मेरे पास आया तो उस स्थान का नहीं था। मैंने एक हजार एक सौ बासठ रुपये इकट्ठा करवाये। जब हमारे कार्यकर्ताओं को पता चला कि प्रोग्राम कैंसिल हो गया तो मुझ को बड़ा आश्चर्य हुआ। मैंने कहा कि प्रोग्राम कैंसिल नहीं हो सकता। मैंने कहा कि वह मेरे क्षेत्र में आ रहे हैं, मैं उनकी मोटर रोककर कार्यक्रम करवाऊंगा। उनके स्वागत का मैंने प्रबन्ध करवा दिया। मैंने उनकी मोटर रोकी और दो स्थानों पर कार्यक्रम लगाया, लेकिन इसके पीछे मतलब क्या था? हमारे मंडल लहरपुर के कांग्रेसियों ने इस बात की कोशिश की कि यह योजना वहां न हों, यह कार्यक्रम न रखा जाय। कहीं ऐसा न हो कि जनसंघ का नाम हो जाय। इस उद्देश्य से वह इस नीचे स्तर पर उतर आये।

श्री हुकुमसिंह विसेन---हमारे दोस्त धीरे से बोलें। उनकी आवाज भर्रा जाती है। साफ-साफ सुनाई नहीं दे रहा है।

श्री बिपिनबिहारी तिवारी--मैं कह रहा था कि उन्होंने इस बात की ओर ले जाना चाहा। एस० डी० ओ०, सीतापुर, ब्लाक डेवलपमेंट आफिसर लहरपुर दोनों आदमी वहां के कार्यकर्ताओं के पास गये और उनसे कहा कि आपको इस योजना में शरीक नहीं होना है। श्री बनारसीदास यहां नहीं ठहरेंगे। आपको लहरपुर जाना है। मैं बनारसीदासजी के साथ-साथ रहा, लेकिन मुझ को बड़ी प्रसन्नता होती अगर वह यह कहते कि अच्छा विरोधी दल का एक नेता यहां पर उपस्थित है, सुरक्षा का सवाल है, इनको भी बोलने का मौका दिया जाय जिससे जनता के अन्दर यह भावना उत्पन्न हो कि यह सार्वजनिक, सर्वदलीय कार्य है, लेकिन यह प्रयास नहीं किया गया।

तीसरी बात, जब केन्द्र में सरकार की उन गलत नीतियों की आलोचना शुरू हुई और पं० जवाहरलाल नेहरू को उत्तरदायी बनाया गया तो अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की तरफ से यह सर्कुलर हुआ कि जो कोई पं० जवाहरलाल नेहरू की आलोचना करेगा वह देश द्रोही है। ये ऐसी बातें हुई, जिससे, देश में जो एक भाव जाग्रत हुआ था, उस पर ठेस पहुंचनी शुरू हो गई और यह सारी बातें आपको सोचना होगा। हम आपकी आलोचना इसलिये नहीं करते कि हम देश को बेच देना चाहते हैं। आपने इस बात को स्वीकार किया कि १५ साल मैंने, आपने गलतियां कीं, उन्हीं का यह परिणाम है कि चीन का आक्रमण हुआ। आप अगर उन गलतियों को फिर दोहरायेंगे तो अवश्य आलोचना की जायगी। मैं समाचार-पत्रों का आभारी हूं और प्रेस का यह कर्तव्य भी है कि जब कोई राज्य गलत नीतियों का अनुसरण करे तो अवश्य संकेत करें। इसलिये मैं नेशनल हेराल्ड और पायनियर का सम्पादकीय सुनाना चाहता हूं

"Must we accept to our humiliation the sneering appraisal of our critics that teamwork is something foreign to the Indian character ?"

"This is no private war that is being waged only by a certain section and for a limited purpose. This is a people's war."

आज कांग्रेस यह समझती है कि यह केवल कांग्रेस की ही लड़ाई है और कांग्रेस की ही जिम्मेदारी है

[श्री बिपिनबिहारी तिवारी]

जनता का इससे कोई सम्बन्ध नहीं है, यह बात मूलतः गलत है । यह सारे देश का प्रश्न है। हम समझते है यहां के ४० करोड़ नागरिकों को प्रभावित करने वाली यह समस्या है। इसलिए हम आपके सामने सुझाव रख रहे हैं, उनको आपको मानना चाहिए । हमारा इस लगान के सम्बन्ध में सुझाव है । हम इस लगान का विरोध क्यों करते हैं ? पहली बात तो यह है कि इस समय यह बिल्कुल असामयिक है । असामयिक इसलिए है कि जब इस देश के अन्दर एक जोश, उत्साह और दान देने की लहर उत्पन्न हुई तो कोई इसका औचित्य नहीं था कि आप इस समय इस बिल को लाते और अनावश्यक यह इसलिए है कि आज अभी तक हमारी सुरक्षा की क्या योजना है, क्या हमारी स्कीम है, उसको हम ला नहीं सके और चाहते हैं कि लगान का कर लगाकर के पैसा इकट्ठा कर लें ।

दूसरी बात अगर हम यह मान लें कि इस लगान से पांच करोड़ रुपया इकट्ठा भी हो गया तो पांच करोड़ रुपया से सुरक्षा का कार्य चल नहीं सकता । आपको और भी पैसा तो चाहिए । तो जब हम यह आपसे मांग करते हैं कि आज किसान की ऐसी स्थिति नहीं है कि वह पैसा दे, और किसान के अन्दर स्वतः एक जोश आया है, एक उत्साह पैदा हुआ है और वह अधिक त्याग करने के लिए तैयार है तो उसके उत्साह को भंग करने के लिए आप इस काले कानून को क्यों ला रहे हैं ? आपको चाहिए था कि आप इस समय इसको लाने की जल्दी न करते ।

श्री उपाध्यक्ष---आपका समय समाप्त हो गया ।

श्री बिपिनबिहारी तिवारी---पांच मिनट आपने और कहे थे । पन्द्रह मिनट दे दीजिए ।

श्री उपाध्यक्ष---१३ मिनट हो चुके । दो मिनट और ले लीजिए । (व्यवधान) देखिए न, और लोग एतराज करते हैं । दो मिनट उनको बढ़ा दिये, दो मिनट आपको बढ़ा दिये । अब दो मिनट में आप खत्म कर दें ।

श्री बिपिनबिहारी तिवारी---मैं यह कह रहा था कि आज कुछ शंकायें उत्पन्न हो गई हैं कि जो यह योजनायें टैक्सों की बनाई गई हैं उन योजनाओं का रेफ्लेक्शन यह होता है कि सुरक्षा कार्य तो यह हो नहीं रहा है, केवल पंचवर्षीय योजनाओं की पूर्ती के लिए यह एक योजना बनाई गई है और जल्दी से चाहते हैं कि यह चीज सदन से पास करा लें । अगर रुपये की आवश्यकता है तो भारतीय जनसंघ ने स्पष्ट रूप से लिखा था आपको, आखिर आप बजट पास करवाते हैं, पंचवर्षीय योजनायें पास करवाते हैं, तो उसी तरह से आप एक सुरक्षा बजट क्यों नहीं रखते हैं कि हमको इतने रुपये की आवश्यकता है .....

श्री उपाध्यक्ष---यह तो सब बातें पहले हो चुकी हैं ।

श्री बिपिनबिहारी तिवारी---आप बीच में टोक देते हैं, नतीजा यह होता है कि टाइम और लगता है । जरा सुन तो लीजिए ।

श्री उपाध्यक्ष---सुन तो लें, लेकिन यह सब बातें कही जा चुकी हैं और आपका टाइम भी एक्सीड हो गया ।

श्री बिपिनबिहारी तिवारी---दूसरी बात मुझे यह कहनी है कि आप आलोचनाओं से परेशान हैं कि आपकी आलोचना क्यों होती है । तो अगर आलोचना आप नहीं चाहते थे तो एक नेशनल गवर्नमेंट आप बनाते या सर्वदलीय एक सलाहकार समिति बनाते तो कोई आलोचना आपकी नहीं होती, लेकिन अगर एक पार्टी का शासन आप आज मानकर चलते हैं और जनतंत्र की रक्षा करना चाहते हैं तो यह आवश्यक है कि आपको आलोचना सुननी पड़ेगी और उसके लिए जो नेशनल हेराल्ड में निकला है वह मैं आपको सुना देना चाहता हूं । इंग्लैंड के अन्दर,

श्री उपाध्यक्ष---आपका समय समाप्त हो गया ।

श्री बिपिनबिहारी तिवारी---बस सिर्फ एक सेंटेंस है---

"The Military position was so serious at times that Churchill had to face no-confidence motions, though from a slender opposition, but the country and Parliament stood solidly by him".

यहां तक आपसे कहा जा सकता है । आपसे प्रश्न पूछे जायेंगे । आपकी नीतियों की आलोचना की जायगी । अविश्वास का प्रस्ताव तक जनतंत्र के लिए लाया जा सकता है, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि हम देश को चीन के हाथ बेच देंगे जैसा कि कम्युनिस्ट लोग चाहते हैं और जिसके लिए कि वह आपकी चापलूसी में लगे हुए हैं, । जनसंघ की तरफ से ऐसा होने वाला नहीं है । हम देश के लिए मर मिटने के लिए तैयार हैं और हर प्रकार से देश की सेवा करने के लिए तैयार हैं ।

*श्री हरीसिंह (जिला मेरठ)---आदरणीय उपाध्यक्ष महोदय, आज मैंने सदन में भिन्न-भिन्न पार्टियों के आदरणीय सदस्यों के विचार सुने और इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि मैं भी कुछ कहूं । मेरी आवाज बैठी हुई है लेकिन फिर भी मुझे बाध्य होना पड़ा । इस बिल का विरोधी पार्टियों से कोई सम्बन्ध नहीं है । वह यह समझते हैं कि किसी प्रकार से भी सरकार की आलोचना करें । इससे उनका ताल्लुक है और यही उनकी मन्शा है । इसमें सरकार को कभी बुरा नहीं मानना चाहिये और न सरकार ने कभी बुरा माना है क्योंकि विरोधी दल के सदस्य इसीलिये चुनकर आते हैं । वे अपनी पार्टी का विचार रखते हैं । विरोधी दल को ऐसे विचार रखना चाहिये जो जनहित में हों और देश हित में हों ताकि जनता उन विचारों पर मनन करके विचार करे और समझे कि इनके विचार कुछ अच्छे हैं ।

एक माननीय सदस्य ने अभी कहा है कि जब यह सदन स्थापित हुआ था तब यहां पर सब की राय एक थी और हम यहां पर यह निश्चय करके उठे थे कि अपनी देशभूमि से दुश्मन को निकाल फेकेंगे, लेकिन देखने में आया कि जो यहां पर विचारधारा थी आज वही माननीय सदस्य अपनी विचारधारा को बदले हुये हैं । कोई कहता है कि रक्षा समिति में हमको नहीं लिया और कोई दूसरे चक्कर की बात करता है । इनको देश की बातों से मतलब नहीं है । वही सरमायेदारी को कायम करने के चक्कर में पड़े हुये हैं । जो सच्चे कार्यकर्त्ता हैं वे किसी पार्टी की बात नहीं सोचते । वे देश के हित की बात सोचते हैं । वे किसान और मजदूरों से कहते हैं कि देश के लिये पैसा दो । मैं माननीय सदस्य से पूछता हूं कि देश के लिये कितना पैसा आपने इकट्ठा किया ? आपने क्या कोई पैसा दिया ? वैसे सबकी भावना एक है और मकसद भी एक है लेकिन फिर भी कहते हैं कि मिनिस्ट्री नहीं रहनी चाहिये । रोजाना आप विरोधीदल के सदस्य तनख्वाह और भत्ते की बात करते हैं कि उनको छोड़ देना चाहिये । मैं १९५२ से इसको सुनता आ रहा हूं । अब १९६२ में भी यही बात सुन रहा हूं लेकिन विरोधी दल के भाइयों ने कितने भत्ते छोड़े । हम तो बराबर कहते हैं कि हम लेंगे । हमने यह भी कहा कि पे बढ़नी चाहिये । लेकिन हमारी आड़ में आप भी शिकार खेलना चाहते हैं । आपके कहने का यही उद्देश्य है । आप भी गांधी जी को मानते हैं और हम भी मानते हैं । तो उनकी बातों पर आपको ध्यान रखना चाहिये । गांधी जी जो कहते थे वही करते थे और उसको ही कार्यरूप में परिणत करते थे और उसी को जनता के समक्ष रखते थे । यदि आप वाकई में कहते हैं कि तनख्वाह और भत्ता नहीं लेना चाहिये तो उसको छोड़ दीजिये । हमने कभी नहीं कहा । आप जनता को बरगलाने की बात करते हैं । यहां पर सदन में चिल्लाते हैं और झूठ बोलते हैं ।

श्री मैनेजरसिंह---माननीय सदस्य ने "झूठ" शब्द का प्रयोग किया है । क्या यह संसदीय है ?

---

*वक्ता ने भाषण का पुर्नवीक्षण नहीं किया ।

श्री उपाध्यक्ष—यह शब्द अनुचित है। उनके मुंह से निकल गया।

श्री हरीसिंह—मैं आपके द्वारा मैनेजरसिंह जी से निवेदन करना चाहता हूं कि वे बुजुर्ग हैं। वह मेरे बोलते वक्त उठना चाहते हैं तो जरूर उठें। यही मुझे उनसे आशा थी। जिस तरह की बातें होती हैं उनके अनुसार ही मैंने यह शब्द कहा था और वह शब्द इसीलिये मैंने प्रयोग किया था। यदि उन्हें बुरा लगता है तो मैं वापस ले सकता हूं क्योंकि वे बुजुर्ग हैं और मेरे साथी भी हैं और देश के शुभ चिन्तक हैं। सोशलिस्ट पार्टी के कार्यकर्त्ता जो रोज चिल्लाते हैं कि तनख्वाह और भत्ता बन्द होना चाहिये तो आज से वे लेना छोड़ दें। अगर नहीं छोड़ सकते हैं तो चिल्लाने से क्या फायदा? हमने एक महीने की तनख्वाह दी है आप भी देकर दिखाइये। आप अगर नहीं दे सकते हैं तो नहीं कहना चाहिये और दे सकते हैं तो कार्यरूप में परिणत करके दिखाइये।

श्री नरसिंहनारायण पांडेय—माननीय हरीसिंह जी कह रहे हैं इसलिये मैं सोशलिस्ट पार्टी की ओर से कह रहा हूं कि अगर तीन मिनिस्टरों की बार कैबिनेट बना दी जाय तो हम लोग कल से ही एक पैसा नहीं लेंगे।

श्री उपाध्यक्ष—चलिये हो गया।

श्री हरीसिंह—इन्हें तो मिनिस्टरों से जलन है। ये चाहते हैं कि मिनिस्टर्स खत्म हों और सब सदस्य खत्म हो जायं। ये बहुत होशियार हैं और वकील हैं, मैं इनका आदर करता हूं और उग्रसेन जी भी बहुत होशियार हैं लेकिन वे भी ऐसी ही बातें कह देते हैं। प्रजातंत्र उसी समय तक कायम रह सकता है जब तक हम और आप यहां पर रहेंगे। अगर आप बाहर रहना चाहते हैं तो क्या नौकरशाही को बुलाना चाहते हैं या प्रजातंत्र को कायम रखना चाहते हैं। एक तरफ तो आप कहते हैं कि सरकार नौकरशाही को प्रोत्साहन देती है और दूसरी ओर आप नौकरशाही को बुलाना चाहते हैं। आप किसी निष्कर्ष पर तो पहुंचिये। आपका क्या मतलब है? आप चाहते क्या हैं? आप रोज कम्युनिस्टों को गाली देते हैं, जनसंघ को गाली देते हैं, कांग्रेस को गाली देते हैं आपका उद्देश्य क्या है? आप किस को अच्छा समझते हैं? जब मिनिस्टर्स और एम० एल० एज० खत्म हो जायेंगे तब आप तनख्वाह लेना छोड़ेंगे। प्रजातंत्र खत्म हो जायेगा तब आप उसकी दुहाई देंगे। आप मुट्ठी भर चंद लोग हैं और आलोचना करना ही आपका काम है। हम डरते नहीं है और न डर सकते हैं। (लाल बत्ती होने पर) मुझे १० मिनट का समय दे दीजिये)।

श्री उपाध्यक्ष—जल्दी कीजिये सभी मांगेंगे तो कैसे होगा।

श्री हरीसिंह—श्रीमन्, यहीं तक नहीं। एक बात मुझे और कहनी है कि प्रजा समाजवादी पार्टी जिसकी मैं कदर करता हूं....

श्री बलवानसिंह—श्रीमन्, हरीसिंह जी हमें बहुत प्यारे हैं लेकिन.....

श्री उपाध्यक्ष—आप उनका समय न लें। केवल दो मिनट रह गये हैं।

श्री हरीसिंह—जहां तक प्रजा समाजवादी पार्टी का संबंध है, कांग्रेस में और इसमें कोई फर्क नहीं है। यह अपने लीडर का विरोध करते हैं और गेंदासिंह जी की बात न मानकर उनसे इस्तीफा ले लिया और हम लोग सब अपने नेता की बात पर प्राण दे देते हैं, टैक्स जरूर लगाइये सरमायेदार पर लगाइये क्योंकि देश की रक्षा करनी है। एक दूसरे पर लांछन लगाना अच्छा नहीं है। आप नौजवानों को प्रोत्साहन दें जो रणभूमि में जूझ रहे हैं। उनके बच्चों की रक्षा के लिये, उनकी बेवाओं के लिये उनकी सहायता के लिये हमको कटिबद्ध होना है जैसा कि सरकार कर रही है। सरकार ने उनके बच्चों की फीस माफ की, उनको जमीनें दी जायेंगी, ऐसी ही बातें आपको इस आदरणीय सदन में कहनी चाहिये जिससे कि जनता का उत्साह बढ़े और जनता

जिस प्रकार सरकार का साथ दे रही है उसी प्रकार आप को भी उसका साथ देना चाहिये, लेकिन आपकी वह भावना नहीं है ।

श्री नरसिंहनारायण पांडेय—श्रीमन्, एक कांस्टीटयूशनल प्वाइंट है जिस पर मैं क्लैरिफिकेशन चाहता हूं उधर से । आपकी लेजिस्लेटिव कांपिटेंस क्या है । २४६ के शेड्यूल ७ के (२) को देखा जाय जिसके मातहत यह टैक्सेशन किया जा सकता है । मान्यवर, उसमें १ से ६६ चीजें हैं जिन पर आपको टैक्स लगाने का अधिकार है । आप उन्हीं पर टैक्स लगा सकते हैं । सातवीं शेड्यूल ७ के दो में दी हुई चीजों में मालगुलारी या लगान का कहीं जिक्र नहीं है मैं तो आपके द्वारा जानना चाहता हूं, उधर के लोगों से कि कौन सी लेजिस्लेटिव कांपिटेंस है जिस के मातहत यह बिल लाया गया है । इस पर मैं आपकी व्यवस्था चाहता हूं ।

सूचना राज्य मंत्री (श्री बनारसीदास)—उपाध्यक्ष महोदय, यह माननीय नरसिंह-नारायण जी ने जो आपत्ति की है यह आपत्ति का कोई समय नहीं है । इस समय इस विधेयक पर विचार हो रहा है । और इसके संबंध में अध्यक्ष महोदय पहले ही अपना निर्णय दे चुके हैं । इस समय तो इस पर विचार हो रहा है और विचार होगा । यह बिलकुल हमारी कांपिटेंस के अन्दर है और इस पर इस प्रकार कोई आपत्ति नहीं की जा सकती ।

श्री नरसिंहनारायण पांडेय—मैं आपकी व्यवस्था चाहता हूं । आप क्या समझते हैं कि इन ६६ चीजों के अलावा भी किसी चीज पर यह असेम्बली टैक्सेशन मेजर ला सकती है ?

श्री उपाध्यक्ष—लैंड रेवेन्यू और लगान तो उसकी कांपिटेंस में है ।

श्री नरसिंहनारायण पांडेय—लैंड पर रेवेन्यू लगाने की कांपिटेंस है, लेकिन उस पर सरचार्ज लगाने की कांपिटेंस आपकी नहीं है । यह बिलकुल साफ बात है कि लैंड पर तो आप टैक्स लगा सकते हैं, उसका असेसमेंट कर सकते हैं, लेकिन रेवेन्यू पर सरचार्ज नहीं लगा सकते । मैं इस पर आपकी व्यवस्था चाहता हूं ।

श्री उपाध्यक्ष—मेरे विचार से लैंड रेवेन्यू को इन्क्रीज करने का भी अधिकार हाउस को है ।

श्री नरसिंहनारायण पांडेय—लेकिन सरचार्ज लगाने का अधिकार नहीं है ।

श्री उपाध्यक्ष—सरजार्ज लगाने और उसमें कोई फर्क नहीं है ।

श्री राधेश्याम शर्मा—मैं आपके द्वारा सरकार से स्पष्ट जानना चाहता हूं कि क्या इस विधेयक को लाने से पहले उसने एडवोकेट जनरल से राय ले ली थी या नहीं । यह एक संवैधानिक प्रश्न है और बड़ा विचारणीय है । अगर यह हाईकोर्ट में जायेगा तो बड़ी दिक्कत हो सकती है और इस पर यहां काफी खर्च हो रहा है ।

श्री उपाध्यक्ष—उन्होंने राय ली है या नहीं, यह प्रश्न इस समय यहां नहीं उठता ।

श्री राधेश्याम शर्मा—पुछवा लीजिये ।

श्री बनारसीदास—माननीय सदस्य जो आपत्ति कर रहे हैं, उनको यह मालूम होना चाहिये कि जितने भी विधेयक यहां आते हैं उन सब में एडवोकेट जनरल से राय ली जाती है और उसके बाद हमारे जितने कानूनी सलाहकार होते हैं सबकी राय लेकर बिल यहां प्रस्तुत किये जाते हैं । यद्यपि इस पर आपने अपनी रूलिंग दे दी है लेकिन नरसिंहनारायण जी को मालूम होन चाहिये कि जिस शेडयूल में स्टेट को टैक्सेशन के राइट दिये गये हैं उनमें लैंड शामिल है और या टैक्स जो लैंड पर है, रेवेन्यू पर है, सरचार्ज लगाने का यह उसमें आता है । इस के द्वारा रेवेन्यू

[श्री बनारसीदास]

में कुछ इजाफा करने की बात है और वे उसका इंटरप्रेटेशन करना चाहते हैं। लेकिन मेरा खयाल है कि विवाद के बीच में वह प्रश्न पैदा नहीं होता। मैं यह कहना चाहता हूं.....

(व्यवधान)

श्री नरसिंहनारायण पांडेय---श्रीमन्, मुझे इतने ही क्लेरीफिकेशन की आवश्यकता है कि शेड्यूल में और किस नियम के अन्तर्गत आप रेवेन्यू पर सरचार्ज लगा रहे हैं?

श्री उपाध्यक्ष---देखिये यह रूलिंग हो गई अब आप कृपया विराजिये।

श्री नरसिंहनारायण पांडेय---श्रीमन्, मेरी बात सुन लीजिये इसमें बेकार में जनता हैरान होगी और इस प्रदेश के लोगों का बेकार में खर्च होगा।

(व्यवधान)

श्री दीपनारायणसिंह (जिला फतेहपुर)---माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं बड़े दुख के साथ यह कहना चाहता हूं कि मेरे कुछ साथियों ने मेरे विचार सुनने के पहले ही कुछ कानूनी अड़चनें पैदा कर दी हैं और अच्छा यह होता कि जब यह विधेयक प्रारंभ हो जाता तब आप उसमें वैधानिक आपत्तियां उपस्थित करते। आपको यह सोचना चाहिये कि आज यह देश जिस संकटकाल से गुजर रहा है उसमें हमारे एक ओर तो खाई है और दूसरी ओर खंदक है। मैं आपके सामने एक अंग्रेजी लेखक की पुस्तक "दि राइज एण्ड फाल आफ नाजी जरमनी" के कुछ अंश उपस्थित करूंगा। उसको मैंने पढ़ा है और मैंने पंडित नेहरू की "ग्लिम्सेज आफ दि वर्ल्ड" भी पढ़ी है। मैं इन नतीजे पर पहुंचा हूं कि कुछ विरोधी दल वाले पार्लियामेंट को ही खत्म करना चाहते हैं। मैं एक वकील हूं और एक किसान का बेटा भी हूं। इसलिये मेरे २ दृष्टिकोण हैं। हम आज यह लड़ाई प्रजातंत्र के लिये लड़ रहे हैं; परन्तु मुझे बड़े दुख के साथ यह कहना पड़ रहा है कि आज भी फौज में ऊंच और नीच का खयाल करके भर्ती की जाती है। छोटी जाति-वालों को जगह नहीं दी जा रही है। उनको शेड्यूल या बैकवर्ड क्लास कह कर के रिजेक्ट कर दिया जाता है। हमारे विरोधी दल के नेतागण आज समझदारी से काम नहीं ले रहे हैं। एक बात आपको और बताऊं कि श्री जयप्रकाश नारायण जी ने एक समय यह कहा था कि देश की फौज को खत्म करके उसको खेती में लगा दिया जाना चाहिये और अब वह कहते हैं कि नहीं, उसको संगठित करके चीन पर विजय प्राप्त करना चाहिए, तो यह विचारों में विरोधाभास क्यों है? इसलिये मुझे विरोधी दल वालों की बातों को सुनकर के बड़ा ताज्जुब होता है। मैंने हिटलर की भी माइन कामफ "Mein kamph" किताब पढ़ी है। उसमें कहा था कि जर्मन जाति विशुद्ध आर्यन जाति है और दुनिया में वही रूल (शासन) कर सकती है। इनफीरियर जाति सुपीरियर जाति के मातहत रहेगी तभी दुनिया चलेगी और वह भी पूंजीपतियों की मदद से ही आया था। फर्स्ट वर्ल्ड वार के जर्मन कमान्डर श्री हिन्डनबर्ग को कौन नहीं जानता है। वह एक हीरो था। और वह सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी की ओर से जर्मन संसद के अध्यक्ष थे। उस समय वहां पर नेशनलिस्ट पार्टी वैसी ही थी जैसी कि आज यहां पर हमारी सोशलिस्ट पार्टी है। उस समय हिटलर ने क्या कहा था, मैं उसे इस किताब से पढ़कर सुनाना चाहता हूं--

"If the party, takes part in the parliamentary institution it is only for the purpose of destroying this institution from within ; in other words, we wish to do away with an institution which we must look upon as one of the gravest symptoms of human decline".

"This very fact fully justifies the conclusion that it was the Aryan alone who founded a superior type of humanity ;"

"The Volkisch concept separates mankind into races of superior and inferior quality, and it postulates the victory of the better and stronger and the subordination of the inferior and weaker".

यह मैंने इसलिये पढ़ा कि बात आपके सामने स्पष्ट हो जाय। हमने आजादी की लड़ाई लड़ी। मैं बहुत मामूली किसान का लड़का हूं। मैं किसी रुपये वाले के मदद से यहां नहीं आया हूं। अपने

दिमाग से, किसानों की मदद से आया हूं। हमें आज सोचना चाहिये। आजादी की लड़ाई ने हमको वोट का अधिकार दिया। गिरधारी लाल जी जैसे लोग मिनिस्टर बन गये। किन्तु आज अगर वे लोग यहां आयेंगे तो क्या दशा होगी? मार्शल लोग यहां पर होंगे। आज पंडित जवाहरलाल नेहरू में भी खामियां हैं, मगर आज की परिस्थितियों में भी उन्होंने डेमोक्रेसी के स्ट्रक्चर को कायम रखने की कोशिश की है और उसको कायम रखा है। आपके जयप्रकाश जी का क्या कहना है? वे तो यह कहते हैं कि यह पार्लियामेन्टरी डेमोक्रेसी इंडिया के लिये अनसूटेड है, इन्डाइरेक्ट डेमोक्रेसी होना चाहिये। मैंने उस दिन क्षेत्र समिति वाले विधेयक पर बोलते हुये कहा था कि इस तरह से कितने हरिजन ब्लाक प्रमुख चुने जायेंगे?

श्री कल्पनाथसिंह—उपाध्यक्ष महोदय, आप समय की पाबन्दी का भी खयाल रखते हैं या नहीं?

श्री उपाध्यक्ष—५ मिनट का मेरा भी डिस्क्रिशन है।

श्री दीपनारायणसिंह—चीन ने हिन्दोस्तान की आजादी पर हमला किया है अब चाहे वह कोई भी क्यों न हो वह हमारा शत्रु है। चाहे वह पूंजीवादी हो, चाहे समाजवादी हो और चाहे साम्यवादी हो या साम्राज्यवादी हो। लेकिन अगर आप इसको किसान मजदूर की लड़ाई में, इनफीरियरिटी और सुपीरियरिटी की लड़ाई में तब्दील करेंगे तो उसका नतीजा बहुत खतरनाक होगा। अगर करप्शन दीपनारायणसिंह करता है तो चाहे वह किसी भी दल का हो, वह दोषी है, उसको दंड मिलना चाहिये। इन पूंजीवादियों ने हिटलर से भी तो अधिक रुपया लेकर हथियार बेचे थे। पूंजीवादी जहां भी हों उनकी लड़ाई बड़ी खतरनाक होती है। हिटलर भी बड़ी मीठी-२ बात करता था लेकिन करता क्या था? लेकिन आज हम धोखे में नहीं रह सकते। हम समझते हैं कि अगर यह सरकार है तो जनतंत्र है। आज नेहरू जी की जगह और कोई नहीं ले सकता। यहां हमने जनतंत्र के रूप में गुप्ता जी को बैठाया है, उनका हम हर प्रकार से समर्थन करेंगे। इसी हुकूमत के जरिये से लड़ाई लड़ी जायगी। आज किसान आजादी के लिये लड़ रहा है। देश के लिये लड़ रहा है। आज शासन में किसानों को स्थान मिलना चाहिये। इनको हटाइये और चरण सिंह जी को पुलिस का मिनिस्टर बनाइये। ३—३ हजार पाने वालों को हटाने की अभी तक किसी ने चर्चा नहीं की। अगर हममें से कोई इसका जिक्र करता है तो कहा जाता है कि इनफीरियरिटी कम्प्लेक्स है। आप ब्यूरोक्रेसी को शुद्ध कीजिये, पार्टी सिस्टम को बनाये रखिये। इस सिस्टम में चन्दा वसूल करने की बात गलत है। तहसीलदार, पटवारी, कानूनगो मुंह का चन्दा लेते हैं, कचहरी में भी सुरक्षा चन्दा लिया जाता है। मैं आपके बिल का समर्थन करता हूं। मैं इसलिये समर्थन कर रहा हूं कि कानूनी तरीके से आप टैक्स ले रहे हैं। यह तरीका ठीक है। इसका समर्थन करते हुये मैं चाहता हूं कि इसके बाद बनियों पर भी टैक्स लगाने का बिल आये।

डाक्टर राजेन्द्रकुमारी बाजपेयी (जिला इलाहाबाद)—माननीय उपाध्यक्ष महोदय, प्रस्तुत विधेयक के सम्बन्ध में विरोधी दल की तरफ से जो संशोधन उपस्थित किया गया है कि इस विधेयक को ६ महीने के लिये जनमत संग्रह के लिये भेजा जाय, अथवा जो दूसरा संशोधन है कि इसे प्रवर समिति में भेजा जाय, इसका मैं विरोध करती हूं। क्योंकि यह विधेयक आज एक असाधारण परिस्थिति में लाया गया है और इसके महत्व में हमें जाना चाहिये इस तरह का संशोधन इस तरह के असाधारण समय में लाने के लिये नहीं होता है। जब साधारण परिस्थिति हो तो हम इत्मीनान से बैठ कर अपना समय लगाते हैं और साधारणतः उसी समय ऐसे संशोधन को पेश करते हैं। यह तो इमर्जेंसी का वक्त है जब कि हमें राष्ट्र की सुरक्षा के प्रश्न पर विचार करना है कि उसके लिये कहां से आय आवे और अतिरिक्त आय का साधन जुटाने के लिये ही यह विधेयक पेश किया गया है। हमारे बहुत से माननीय सदस्यों के मन व दिमाग में अभी भी पिछले जोत-कर विधेयक की बातें ही घूम रही हैं और इस समय उसको भी इससे मिला कर ही आलोचनायें

[डाक्टर राजेन्द्रकुमारी बाजपेयी]

हुई हैं। इस परिस्थिति को गौण करके इस विधेयक को सामने रखा गया है और उस समय जो बातें कही गयी थीं, प्रायः उससे मिली जुली बातें ही आज भी कही जा रही हैं।

श्री राधेश्याम शर्मा—श्रीमन्, सदन में बातें बहुत हो रही हैं।

श्री उपाध्यक्ष—आप लोग शान्ति से सुनें।

डाक्टर राजेन्द्रकुमारी बाजपेयी—आज जिस परिस्थिति में यह विधेयक लाया गया है वह उस परिस्थिति से भिन्न है जब कि पहला जोत-कर विधेयक लाया गया था। कल माननीय नेता विराधी दल ने कहा था कि यदि सरकार हम से कहे तो ५ करोड़ क्या १० करोड़ तक देने के लिये तैयार है, यदि हमें मालूम हो कि इसका एक-एक पैसा सुरक्षा के कार्यों पर खर्च होगा। लेकिन हमें सन्देह है कि यह पैसा योजना पर खर्च होगा। जिस के लिये सरकार हमसे पैसा चाहती है उस योजना की कोई रूपरेखा हमें नहीं बतलायी गयी है कि सुरक्षा की योजना के लिये कितना धन चाहिये। जब हमारे ऊपर इस तरह के विधेयक को लादा जाता है तो हम कैसे ऐसी चीजों को मान लें। मैं यह कहना चाहती हूं कि आज जबकि यह सुरक्षा का कार्य है, उसके साथ ही साथ आप अपनी योजना को बिलकुल खत्म भी नहीं कर सकते हैं। देश की सुरक्षा के लिये कल कारखाने हमें तीन-तीन शिफ्ट्स में चलाने होंगे जिसके लिये भी पैसे की जरूरत है। मजदूरों को देने के लिये भी पैसे चाहिये ही। यह हो सकता है कि इस असाधारण स्थिति में हम अपनी योजना के उन हिस्सों को काट दें जिनको हम दो-तीन साल के लिये रोक सकते हैं। लेकिन सारी चीजें जिनको करने के बाद हम अपने प्रदेश की सुरक्षा व्यवस्था को करना चाहते हैं उन पर तो हमें खर्च करना पड़ेगा ही। फिर आप यह समझें कि जब लड़ाई चलती है तो लडाई में अधिक लोगों को काम दिया जाता है। अधिक लोगों की पर्चेजिंग पावर बढ़ती है तो फिर वही पैसा बाजार में आता है जिससे इनफ्लेशन होता है और ऐसी हालत में सरकार के पास एक ही हथियार होता है और वह है टैक्सेशन का तरीका। इसलिये सरकार को जो लोगों के हाथ में परचेंजिंग पावर बढ़ जाती है उसको रोकने के लिये उसको कम करने के लिये टैक्स के द्वारा पैसा बटोर लेना पड़ता है और सरकार उसको फिर डेवलपमेंट के कामों में लगाती है। इसलिये सुरक्षा का काम देश में मूल्यों को न बढ़ने देना और यह योजना का काम जो सुरक्षा से मिलता-जुलता होगा एक साथ चलेंगे और इन सबके लिये अधिक पैसे की आवश्यकता होगी। विरोधी दल के भाइयों ने जो तर्क प्रस्तुत किये वे वही थे जिनको बजट के समय कहते। एमरजेंसी के लिये १ रु० पर २५ नया पैसा कोई बहुत बड़ी रकम नहीं है। अभी आपने कहा कि चंदा जो आया वह देहातों से ज्यादा आया। अगर उनकी शक्ति है कि वह इतना चंदा दे सकते हैं तो फिर जो टैक्स लगाया जा रहा है उसको भी वह खुशी से देंगे। फिर सरकार के काम लोगों की इच्छा पर नहीं चला करते हैं उसके लिये एक सुनिश्चित व्यवस्था चाहिये और उसके लिये ही यह प्रयास किया जा रहा है। हमारे देश में राष्ट्रीय लेविल पर जो टैक्सेशन है वह १० प्रतिशत है जब कि डेवलपिंग इकोनामी में २० प्रतिशत बढ़ाया जा सकता है। और चीन के आक्रमण से जो काम करने की गति बढ़ी है यह अच्छी चीज है इससे हमारी योजना को बल मिलेगा हमारी आर्थिक व्यवस्था अच्छी बनेगी प्रोडक्शन भी आगे बढ़ेगा। कोई देश अगर लड़ना चाहता है तो जरूरी है कि साउन्ड इंडस्ट्रियल बेस हो। मैं नहीं मानती हमने कोई तैयारी नहीं की थी। मैं कहती हूं हमारी सरकार की जो नीति अब तक रही है वह बिलकुल सही नीति रही है और जो तैयारी होनी चाहिये किसी देश को अपने पैर पर खड़े होने के लिये वह हो रही है पिछली योजना में देश में ३ स्टील के कारखाने बने तो कौन रोकता है आपको कि उनमें एम्युनिशन न तैयार करें। अगर साइकिल के कारखाने हैं तो उनमें बन्दूक बनते हैं तो उसको कौन रोक सकता है। हमारी नीति रही है कि हम अपने देश को आर्थिक दृष्टि से इस तरह तैयार करें कि हम इतने मजबूत बन जायं कि हर परिस्थिति के लिये तैयार हों। पिछले १५ सालों से नेतागण देश को इसी लाइन पर तैयार कर रहे थे इसलिये ये सारी योजनाएं चली और आज भी

चलेंगी। जो लोग इस पर विश्वास नहीं करते यह उनकी बात है। मगर पंडित जवाहरलाल जी ने जो सबसे बड़ी देन दी है वह यह है एक तो प्रजातंत्र की नींव डाली और दूसरी उसको सुदृढ़ नींव पर रखा ताकि देश मजबूत हो। एक बात बराबर यही कही जाती है कि सरकार की फिजूल खर्ची को अगर रोक दी जाय और मिनिस्ट्री को कम कर दिया जाय तो फिर सब खर्चे पूरे हो सकते हैं, इसकी आवश्यकता ही क्या है। आप भूल करते हैं साधारण और लड़ाई की परिस्थितियों में कितना फर्क हो जाता है। अभी प्रदेश की सरकार इस प्रश्न में उलझी हुई थी कि योजना चलाने के लिये रिसोर्सेज चाहिये और नये-नये टैक्सेज की खोज कर रही थी वहां यह दूसरा संकट आ गया जिसकी वजह से जो हमारे रसोर्सेज हैं, जो आर्थिक शक्ति है उनको वार एफर्ट में भी लगायें। ऐसी हालत में यह जरूरी हो जाता है कि हम लोग उन लोगों से भी लें जो दे सकते हैं और १०० में से केवल २५ नये पैसे की मांग की गई है और इस असाधारण परिस्थिति में आप लोग किसानों से अपील करते कि इस महायज्ञ में आपको भी दान देना है। लेकिन मुझे अफसोस है कि विरोधी दल के लोगों ने कुछ दिन पहले यह निश्चय किया था कि हम लोग इस संकट में मुख्य मंत्री जी के साथ चलने के लिये तैयार है, आज आप उस वायदे को तोड़ रहे हैं। आपके वे शब्द कहां गये। इस सदन के विरोधी दल के नेताओं ने गुप्ता जी को अपना नेता माना था। लेकिन क्या आप समझते है? सीज फायर होने से संकट खत्म हो गया है। फिर आप गुप्ता जी के केबिनेट द्वारा लाये हुये विधेयक का कैसे विरोध करते हैं आप ६२ को देखिये, अगर ६७ को देखेंगे तो इतिहास क्या कहेगा। इस समय आप आजादी की तरफ देखिये और स्वस्थ परम्परा कायम करने के लिये मैं समझती हूं कि इस संशोधन को वापस लेकर एक मत से विधेयक को पास करें।

श्री कल्पनार्थसिंह--आदरणीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपका बड़ा आभारी हूं कि आपने मुझे बोलने का मौका दिया। इस विधेयक के उद्देश्य और कारणों के देखने से तथा भाषणों को सुनने से पता चलता है कि राष्ट्रीय संकट की बात कही गई है। हमने कब कबूल नहीं किया कि राष्ट्रीय संकट नहीं है। मैं लोगों को बता देना चाहता हूं कि इस पार्टी ने १९४२ से और इससे पूर्व राष्ट्र के नाम पर, आजादी के नाम पर खून पसीना एक करके दिखा दिया है। जो लोग उन कुर्सियों पर बैठे हैं १९४२ की लड़ाई में इनमें से बहुतों का पता नहीं था जबकि हम लोगों ने जेलों से कूदकर बाहर लड़कर अंग्रेजों से मोर्चा लिया था। मैं यह भी कहना चाहूंगा कि आज इस पार्टी के लिये यह कहा जाय कि ये लोग सोचते नहीं है, दूरदर्शी नहीं है, यह गुनाह से भरा हुआ है और बेमाने हैं।

दूसरी बात श्रीमन्, यह है कि अगर नैपाल और लद्दाख की बात थी तो लोक सभा में सब से पहले प्रजा समाजवादी पार्टी के नेता श्री कामथ ने एक बार नहीं, कई बार कहा कि लद्दाख की तरफ नजर उठाइये और माननीय सदस्यों को मालूम होगा कि शमसी मिनाई ने एक किताब लिखी थी कि हिमालय के उस पार क्या हो रहा है और इसी सरकार ने उसको जब्त किया था। क्या वह चेतवानी नहीं थी? मैं कहता हूं कि सोशलिस्ट पार्टी को दोष देने वाले पहले अपना दामन देखें। इसके अलावा यह कहा जाता है कि यह बिल सुरक्षा के लिये, आजादी के लिये अगर नहीं चलेगा तो काम नहीं चलेगा। मैं कहता हूं कि इससे प्रदेश का मनोबल गिरा है, आपने योजना के नाम पर यह कहा था रुपया दो और आज सुरक्षा के नाम पर यह टैक्स बिल ले आये हैं। मैं यह भी कहना चाहूंगा, ठाकुर साहब सम्मानित सदस्य हैं इस सदन के बहुत पहले से, और मेरे पूजनीय हैं। मैं उनके बारे में और कुछ नहीं कहूंगा उन्होंने भी वादा की बात कही थी। मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या गुप्ताजी की सरकार ने इस सदन के उठने के पूर्व जब नियोजन के नाम पर यह बिल लाया गया था तो क्या इस जनता से वादा नहीं किया था कि अब इस राष्ट्रीय संकट के अवसर यह बिल नहीं आने वाला है। (व्यवधान) नाम बदल दिया है, बात वही है। उसकी जगह पर और भी खराब बिल लाकर रख दिया गया। वादे की बात कही जाती है तो मैं ठाकुर साहब को याद दिलाना चाहता हूं कि आपने आश्वासन दिया था कि आठ एकड़ तक के किसानों को छूट दी जायगी। अगर आप उन गरीब किसानों

ना सोशलिस्ट पार्टी पुनः विचार करने के लिये तैयार हो सकती आपने कौन सा कदम उठाया। श्रीमन्, दूसरी बात मैं यह भी कहना चाहत हू कि हरगोविन्द सिंह जी ने बड़ा लेक्चर दिया। ब्रिटेन के किसी लेखक का उद्धरण दिया। मैं भी आपकी आज्ञा से एक उद्धरण देना चाहता हूं। १९३९ में लड़ाई के अवसर पर ब्रिटिस पार्लियामेन्ट में एक माननीय सदस्य का विचार था :

"I am seeking to say that we shall not preserve this national unity unless in our financial policy we convince the nation that all people are treated alike."

अगर इस सरकार के लोग वर्गभेद पैदा करेंगे तो मैं नहीं समझता कि यह कहां तक उचित होगा? बीस बार कहा गया कि चीनी मिल मालिकों से पैसा लीजिये, बिजली कम्पनियों से पैसा लीजिये, आप करोड़पतियों से पैसा लीजिये, लेकिन आपकी नजर उनकी तरफ नहीं पड़ी। उनके पैसे से चुने हुए लोग उनकी सुरक्षा के लिये बैठे हुए हैं। एकता भंग करने का काम अगर किसी ने किया तो इस सरकार ने किया। मैं यह कहना चाहूंगा कि गुप्ता जी और इसकी मैं दाव्द देता हूं कि बड़े होशियार हैं। उनकी होशियारी का लोहा जरूर मानूंगा। पिछली बार जब यह बिल आया तो इधर के बैठने वाले लोग एकमत थे। आज इस राष्ट्रीय संकट के नाम पर कुछ लोगों को अपनी तरफ खींच ले जाने में वह जरूर सफल हुए, मैं यह मानता हूं। और तभी उनकी यह हिम्मत पड़ी कि वह इस बिल को इस सदन में ले आयें। लेकिन जिन लोग को वह खींच ले गये उसमें एक पार्टी है कम्युनिस्ट पार्टी। उसकी राष्ट्रीय परिषद प्रस्ताव पास करती है कि हम इस देश की इमर्जेंसी में साथ हैं, सुरक्षा में साथ हैं। लेकिन दूसरी तरफ इस बात की भी मिसाल है, इतिहास साक्षी है यह दुमुहें लोग कैसी बात करते हैं। दो दुमुहे लोग बड़े खतरनाक हुआ करते हैं मैं आपके द्वारा यह भी कहना चाहूंगा, यह दो मुंहे इसमें खतरनाक हैं। (शोर) तो मैं यह अर्ज करना चाहता था कि श्रीमन्, (शोर) छाती पर सांप लोटने लगे। सुनिए जरा कान खोलकर सुनिए। इनकी एक फौज उनकी उधर लगी हुई है जो चीन का गुणगान कर रही है। चीनियों का गुण गाती है, चीनियों को बुलाती है, इस राष्ट्र में संकट उत्पन्न करती है और दूसरी तरफ कुछ लोग हां हुजूर, हां सरकार इसमें लगे हैं और हाथ जोड़कर खड़े हैं, हमारे ऊपर वारंट ईशू नहो, हमारा वारन्ट कैंनसिल करिए। मैं जानना चाहता हूं कि आज कम्यूनिस्ट पार्टी के लोगों में कितने लोग ऐसे हैं कि जिनके ऊपर वारन्ट ईश्यू किया गया और अगर वारन्ट ईश्यू किया गया तो क्यों किया गया। दो बातों में एक ही बात सही हो सकती है। या तो हिन्दुस्तान के कम्युनिस्ट सही हैं, यू० पी० के कम्यूनिस्ट सही हैं या फिर यह कांग्रेस की सरकार सही है। इस बात की सफाई हो जानी चाहिये। एक तरफ तो यह कहते हैं कि ये गद्दारी में पकड़े गए, देशद्रोह में पकड़े गये, इनकी कार्यवाही अवांछनीय है और दूसरी तरफ नाटक किया जाता है, हां सरकार, हम आपके साथ हैं। हजूर हमारे भाई बाप हैं। यह क्या तरीका है, मैं जानना चाहूंगा (शोर) श्रीमन्, तीसरी बात यह कहना चाहूंगा (लाल बत्ती होने पर) श्रीमन मैं कुछ वक्त और चाहूंगा। अभी मैंने कुछ नहीं कहा। मुझको बहुत कुछ कहना है।

श्री उपाध्यक्ष--पांच मिनट में आप खत्म कर दीजिए।

श्री कल्पनार्थसिंह--मैं कोशिश करूंगा।

श्री उपाध्यक्ष--कोशिश नहीं आप खत्म कर दीजिये पांच मिनट में।

श्री कल्पनार्थसिंह--श्रीमन्, मैं कोशिश करूंगा। अगर एक बात भी मैं दोहराऊं तो आप वक्त काट दीजिएगा। मैं यह कहना चाहता था कि आज जो लोग मुझे देशभक्ति का सबक सिखाते हैं जो प्रजा सोशलिस्ट और सोशलिस्ट जैसी उज्जवल चरित्र की पार्टियों को देशभक्ति का सबक सिखाते हैं उनसे मैं कहना चाहूंगा कि क्या इस टैक्स के बिल से जनता का

मनोबल नहीं गिरेगा ? यह स्पष्ट है कि गिरेगा और कम्युनिस्ट पार्टी इस बात के लिये आतुर है कि जनता का मनोबल गिरे और पीछे से, नीचे से, आड़े से यह कानाफूसी करें कि देखो न, देखो न, टैक्स बढ़ गया। इनकी यह टैक्टिस है, कम्यूनिस्ट टेक्टिस है, दुनियां के इतिहास में रही है पहले मैं इस राय का था कि इस बिल का समर्थन किया जाय लेकिन जब इन कम्युनिस्टों ने इस बिल का समर्थन किया और जब इन कांग्रेसियों ने डाक्टर जेड० ए० अहमद के लेक्चर पर मेज पीटना शुरू किया तो मैं निश्चित इस मत का हो गया कि इनकी बुद्धि पर पाला पड़ा हुआ है। यह वही तरीका है जो हर कंट्री में कम्युनिस्ट करते हैं। जहां तक स्वतंत्र पार्टी के नेता की बात है कि जिन्होंने समर्थन किया तो उन्होंने तो ठीक ही किया। कल तक यह राजे रजवाडे लोग जो हैं ठाकुर साहब जब उधर से उनका जिक्र करते थे तो स्वतंत्र पार्टी के लोगों की निगाहें झुक जाती थीं। आज उन्होंने कहा कि चलो हमारे ऊपर लगा तो उसके साथ साथ धुरहू-निरहू पर भी लगा। इसलिये वह इस बिल का समर्थन करते हैं। वह तो चाहते हैं कि गरीब-गरीब होता जाय अमीर-अमीर होता जाय। आज जो भूमिधर किसान है वह अगर १ रुपया बीघा मालगुजारी देता है तो उसको सवा रुपया बीघा देना पड़ेगा और सी० एल० आर० डी० से आया हुआ किसान शिकमी से आया हुआ किसान जो दस बारह पन्द्रह रुपये देता है उसको भी सवाया देना पड़ेगा। फिर यह नहीं खुश होंगे तो कौन खुश होगा ? अगर इस सरकार में हिम्मत हो और इस सरकार में वाकई यहां की जनता के प्रति वफादारी हो तो मैं यह कहना चाहता हूं कि छोड़िये इन सारी बातों को। अलाभकर जोतों से आप इसको हटाइये और हमारा समर्थन इस बिल के लिये खुलेआम लीजिए। मैं समझता हूं कि सभी सोशलिस्ट भाई और प्रजा सोशलिस्ट भाई इसका समर्थन करेंगे। (शोर)

दूसरी बात समर्थन की कही गई। समर्थन के लिये मैं कहूंगा कि समर्थन एक तरफा नहीं होता। अगर आप इस सदन में राष्ट्रीय प्रेम की बात करते हैं, अगर आप देश-प्रेम की बात करते हैं तो मैं यह कहना चाहता हूं कि आप इस सदन में सर्वसम्मति से एक बिल ले आयें। उसके लिये प्रवर समिति में जाने दीजिये। उसमें कोई विरोध की बात नहीं होगी। बड़े-बड़े राजा महाराजा के ऊपर भी उतना ही लगेगा, अनुपात से लगेगा और जिनके पास बहुत सीर है उनके ऊपर भी उसी अनुपात से लगेगा और निरहू और घुरहू पर भी उतना ही लगेगा। ऊपरवाले पर भी उतना ही लगेगा और नीचे वाले पर भी। एक गांव में मैं गया राष्ट्रीय चन्दे के लिये तो वहां पर लोगों ने मुझसे कहा कि अब क्यों दौड़ रहे हो। अब तो सरकार ही टैक्स लगा रही है। मैं माननीय सदस्यों को बतला देना चाहता हूं कि मेरा क्षेत्र भी एक क्षेत्र है वहां पर लोगों ने ६४ हजार रुपया और ६६ अदद सोना दिया है बड़हलगंज में। आपकी पार्टी के लोगों ने क्या दिया है ? हमारी पार्टी के सदस्य राजा अवध प्रताप ने ५१ तोला सोना दिया है, वेतन दिया जो करीब ५ हजार रुपया हो जायगा, और साथ में उन्होंने चन्दा भी इकट्ठा किया है। आज आप इस तरह की बात करते हैं कि चन्दे से काम नहीं चलेगा। नेता सुभाषचन्द बोस ने विदेश में इस बात को करके दिखा दिया था कि चन्दे से राष्ट्रीय लड़ाई लड़ी जा सकती है और चन्दे वाले भी देश का शासन चला सकते हैं। जनता ने इस बात को तय कर लिया है कि चीनी हिन्दुस्तान के कम्युनिस्ट लोगों के साथ भी जो टैक्टिस अख्तियार कर रहे हैं, वे कितनी ही अपनी टैक्टिस अख्तियार करें लेकिन यह जनता भारत भूमि से इन चीनियों को बाहर निकाल कर फेंक देगी और हिन्दुस्तान तिब्बत के साथ एक हो कर रहेगा।

*कारागार मंत्री के सभा सचिव (श्री धर्मदत्त वैद्य)—श्रीमन्, इस विधेयक पर जो विवाद चल रहा है उसको मैंने बहुत गंभीरता के साथ सुना है। अभी हमारे माननीय सदस्य जो इधर से बोल रहे थे उनको भी मैंने ध्यान से सुना। इस विधेयक पर इधर के अनेक माननीय सदस्यों ने इस ओर के बैठने वाले लोगों की अनेक त्रुटियों की ओर संकेत किया है और बहुत-सी बुराइयों की ओ इस सदन का ध्यान आकर्षित किया है। मैं तो यह विश्वास करता हूं कि मनुष्य

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री धर्मदत्त वैद्य]

बुराइयों और त्रुटियों से बना हुआ है । कोई भी मनुष्य संसार में ऐसा नहीं है जिसके अन्दर अनेकानेक त्रुटियां और कमजोरियां न हों । यह सरकार भी गलती कर सकती है । हो सकता है इन्होंने पहले भी कुछ गलती की हों लेकिन इधर के बैठने वालों ने कभी यह नहीं कहा कि आप उन त्रुटियों को और उन गलतियों को न दोहरायें या उनकी आलोचना न करें । मेरा तो विश्वास है कि प्रजातंत्र की रक्षा के लिये विरोधीदल का होना नितान्त आवश्यक है और जो त्रुटियां हों उनका कहना भी आवश्यक है, किन्तु इस संकट के समय में जब सारे देश में एकता की आवश्यकता है तो सिर्फ इतना ही आपसे निवेदन है कि कुछ समय के लिये आप धैर्य रखें । हमारी गलतियां भी हो सकती हैं । उन गलतियों को आप समझें, जाहिर करने की कोशिश करें । आपको अवसर मिलेगा कि आप उनको समाज में और जनता में उन गलतियों को जाकर कहें। उन त्रुटियों को जनता के बीच में देखा जायगा और उन त्रुटियों से आप जनता को सावधान भी करेंगे, लेकिन इस संकट के समय में जितना अच्छा वातावरण हमारे इस देश में और इस प्रदेश में, इस सदन में बना है उसको कायम रखना हमारा और आपका, सबका कर्तव्य है । बहुत से हमारे भाइयों ने पिछली बातों के ऊपर ध्यान दिलाया है । मुझे स्मरण है कि भाई प्रतापसिंह ने एक बार चीन का जो मामला है उसकी ओर इस सदन का ध्यान आकर्षित किया था । मैं जानता हूं उस बात को, लेकिन मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि इसकी ओर भी आप ध्यान दीजिये कि जिस समय चीन में चांगकाई शेक की सरकार का अंत हुआ और चीन का शासन वर्तमान नेताओं के हाथ में आया तो यहां पं० गोविन्द बल्लभ पंत ने उत्तराखंड के विकास का बीड़ा उठाया और उन्होंने तराई के क्षेत्र और उत्तराखंड के पिछड़े हुए इलाके को उठाना शुरू किया जहां कि दिन में शेर गुजरा करते थे और मानव को मानव नहीं समझा जाता था । उसे उन्होंने विकसित किया और आगे बढ़ाया । मुझे दुख है कि उस वक्त भी ऐसे भाई मौजूद थे कि जो यह लांछन लगाते थे कि पंत जी पहाड़ी हैं इसलिये पहाड़ी इलाकों के विकास से उनको सहानुभूति है । मुझे यह कहना पड़ता है कि जो इधर बैठते हैं उनकी बहुत सी मजबूरियां और दिक्कतें हैं । जब यह लांछन समय-समय पर पंत जी पर लगाया गया तो उस समय वह यह नहीं कह सकते थे कि हमें चीन से खतरा है और इसलिये हम इस विकास के कार्य को कर रहे हैं । उन्होंने तराई के इलाके को काट कर आबादियां बसायीं, विश्वविद्यालय की स्थापना की और उन भयानक जंगलों में मंगल कर दिया । उनके लिये वे चीन के हमले का बहाना नहीं कर सकते थे ।

आज पंचवर्षीय योजना के लिये भी बहुत से लोगों ने बहुत सी बातें कही हैं, लेकिन हमें अपनी बातें स्पष्ट करने में थोड़ी शंका रहती है । मुझे स्मरण है सन् १९५४ में पं० जवाहरलाल नेहरू ने पंत जी को एक पत्र लिखा था और उसमें उनको उत्तरी सीमा की ओर से सचेत रहने का संकेत किया था । यह नेता खाली अगर इसलिये हैं कि उनकी आलोचना की जाय तो ठीक है । आलोचना कीजिये, लेकिन सोच समझ कर आलोचना कीजिये । जो व्यक्ति शासन की जिम्मेदारी लेता है, जो उत्तरदायित्व लेता है उसकी आलोचना करना बहुत आसान है । हर व्यक्ति उसकी आलोचना कर सकता है । मनुष्य कितनी भी गंभीरता के साथ किसी कार्य को करे, कहीं न कहीं कोई न कोई त्रुटि उसमें रह ही जाती है । लेकिन त्रुटियों को देखने का यह समय नहीं है । इस समय जो एकता, मनोबल हमारे देश में बना है और जिसके कारण हम अपने देश की रक्षा के लिये तैयार हुए हैं और दुश्मन को पीछे हटाना चाहते हैं उसको कायम रखना हमारा और आपका कर्तव्य है । मैं जानता हूं कि उधर के व्यक्ति भी इस देश के रहने वाले हैं और उनके हृदय में भी राष्ट्रभक्ति है और वे भी अपना सर्वस्व न्योछावर करने में समय आने पर पीछे नहीं हटेंगे, उन्होंने अपने क्षेत्रों में काम किया है, चन्दा किया है, जनबल को तैयार किया है, उन्होंने देश के अन्दर एक भावना पैदा की है, किन्तु मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि इस समय जब इतना समय लगा कर ऐसा वातावरण बनाया है कि जिसने चीन को लड़ाई बंद करने के लिये बाध्य कर दिया, जिसने दूसरे देशों को भारत और चीन के बीच समझौता करने के लिये बाध्य किया, जिसने बाध्य किया है दूसरे देशों को भारत की सहायता करने के लिये, उसे हम कायम रखें । मैं यह भी निवेदन करना चाहता हूं कि हम एक दूसरे के प्रति अविश्वास छोड़ दें । अगर हम आपस में

अविश्वास करते रहेंगे तो हमारा नैतिक बल किसी न किसी प्रकार कम होगा और हम अशिक्षित जनता को भ्रम में डालेंगे । हमारे बहुत से भाइयों को साम्यवादियों के लिये बड़ा संदेह है । वे उनके लिये संदेह की दृष्टि रखते हैं । हो सकता है कि उनके अपने विचार सही हों, लेकिन मैं समझता हूं कि देश में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को, जो भारत में पैदा हुआ है, जिसको भारत से प्रेम है, वह देश के प्रति स्वेच्छा से वफादार है और ऐसा नहीं है कि साम्यवादियों में ही ऐसे लोग हों । पंचमांगी हर व्यक्ति हो सकता है, भले ही उसका संबंध किसी पार्टी से हो या न हो । हमें असल में तथ्यों की ओर ध्यान देना पड़ेगा । आज जनता के मनोबल को हमें ऊंचा करना है । जो एकता का वातावरण पैदा हुआ था वह बनाये रखना है । आप देखें कि दूसरे देश के लोगों ने जो इस देश की रक्षार्थ बीड़ा उठाया था वह इस देश के नेताओं और जनता के मनोबल के कारण ही उठाया है । इसलिये मैं आपसे यह प्रार्थना करूंगा कि आप मनोबल को न गिरने दें । मुझे यह कहने में तनिक भी संदेह नहीं है कि साम्यवादी पार्टी भारत की, इटली की, और फ्रांस की, ने जो प्रस्ताव पास किया था उन्होंने भी हम को बल प्रदान किया है । इस संकट काल में हमको प्रत्येक पार्टी और प्रत्येक व्यक्ति की सहयोग की आवश्यकता है । हमको अपने देश के लिये अपनी जानें न्योछावर करने के लिये तैयार रहना होगा ।

दूसरी बात आक्रमण के सिलसिले में कही गई । वह यह कि १५ वर्ष से आप ने क्यों नहीं अपनी रक्षा के लिये समुचित साधन जुटाये थे । उसके संबंध में यही कहूंगा कि नेहरू जी तक ने वह त्रुटि मंजूर की है इसलिये उसको बराबर दोहराना ठीक नहीं है । मैं समझता हूं कि वह बात आपसे छिपी भी नहीं होगी । नेहरू जी का एक स्वप्न था कि एशिया और अफ्रीका यह दोनों संसार के बड़े महाद्वीप संसार में मिलकर एक उदाहरण प्रस्तुत करेंगे और जनतंत्र प्रणाली को और ऊंचा स्थान प्रदान करवाने की कोशिश करेंगे । उनकी कोशिश थी कि प्रतिक्रियावादी शक्तियों का जोर यहां से खत्म हो जाय । पर उनके इस स्वप्न को धक्का लगा है । उन्होंने इस पर काम किया । परन्तु खेद की बात है कि उनके इस स्वप्न को साकार होने में चीन ने बड़ी बाधा पहुंचाई है । हमने दूसरे देशों की सहायता से अपने धन और रिसोर्सेज को इस देश के उत्पादन को बढ़ाने में लगाया है और उसके लिये दूसरे देशों से, अमरीका आदि से सहायता भी ली है । आप देखें कि यह स्टील के बड़े-बड़े कारखानें स्थापित किये गये हैं और बड़े-बड़े बांध बनाये गये हैं । हम उनकी जगह अस्त्र और शस्त्र भी जमा कर सकते थे और उनके कारखाने भी बना सकते थे । यह सब हमने इसीलिये किया कि हमारा यह विश्वास था कि दुनिया में सैन्यबल ही सब कुछ नहीं है । हम अहिंसा और सत्य में विश्वास रखते थे । हमारे उस विश्वास की नींव को चीन ने आघात पहुंचाया है । हम परम्परा से और सदियों से शांति और अहिंसा के पुजारी रहे हैं । आपको मालूम होगा कि हमने दुनिया को शांति का पाठ पढ़ाया है । यह वह देश है जिसने जो कहा है वह अमल भी किया है । हमारे यहां गौतम बुद्ध और महात्मा गांधी जैसे महात्मा पैदा हुए हैं जिन्होंने सारे संसार को शांति और अहिंसा का उपदेश दिया है ।

परन्तु हमारी मान्यताओं और विश्वासों को चीन ने जो क्षति पहुंचाई है वह अक्षम्य है । हमारे देश ने पंडित नेहरू के नेतृत्व में देश में औद्योगीकरण करने का सफल प्रयास किया है । मैं यह कहता हूं कि दूसरी पार्टियों ने भी उसमें बड़ी सीमा में योगदान किया है । मैं यह भी कहता हूं कि दूसरी पार्टियों में भी बड़े व्यक्ति हैं और हर पार्टी में वह होते हैं । साथ ही साथ कुछ कुर्सी का भी प्रभाव होता है । परन्तु यह मानने से कोई भी इन्कार नहीं कर सकता है कि संसार की सहायता के लिये और संसार को बार-बार युद्ध की भयावह स्थिति से बचाने के लिये नेहरू जी से बढ़कर कोई दूसरा व्यक्ति नहीं मिल सकता है । वह हमारे देश के एक ऐसे रत्न हैं जो कि सारे संसार के लिये एक आदर्श है । मैं बड़े दुख के साथ फिर कहता हूं कि उनके जिस स्वप्न को चीन के आक्रमण से ठेस पहुंची है वह बड़ा ही दुखद है । हमको चीन से ऐसे व्यवहार की आशा कदापि नहीं थी । मेरी आप से यही प्रार्थना है कि आप अब उनका हाथ मजबूत करने में सहायता प्रदान करें और कोई भी ऐसा कार्य न करें जो कि मर्यादा के विरुद्ध हो और देश की एकता को एवं अखंडता को क्षति पहुंचाने वाला हो । हमको नैतिक स्तर को बनाये रखना है और

[श्री धर्मदत्त वैद्य]

संगठित रहना है । अपने कार्यों के द्वारा हमको अपने नेताओं का हौसला बढ़ाना है जिससे वह चीन के आक्रमण का मुकाबला करने में सक्षम रहें । हमारी जनता भी यह अच्छी तरह से समझ चुकी है कि अब उसे अपनी सीमाओं की रक्षा बाहरी हमलों से खुद करनी है और शत्रु को पीछे हटाने के लिये हर संभव प्रयत्न करना है । हमको तभी आराम करना है जब हम उसको अपनी सीमाओं के परे खदेड़ दें । मेरा आपसे यही निवेदन है । इन शब्दों के साथ मैं यह कहना चाहता हूं कि यह ५ करोड़ की कोई बहुत बड़ी संख्या नहीं है । मैं यह भी कहता हूं कि गरीब किसानों से पैसा लेकर कोई हमारी बहुत बड़ी आमदनी नहीं हो जायेगी । लेकिन इस संकट के समय हर सोर्स को हमें देखना होगा । शांति के बाद अगर हम इस बिल को लागू करें, या और कोई खामियां हों, तो आप बाद को उन्हें कह सकते हैं, आलोचना कर सकते हैं । आज तो हमें अपने सभी साधनों को जुटाना है । आज अगर हम यहां बैठ कर ऐसी बातें करेंगे तो उन बहादुरों का, जो हमारी सीमाओं पर लड़ रहे हैं, मनोबल नीचा होगा और अखबारों में जब यह बातें पढ़ेंगे तो उनको ठेस लगेगी । इसलिये हमें इन सब बातों का खयाल करके धैर्य से काम लेना चाहिये, सरकार के हाथों को मजबूत करना चाहिये । इसके अलावा जब हमारी गलतियां इकट्ठी हो जायेंगी तो उनसे तो आपको अपनी पार्टी के हित में प्रचार करने का एक अवसर मिलेगा । इन शब्दों के साथ मैं इस बिल का समर्थन करता हूं ।

श्री चन्द्रजीत यादव—श्रीमन्, मैं प्रस्तुत विधेयक का समर्थन करने के लिये खड़ा हुआ हूं । कल से इस सदन में जो वातावरण पैदा हुआ है उसको देख कर मुझे बड़ा खेद हुआ है और बड़ी ठेस लगी है । जब हम पिछली बार यहां से उठ रहे थे, हमने राष्ट्रीय संकट को देखकर, उस दुश्मन से मुकाबला करने के लिये, जो लगातार हमारी धरती पर बढ़ता चला आ रहा था, इस बात का आश्वासन दिया था कि अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा के लिये हम सरकार के हाथ मजबूत करेंगे । हम इस बात को जानते थे कि जब किसी राष्ट्र के ऊपर बाहरी देश हमला करता है तो उस वक्त देश की रक्षा की जिम्मेदारी शासक दल की होती है । हमारे मतभेद कुछ भी हों, उनको हम आगे चल कर निबटा सकते हैं, लेकिन जिस वक्त देश की आजादी खतरे में हो उस वक्त इन मतभेदों पर विवाद करना देश की एकता को तोड़ने की बात पैदा करना है, मनोबल को तोड़ना है और वह देश भक्ति के विरुद्ध है । मैंने जन संघ के नेता माननीय दुबे जी को सुना, पी० एस० पी० के रामायण राय जी को सुना, और उसको सुनने के बाद मुझे पंडित नेहरू जी का भाषण याद आ गया जो उन्होंने रामलीला ग्राउंड में, देहली में, २ लाख सरकारी कर्मचारियों के सामने दिया था और कहा था कि आज देश के अन्दर ऐसी प्रतिक्रियावादी ताकतें हैं जो इस संकट के समय हमारी बुनियादी नीतियों को बदलना चाहती हैं, जो यह चाहती हैं कि हम अपनी वैदेशिक नीति को बदल दें । उन्होंने कहा कि आज अमेरिका और इंगलैंड हमें बिना किसी शर्त के सहायता दे रहे हैं, लेकिन उनके दोस्त आज इस देश के अन्दर सौदेबाजी कर रहे हैं । राष्ट्रीय सुरक्षा के साथ कोई सौदेबाजी नहीं होती । आज इस तरह की सौदेबाजी करना, कोई शर्त लगाना, देशभक्ति नहीं है । यह भी कहा गया कि इस विधेयक को पेश करके सरकार ने एकता को तोड़ दिया है । इस बिल के पेश होने से एकता भंग नहीं हुई । एकता भंग हुई उस समय जबकि हमारी सीमाओं पर हमारी जमीन जा रही थी बालांग और बोमडिला गिर रहे थे उस समय ये काली ताकतें जनता का मनोबल तोड़ रही थीं । वे नेतृत्व को बदलने की मांग कर रही थीं और सरकार के नेतृत्व के ऊपर निकम्मेपन के दोष लगा रही थीं । एकता उस वक्त टूटी थी । बुनियादी चीजों के ऊपर एकता बना करती है । जो ताकतें बुनियादी नीति को नहीं मानती हैं और राष्ट्रीय संकट के समय कहें कि समाजवाद ढोंग है, जिन्होंने कहा कि नियोजन को छोड़ दो, यह ढोंग है, जिन्होंने कहा कि जवाहरलाल जी को बदलो, यह देश को नहीं बचा सकते हैं, उनके साथ कामनग्राउंड और एकता की तलाश करना भूल है । इस प्रकार की एकता की तलाश करने वाले वास्तविकता की, दुनिया में नहीं हैं । इस राष्ट्रीय संकट में एक चीज यह भी सामने आई है कि देश में प्रतिक्रियावादी जो आज तक चेहरों पर नकाब लगाये हुये हैं, उनके चेहरों

से नकाब हट कर असली शक्ल सामने आ गई है । हमारी जनता महान है । हम अपनी आजादी की रक्षा कर सकते हैं और करेंगे ।

श्री राधेश्याम शर्मा--मेरा व्यवस्था का प्रश्न है ।

श्री उपाध्यक्ष--क्या है ?

श्री राधेश्याम शर्मा--मैं आपके सामने यह प्रश्न रखना चाहता हूं कि जिन बातों का विधेयक से सम्बन्ध है वे ही बातें कही जानी चाहिये, तरह-तरह की आलोचनायें यहां हो सकती हैं ।

श्री उपाध्यक्ष--डिबेट का जो ट्रैंड है उसका जवाब देना जरूरी हो जाता है । आपकी तरफ से जो बात कही गई उसका जवाब दे रहे हैं ।

श्री चन्द्रजीत यादव--हमारे मित्र भानुप्रताप सिंह जी ने बड़ी संजीदगी से एक सवाल उठाया है । उस पर विचार करना चाहिये । आज इस देश के ही नहीं, सारे संसार के आदमी जानते हैं कि अगर किसी राष्ट्र की रक्षा करनी है तो वह केवल मोर्चे पर ही नहीं हुआ करती है । जब तक राष्ट्र की पैदावार नहीं बढ़ेगी, हमारे पास कल-कारखाने नहीं होंगे, बिजली नहीं होगी, देश आर्थिक दृष्टिकोण से मजबूत नहीं होगा, कोई भी राष्ट्र अपनी आजादी की रक्षा आज की दुनिया में नहीं कर सकता । क्या यह सच नहीं है कि पिछले दिनों में जब गोआ में अपने देश के एक अंग को हम आजाद कर रहे थे, उस समय यही साम्यवादी देश थे जिन्होंने मजबूती के साथ कहा कि गोआ भारत का अंग है और उसके दूसरी ओर साम्राज्यवादी देशों ने कहा था कि गोआ पर हिन्दुस्तान ने आक्रमण किया है । काश्मीर की लड़ाई जब हम लड़ रहे थे तो किसने हमारी मदद की ? जब हम अपने देश में एक नयी अर्थ-व्यवस्था कर रहे हैं, जब हमें बिजली और इस्पात के बुनियादी कारखाने चाहियें, जब हमें अपने देश में पेट्रोलियम के कुयें चाहिये, सारी की सारी साम्राज्यवादी ताकतों ने, अमेरीका और ब्रिटेन ने इस काम में हमारी मदद करने से इंकार कर दिया था; उन्होंने कहा कि इस देश में पैट्रोल के कुयें नहीं हैं यहां बुनियादी कारखाने नहीं बनने चाहिये । उन्होंने हिन्देस्तान को अपने खेमें में खींचने के लिये सारी बातें कीं । उस समय इन साम्राज्यवादी देशों ने मदद नहीं की । इन कामों में हमारी सहायता केवल सोवियत संघ और समाजवादी देशों ने की और हिन्दुस्तान जैसे देश ने अन्तर्राष्ट्रीय जगत में अपनी सार्वभौम सत्ता को कायम रखा ।

कहा गया कि रूस ने हमारी मदद नहीं की । केन्द्रीय सरकार के वित्त मंत्री ने अभी पार्लियामेंट में कहा है कि रूस ने तृतीय पंचवर्षीय योजना के लिये जितने कमिटमेंट्स किये थे, चाहे वे मिग्ज देने के रहे हों या बिजली के कारखाने लगाने के रहे हों, सारे के सारे पूरे किये हैं । आज अमेरीका और इंगलैंड ने यह जुर्रत नहीं की कि किसी भी बुनियादी हथियार को बनाने के लिये यहां कारखाने लगाये जावें । वे कारखाने अपने ही यहां रखना चाहते हैं । ये सब बुनियादी बातें हैं । इनसे मालूम होता है कि किस देश का हमारे प्रति क्या रूख है ।

श्री रामसुन्दर पांडेय--व्यवस्था का प्रश्न है, उपाध्यक्ष जी ।

श्री उपाध्यक्ष--क्या ?

श्री रामसुन्दर पांडेय--माननीय वक्ता यह कह रहे हैं कि अमरीका जो मदद दे रहा है वह बिलकुल जाल है और पूंजीवाद का प्रसार कर रहा है और रूस हमारी मदद कर रहा है । इस प्रकार का भाषण देने की हमारी पालिसी नहीं है । हमारी पालिसी तो यह है कि.....

श्री उपाध्यक्ष--आपका भाषण नहीं हो सकता है इस समय ।

श्री चन्द्रजीत यादव—माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं उन्हीं बातों का उत्तर दे रहा था जो यहां उठाई गई थीं । मैं आशा करता हूं कि जिन सवालों को उन्होंने उठाया उनका जवाब भी सुनने की उनके अन्दर क्षमता होगी ।

हमारी पार्टी ने बहुत स्पष्ट शब्दों में कहा है कि आज राष्ट्र की आजादी की रक्षा के लिये दुनिया का कोई भी देश जो हमें हथियार देता है, हमारी सहायता करता है, हम उस सहायता को लेंगे, इसलिये कि आज हमारा सर्वोपरि कर्तव्य है कि अपनी आजादी की रक्षा करें । हम उन देशों के आभारी हैं जिन्होंने हमारे संकट काल में हमारी मदद की । लेकिन अगर कोई देश यह चाहे कि हिन्दुस्तान को वह अपने खेमे में खींच सकता है तो वह नहीं हो सकता क्योंकि हिन्दुस्तान की जनता अब जागरूक हो गई है । इस राष्ट्रीय संकट के समय में आज हिन्दुस्तान की ४४ करोड़ जनता ने एके का परिचय दिया है । लेकिन हम इस बात को भी नजरअन्दाज नहीं कर सकते कि कुछ पार्टियां इस एके को भंग कर रही हैं ।

(व्यवधान)

कहा गया कि हिन्दुस्तान की जनता का मनोबल टूट जायगा अगर हमने लगान को बढ़ाया । श्रीमन्, हिन्दुस्तान की जनता का मनोबल जो इस समय देखने को मिला है, आजादी की लड़ाई लड़ने वाले कहते हैं कि वैसा मनोबल आजादी की लड़ाई के समय भी देखने को नहीं मिला । इस समय जो जनता का मनोबल टूटते देखते हैं, वे अपनी सूरत ही शीशे में देख रहे हैं ।

(शोर)

श्री कल्पनाथसिंह—क्या सरकार इस बात का ऐलान करेगी कि कम्युनिस्ट जो गिरफ्तार किये गये हैं और जिनके बारे में पार्टी प्रस्ताव कर रही है, वे कब छोड़े जायेंगे ।

श्री चन्द्रजीत यादव—मैं समझता हूं हमारे दोस्तों को तकलीफ हो रही है इसलिये कि उनकी असली शक्ल जनता के सामने आ रही है । आज सदन का एक-एक सदस्य अपने दिल पर हाथ रख कर पूछे कि जब यह असेम्बली उठ रही थी तो श्री गेंदा सिंह जी और सोशलिस्ट पार्टी तथा जनसंघ के सदस्यों ने भी क्या यह नहीं कहा था, और इसी सदन के सामने कि राष्ट्रीय संकट के समय इस बिल को वापस ले लिया जाय और हम सब बैठकर यह बतलायेंगे कि देश की रक्षा किस प्रकार से हो । हम सरकार को बधाई देते हैं कि उसने नेताओं की बैठक बुलाई और जो चीज एक राय से पास हुई उसको सदन के सामने रखा । लेकिन कुछ लोगों के द्वारा उस विश्वास को तोड़ा जा रहा है, यह अच्छी बात नहीं है । चीनियों ने विश्वासघात किया, वह अन्तराष्ट्रीय जगत में अकेला रह गया और उसके बादरों ने भी उसका साथ नहीं दिया । उसी प्रकार से इस संकटजकीघड़ी में जो विश्वासघात करते हैं, उनका भी वही हाल होने वाला है । इन शब्दों के साथ मैं यह विश्वास दिलाना चाहता हूं कि हमारी पार्टी तमाम ऐसे कामों में सरकार के साथ है जो आज राष्ट्रीय सुरक्षा के लिये किये जा रहे हैं । आज हमारी एकता केवल जवाहरलाल जी के कारण है क्योंकि वे करोड़ों भारतियों की आकांक्षाओं, उनकी भावनाओं, उनके आदर्शों का प्रतिनिधित्व करते हैं । हमारी नीति एक तटस्थता की नीति है अगर उस पर कोई हमला होगा तो हम उसकी हर प्रकार से रक्षा करेंगे ।

श्री ए० सी० ग्राइस (नाम निर्देशित आंग्ल भारतीय)—उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप मुझे इजाजत दीजिये कि मैं अंग्रेजी में बोलूं । आज ऐसा मौका नहीं है कि टूटे फूटे लफ्जों में अपनी बात को रखूं । (कुछ सदस्य—अंग्रेजी में नहीं)

श्री उपाध्यक्ष—बात यह है कि ऐसा हमारे रूल्स में नहीं है । जैसी हिन्दी आप बोल सकते हैं, वैसी बोलें । आप ऐसा करें कि आप अंग्रेजी में कह कर उसको हिन्दी में बता दीजिये ।

श्री ए० सी० ग्राइस—Sir, I would like to say that if Gandhi Ji, Father of the Nation were alive to-day to lead us against the Aggressors, what he would have done. He would not have asked us for showing non-co-operation

or for non-payment of taxes. Is it going to lead us to victory if we are asked not to co-operate or not to pay taxes? Certainly not, Sir, I am confident that had Gandhi Ji been alive to-day to lead us, he would not have taken the implements of War which he took against the British. The time now is passed, Sir, and gone, when we can argue and when we can say and do things which will divide the Community, the country and the Nation, divide us more and more. (Noise) I beseach the Members of the Opposition to give me a chance to speak. There is much heat being generated, a lot has been said, which time and history may record, has not been to the benefit or suited to the dignity of this House or to the benefit of the country. I would, Sir, ask the Opposition to pay a little heed. When I spoke during the general debate I asked that we should stop and considering where we were going to, but to see what is our ultimate destination. Again Sir, I ask all of them to consider the ultimate result of our discussions.

I oppose, Sir, the resolution before the House that this Bill should be sent to a Select Committee. I oppose it not bec use the money does not come out of my pocket or that some Members will only pay annas four in the rupee and the others will pay more. I support it on principle that not only this Bill but any Bill brought before the House during this Emergency to raise funds should get not only quick passage but the blessings of all the Sections. I also request the Government to bring forth not one Bill but lay on the table of the House Bills which will tax not only the peasants but also, Sir, the rich, the people who can afford to pay. At the moment, may I with your permission say that all the Bills passed so far, including this one, which will eventually be passed,—I pray God that he will give us the strength to throw out the Aggressors out. If the peasants also play their part, as they are doing, why should anybody object to it ? If the peasants are un-willing to pay, how can they be a party to victory unless they are taxed. They must feel that they are not only giving their money—the usual taxes—but they are giving hard earned money. Some of my friends have said that they cannot affrod to give. I agree with them. But this is not the time to consider it. It is the time when we have got to create within ourselves that urge to give not only through taxation but also to give voluntarily. So I beseach all the House, my Hon'ble friends in the Opposition inclusive, but whatever has been said let them think over that carefully. Before they waste any more money, any more time, their own time, and the time of this House in futile discussion. Words will not win this War. It will be hard fighting. I would like to take some of these gentlemen to the Base Hospitals where they can see for themselves the suffering that has been caused by the unpreparedness on our fronts. If they realise that, they would agree that this is not the time for such discussions. In their hearts at least they would say that this is some thing not to be trifled with and that it is something very much more serious. It is a very serious matter and I beg you, gentlemen, on both sides, not to waste any more time. Let us not sit here uselessly, and if I may use unparliamentary language, let us not stupidly waste our time here discussing something which we know has got to be done. Let us get ahead and throw them out.

I thank you, Sir, for this opportunity and I hope that both Sections will now cease all this talk, and pass this Bill.

Thank you, Sir.

श्री उपाध्यक्ष—इसका हिन्दी में उल्था तो कर दीजिये।

श्री ए० सी० ग्राइस--श्रीमन्, इस सरकार द्वारा जो बातें हो रही हैं उन सब का मैं समर्थन करता हूं और मेरा यह सजेशन है कि इस बिल को सेलेक्ट कमेटी में भेजने का जो मोशन है उसे वापस लिया जाय और इस बिल को पास किया जाय।

श्री रघुनाथसिंह (जिला वाराणसी)--उपाध्यक्ष महोदय, यह बैठक संकटकालीन बैठक के रूप में बुलायी गयी थी, लेकिन इस मनहूस विधेयक को लाकर इस बैठक को ही संकट ग्रस्त बना दिया गया है। इसलिये कि जो जोतकर विधेयक पिछली बैठक में आया था उसी की प्रेतात्मा के रूप में यह विधेयक आया है। हमारी जनता में और सरकार तथा विरोधी दल के बीच पिछली बैठक में बहुत ही सुन्दर एकता कायम हो गई थी जब कि उस पहले विधेयक को वापस कर लिया गया था। मैं समझता हूं कि उस एकता को भंग करने को यह विधेयक लाया गया है, इसीलिये मैं इस विधेयक को उस जोतकर विधेयक की प्रेतात्मा कहता हूं। सचमुच ही इस संकट की घड़ी में यह बड़ी ही दुखदायी बात हो रही है।

मान्यवर, आप कल्पना करें कि किसी माता का केश दुश्मन की मुट्ठी में हो और उसके लड़कों से बड़ा लड़का छोटे भाइयों से यह कहे कि देखो, माता का केश दुश्मन की मुट्ठी में है, तुम सपूत बेटा बन कर हमारी बातों को मानो, हमसे सहमति प्रकट करो लेकिन हमारे लिये कोई सम्मति न दो, क्योंकि अगर तुम लोग अपनी सम्पत्ति दोगे तो हमारी उलझनें बढ़ जायेंगी। आप कल्पना करें कि जब उसका सपूत बेटा जो घर का मालिक हो, वही अपने भाइयों से इस तरह का प्रवचन करे तो उसके छोटे भाइयों को इस तरह से इत्मीनान दें जब कि उनकी माता का केश दुश्मन के हाथ में पकड़ा हुआ हो। उसी तरह से हमारे तथा कथित बड़े भाई कांग्रेसी लोग जिनकी सरकार बनी हुई है, इस संकट की घड़ी में हमसे काम के लिये तो पैसा देने की बात कहते हैं। लेकिन जब हम उसके लिये अपना कोई सुझाव देते हैं तो उसे मानने के लिये तैयार नहीं हैं। इस संकट की घड़ी में इससे अधिक दुख की बात और क्या हो सकती है?

पिछले सोमवार, तीन दिसम्बर, को जब विरोधी दल के नेताओं और मंत्री लोगों की बैठक हुई तो उसमें मैं भी गया था और वहां आधे घंटे तक उन सबकी बातें सुनता रहा। अगर कोई मंत्री किसी बात को कहता था और विरोधी दलों में कोई नेता किसी सुझाव के विषय में स्पष्टीकरण मांग देता, तो दूसरा मंत्री वही पहली बात करने लगता था और इसी तरह से एक के बाद एक मंत्री लोग बोलते रहे। वहां तमाम संकट के मामले में संस्कृति व परम्पराओं की बातें होती रहीं, जिस तरह की बातें अक्सर मंत्री लोग यहां कहते रहे हैं। इस बीच मैंने कहा कि विरोधी दल के नेताओं से सहयोग लिये जो आप लोग कहते हैं वह तो ठीक है, लेकिन पहले आप लोग भी कुछ ऐसे काम कीजिये जिसमें हम लोगों को भी कुछ सहमति देने की गुंजायश मिले और हम भी जनता से कह सकें कि सरकार यह काम कर रही है। जिन्होंने कई-कई मास से जाड़े के लिये कम्बल खरीदने को थोड़े से पैसे बचाते रहे थे और वह पैसे भी दे डाले, आज गरीब मजदूर भी दिन भर की मजदूरी देकर भूखा सो जाता है तो मंत्रि-मंडल के त्याग की बात तो उचित ही है। अगर ऐसी भावना त्याग की सरकार में बनती तो इस तरह के बिल को लाने की आवश्यकता न होती। आपके त्याग करने से ३ लाभ होंगे, एक तो आप अगर लम्बा चौड़ा वेतन ८-९ सौ का छोड़ेंगे तो ज्यादा पैसा बचेगा। अगर कम्बल के बचाये हुए पैसे देने वाले गरीब के पैसे की सुरक्षा कोष के लिये कीमत है तो आप के वेतन की और ज्यादा कीमत है। आप अपने मंत्रि मंडल को छोटा कीजिये और दूसरे जो बेकार खर्चे हैं उनको बन्द कीजिये। पहले तो मुख्य मंत्री जी इसको टालते रहे लेकिन बाद में मेरे द्वारा स्पष्टीकरण मांगने पर बड़ी झुंझलाहट के साथ उन्होंने कहा कि बार-बार आप लोग मंत्रिमंडल को छोटा करने की बात कहते हैं, लेकिन आप समझते नहीं कि इससे हमारी परेशानी कितनी बढ़ जायगी।

यह हमारी पार्टी के अनुशासन की बात है जिस पर इसका प्रभाव पड़ेगा और हमारी उलझनें भी बढ़ जायेंगी। मैं एक निवेदन करना चाहता हूं कि जोतकर विधेयक को लेकर कम्यु-निस्ट दल, प्रजा सोशलिस्ट दल, जनसंघ दल और हमारे दल ने प्रदेश व्यापी आन्दोलन किये और तरह-तरह के प्रदर्शन इस बात को लेकर हुए थे। तो ऐसी हालत में अब अगर आप कहते हैं कि संकट है तो आप को मंत्रिमंडल के कम करने में क्या दिक्कत है, आपको उसमें उलझन है? जिन दलों ने उसका विरोध किया था उनके नेताओं को १२ और २१ तारीख के बीच, जब कि चीन की सेनायें आगे बढ़ रही थीं, देश घबराया हुआ था, चालाकी से बुलाया गया और संकट का हौवा दिखाकर उनमें अधिकांश से सहमति ले ली गई। आप की बड़ी पार्टी है, आप अपनी पार्टी के बारे में तो कहते हैं कि मंत्रिमंडल कम करेंगे तो उलझन होगी। हम अनुशासन से बंधे हैं लेकिन जब सारी पार्टियों का कुछ निश्चित प्रोग्राम है, अनुशासन का अंकुश उनका भी है तो आपने यह कैसे सोच लिया कि उनकी पार्टी के नेता अपने ऊपर सारी जिम्मेदारी लेकर आप को कह दें कि ऐसा बिल आप ले आयें और हम समर्थन करेंगे?

एक उदाहरण आप के सामने है, प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के नेता ने सहमति दी, उस पर उनको पार्टी में मतभेद हुआ और ईमानदारी से उनको नेता पद से हटना पड़ा। आपकी पार्टी का तो अनुशासन बिगड़ जायगा और दूसरों से आप चालाकी से बुलाकर संकट के समय इस विधेयक के लिये हां कराते हैं। अनुशासन की बात दूसरी पार्टियों में भी हो सकती है। आप का इस तरह से यह वादा लेने का तरीका ठीक नहीं था। आप १२ तारीख को नेताओं को पत्र लिखते और कहते कि ऐसा संकट है खर्च कम किया गया है और सारे सोर्सेज टेकिल किये जा चुके हैं और अब कोई चारा नहीं है और हम किसानों से लेवी लगाकर धन लेना चाहते हैं और आप कृपा कर देश के नाम पर हमारी मदद कीजिये और आप अपने दल के लोगों से सूबे की समितियों से इस विषय में आश्वासन ले लें लेकिन आप ने यह नहीं किया। आपने इतनी जल्दी की जिसका हद हिसाब नहीं है।

दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि हमारे कांग्रेस भाई बार-बार घुमा फिराकर यह कहते हैं कि विरोधी नेता लोगों ने वादा किया किन्तु उसको पूरा नहीं करते। हम भी घुमा फिरा कर यही कहते हैं कि आप मंत्रिमंडल कम कीजिये, छोटा करें। माननीय गोविन्द सहाय जी ने कल और आज श्री बहुगुणा जी ने बड़े जोर से कहा कि अगर किसी मंत्री के ही त्याग पत्र देने से आप लोग समर्थन कर सकते हैं तो मैं त्याग पत्र देने को तैयार हूं, त्याग तो बहुत बड़ी चीज है। जब आज सुरक्षा के नाम पर ऐसे भी लोग हैं तो दूसरी बात यह होगी जनता का मनोबल बढ़ेगा। २, ४ मंत्री त्याग करें तो उनकी देखा देखी दूसरे भी त्याग करेंगे? कहा भी गया है—"देखा देखी धर्म, देखा देखी पाप" और इस विषय पर जो इतना विवाद है वह भी स्वतः समाप्त हो जायगा। माननीय नियोजन मंत्री ने राणा प्रताप की बात कही जिन्होंने जननी जन्म भूमि के नाम पर घास की रोटी खायी। एक वह थे और एक आप हैं। जनता, समाचार-पत्र और हम सब कह रहे हैं, त्याग दो, लेकिन आप अपनी कुर्सी के लालच में उसको सुन हीं नहीं रहे हैं। राणाप्रताप तो राजा था, सुख में पला था, आप भी देश भक्त के रूप में देश की स्वतंत्रता में जाने कितने कष्ट उठायें हैं, क्यों नहीं मुख्य मंत्री यहां से हट कर पुराने जन नेता के रूप में जनता में जागरण की लहर फैलाते? लेकिन ऐसा नहीं करेंगे। राणा प्रताप की बात हमारे लिये तो कहते हैं, लेकिन आप अपनी कुर्सी को इस पापी पेट के लिये नहीं छोड़ेगें, इससे बढ़ कर आत्मप्रवंचना की बात और क्या हो सकती है? दोनों तरफ के बोलने वाले सदस्यों के उनके भाषणों से ऐसा आभास मिला कि इस बिल का विरोध करने वाले देशद्रोही हैं। मैं कहता हूं इससे बढ़कर छल कपट और देश को रसातल में डालने वाली बात और क्या हो सकती

[श्री रघुनाथसिंह]

हैं ? हम विरोध इसलिये कर रहे हैं कि जो जनता आज स्वेच्छा से चन्दा दे रही है वह उदार दानी न रह कर, क्रुद्ध असामी हो जायगी। यों तो चन्दे के रूप में आपको साल में कई बार पैसा मिल जायगा, लेकिन इस तरह से आप साल में एक ही बार लें सकेंगे। इसलिये हम विरोध कर रहे हैं कि उदार दानी .....

(इस समय ३ बजकर २५ मिनट पर श्री अध्यक्ष पुनः पीठासीन हुए।)

क्रुद्ध असामी बन जायगी आपके इस विधेयक से। अगर आप सचमुच देश भक्त हैं तो उस उदार दानी को क्रुद्ध असामी न बनायें, क्योंकि फिर आप दान नहीं पायेंगे और आप के इस पाप के साथ हम भी डूब रहे हैं। इसीलिये हम इसका विरोध कर रहे हैं। जो देश भक्त नहीं होगा वही इस बिल का समर्थन करेगा।

श्री बनवारीलाल विप्र (जिला आगरा)—अध्यक्ष महोदय, हमारे देश में जो वातावरण पैदा हुआ उसका कारण देश पर आया हुआ संकट है। संकट शब्द इतना विस्तृत है कि अगर इसकी गहराई में जायं तो हम एक बहुत बड़ी चीज इसमें देखते हैं। आज अगर हम इसके विस्तृत पहलुओं पर विचार करें तो निश्चय ही जो महत्वपूर्ण सहयोग सरकार के साथ होना चाहिये उसे नहीं दे सकेंगे। मैं संकट-कालीन स्थिति के बारे में कुछ महत्वपूर्ण बातों का जिक्र करूंगा। देश में एक ऐसा तूफान आया है जिसको लोग राष्ट्रीय एकता के नाम से पुकारते हैं। उससे लोगों ने अन्दाज लगाया है कि हमारे देश में हजारों वर्ष पहले तक इस प्रकार की राष्ट्रीय एकता नहीं दिखाई दी थी जो चीन के आक्रमण के बाद हासिल हुई है। दूसरा पहलू यह है कि उस मनोबल को कायम करने के लिये सदन में नेता लोग कहते हैं, उसको मजबूती के लिये हमको उन चीजों पर कायम रहना पड़ेगा जो आज से कुछ दिन पहले उन नेताओं से बातचीत करके तय हुई थीं। अगर हम सरकार की नीतियों पर नहीं चलते हैं तो जो राष्ट्रीय एकता कायम हुई है वह नहीं रहेगी। इस संबंध में मेरा निवेदन यह है कि सरकार के मन में कुछ नीतियां हो सकती हैं जिन पर चल कर यह मुमकिन हो कि किस तरह से हम डिफेन्स करें ताकि संकट टल जाय। तो इस संबंध में निश्चय करने के लिये संकटकालीन अधिवेशन शुरू हुआ, लेकिन नेताओं की पालिसी कुछ इस प्रकार की देखी गई जिसे अगर अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र से तुलना की जाय तो ऐसी प्रतीत होती है "वी एग्री टु डिसएग्री एन्ड वी डिसएग्री टु एग्री।" जो चीज आज तय हो जाती है कुछ दिन बाद चीजें ऐसा पलटा खाती हैं कि कुछ तय नहीं हो पाता। ऐसी बातें करके क्या हम देश को मजबूत कर सकेंगे जिसके लिये हम यहां जिम्मेदारी लेकर बैठे हुए हैं। इन तमाम चीजों को थोड़ा सा राष्ट्रीय भावनाओं के साथ दिमाग में तालमेल रख कर विचार करें तो निश्चय ही देश से बढ़कर कोई चीज नहीं है और देश की रक्षा के लिये हमारे प्राणों की आहुति तक की मांग की जायगी तो कदाचित् हम उससे भी पीछे नहीं रहेंगे।

२५ प्रतिशत टैक्स की बात आई है। हिसाब लगाया जाय तो कोई बड़ी रकम नहीं आती है। ६ महीने का सिलसिला है जिसमें गरीब अपना सहयोग दे सकता है और उसको देना भी चाहिये, लेकिन इसका विरोध करने की बात इसलिये है कि एक और वायदा यह किया जाता है कि सरकार के साथ सब लोग मिलकर मिनिस्ट्री के साथ हैं, सरकार का स्टीयरिंग पकड़ें, लेकिन दूसरी तरफ रस्सा बांध कर उसे पीछे खींचा जा रहा है। दूसरी तरफ जो प्रजातंत्र का हमारा तरीका है उसे कुछ नेता बदलने की बात सोच रहे हैं जिसके लिये हम सोचते हैं कि वह हमारा तरीका विश्व में मिसाल कायम करेगा ताकि विश्व में कोई अन्य डेमोक्रेटिक राज्य उसका मुकाबला कर सके और उसको मजबूत करने के लिये हम समाजवादी कन्धे से कन्धा भिड़ा कर काम करने की सोच रहे हैं।

मुझे घटना याद आती है कुछ फासिस्टवादी तत्वों की। हमारे देश के अन्दर कुछ ऐसी चीजें हैं जो कम से कम तथा किसी न किसी सूरत से यहां पर ऐसी स्थिति पैदा कर रही हैं तथा कुछ ऐसी नीतियां निर्धारित कर रही हैं जिनसे अराजकता फैले। देश में कुछ ऐसे समाज हैं जैसे कुछ वर्ग शोषित समाज के हैं जिनका नेतृत्व समाजवादी दल कर रहा है, अगर आजकल कोई नुकसान हो रहा है तो वह शोषित वर्ग को ही है, लेकिन साथ ही दूसरे पहलू पर भी ध्यान लगाना चाहिये कि संकट में बड़े लोग भी इसके अन्दर सहयोग दें। इसके साथ ही प्रत्यक्ष रूप से यह भी मालूम करना पड़ेगा कि गरीबों ने कितना-कितना सहयोग दिया है, इसकी हमें प्रोसीडिंग बनानी पड़ेगी तथा इसको रखना पड़ेगा जिससे आगे चल कर हम कह सकें कि संकट काल के समय गरीबों ने इतना सहयोग दिया था।

हमारा देश विश्व की पंचायत में बैठने वाला देश है। अगर आज हम चीन से हार कर विश्व की पंचायत में बैठेंगे तथा विश्व पंचायत में बात करेंगे और उस वातावरण के अन्तर्गत बात करेंगे जो ८ सितम्बर से पहले थी तो काफी भिन्नता होगी तो हम विश्व की पंचायत में सीना उठाकर नहीं बैठ सकेंगे और न सीना उठा कर बात ही कर सकेंगे जितनी कि आज तक करते आ रहे हैं।

हमको यह भी मालूम है कि इस हालत से जो कि आजकल है इससे बहुत बड़ा भार हमारी गरीब जनता पर होगा, लेकिन उसके साथ ही साथ जो महत्त्वपूर्ण डिफेन्स की चीजें हैं उनको भी देखना पड़ेगा। हमारी नारेबाजी से तो हमारा डिफेन्स का मसला तो हल नहीं होगा, इसके लिये तो हमें कुछ करना है, क्योंकि इस दिशा में अभी बहुत कुछ करने की आवश्यकता है। अगर आज हम यह सवाल करें कि सभी लोगों को राइफल की ट्रेनिंग दी जाय जिससे कि कुछ लोग ट्रेण्ड किए जा सकें तथा जिससे देश की रक्षा के लिये पर्वतीय रक्षा पंक्ति तैयार की जा सके और जिससे देश का डिफेन्स मजबूत हो सके तो मैं समझता हूं कि हमारे देश में इतनी राइफल्स नहीं निकल सकेंगी कि सभी नौजवान ट्रेण्ड हो सकें।

एक बात हमारे माननीय मंत्री जी ने भी कही थी कि जो पैसा अभी ले रहे हैं वह तो केवल नेशनल डिफेन्स फन्ड के अन्दर चला जायगा। लेकिन एक इमर्जेन्सी फण्ड या आवश्यक फन्ड होगा उसके भी टारगेट्स हैं वह कम से कम १० करोड़ रुपये का है। उसकी गारन्टी लेने वाला कोई दल नहीं हो सकता, क्योंकि सब से बड़ी जिम्मेदारी तो प्रदेश की सरकार पर है, अगर वह किसी भी चीज को (बिल) हटाती है तो इन तत्वों को यह मौका मिलेगा पब्लिक में प्रोपोगेन्डा करने के लिये कि सरकार डिफेन्स के मामले में टोटली फेल रही है। जैसे एक ओर डिफेन्स करने की तो सोचते ही हैं तथा दूसरी तरफ सरकार से यह भी कहते हैं कि यह नहीं होना चाहिए।

हमारी रिपब्लिकन पार्टी की तरफ से जितनी भी इकानामी होनी चाहिए तथा हो सकती है उसके लिए मुख्य मंत्री जी के पास लिखकर भेजा जा चुका है, लेकिन उसके साथ-साथ हम, जो डिफेन्स का मुख्य पहलू है, उसको देखें, क्योंकि उत्तर प्रदेश सीमावर्ती इलाका है और उस पर बहुत बड़ा उत्तरदायित्व है। अभी आपने नैपाल की मांग देखी। गोन्डा, बस्ती, बहराइच पर भी अपना प्रभुत्व बताया है। हमारे ये इलाके भी एक्सप्लोइट हो सकते हैं। ऐसी दशा में बराबर हमारी प्रदेशीय सरकार की यह जिम्मेदारी है कि वह ज्यादा से ज्यादा यहां पर ऐसे काम करे जिनसे कोई आवश्यकता पड़ जाय तो वह उसको पूरा करके इस प्रदेश की रक्षा कर सके। इसके साथ ही साथ मैं यह निवेदन करूंगा कि सरकारी पक्ष के लोगों ने कुछ ऐसी बातें कहीं कि हम लोग सरकार के साथ नहीं हैं और हमारे नेता लोगों ने जो वायदे किये थे उनसे वे मुकर गये हैं, लेकिन मैं आश्वासन दिलाता हूं कि सरकार के जो कदम उठेंगे रिपब्लिकन पार्टी उनके साथ है। यहां पर कुछ लोगों की पालिसी अस्पष्ट दिखाई देती है इससे

[बनवारीलाल विप्र, श्री]

जो हमें भय उत्पन्न हुआ है उसके लिये मैं निवेदन करूंगा कि ऐसे तावों पर सरकार निगरानी रखे जो सरकार को गलत रास्ते पर मोड़ने के लिये विवश करेंगे और साथ ही साथ भय उत्पन्न करने की कोशिश करेंगे जैसे कांग्रेस के लिये कहा जायगा कि वह ज्यादा लगान लगाकर अपनी मिनिस्ट्री को मजबूत करने को बात सोचती है। मैं निवेदन करूंगा कि सरकार इन चीजों को गंभीरता के साथ देखे।

मुख्य मंत्री (श्री चन्द्रभानु गुप्त)—अध्यक्ष महोदय, मुझे इस बात का दुख है कि मैं सदन में बराबर इस विधेयक के बिचार करने के समय उपस्थित न रह सका और इस कारण से मुझे उन साथियों के भाषणों को सुनने का अवसर प्राप्त नहीं हो सका जिन सदस्यों ने इस विधेयक के विरुद्ध अपने विचारों को प्रगट किया है। यह हमारा दुर्भाग्य रहा कि इस विधेयक का इस अवसर पर विरोध किया गया। जब हम आखिरी बार उठे थे चीन का आक्रमण हो जाने के उपरान्त उस समय जो वातावरण इस सदन में और इस सदन के सदस्यों ने, चाहे वे इधर के बैठने वाले हो चाहे उधर के बैठने वाले हों, सारे प्रदेश में उस वातावरण को पैदा करने की चेष्टा की थी, वह कार्य इन सब का सराहनीय था और उसने सारे प्रदेश में एक ऐसा मोड़ दिया जिससे प्रदेश की जनता प्रभावित हुई और अन्य क्षेत्र में भी उसका एक महावपूर्ण असर हुआ। यह हमारे लिये सौभाग्य की बात रही कि चीन के आक्रमण ने देश में ऐसी परिस्थिति पैदा कर दी कि जिस परिस्थिति ने सारे देश के नागरिकों को वह चाहें किसी तबके का हो, वह चाहे किसी दल का हो, वह चाहे किसी विचार का हो, सबका ध्यान एक ही तरफ आमंत्रित कर दिया, खींच दिया और ऐसी परिस्थितियां देश भर में पैदा कर दीं जिससे सारा संसार चकित-सा रह गया। जिन कमजोरियों से हम घिरे हुए थे, जिनके निवारणार्थ हम बहुत से सम्मेलनों में बैठते थे, कमेटियां नियुक्त करते थे और विचारकों के द्वारा समस्याओं को सुलझाने की चेष्टा करते थे, इस चीन के आक्रमण ने हमारे देश के सारे नक्शे को बदल दिया और उस नक्शे के बदल जाने के बाद देश का प्रत्येक नागरिक इस बात को महसूस करने लगा कि संकट की घड़ी में हम सब को उस दिशा में चलना है कि जिस दिशा में चल कर हम उस चीन का मुकाबला कर सकेंगे और उन कठिन परिस्थितियों के ऊपर विजय पा सकेंगे जो कठिन परिस्थितियां हमारे बीच में थीं। हमने देखा कि अपने देश को उन नीतियों के अन्तर्गत जो हमने बनायी थीं, देश को किसी लड़ाई में लड़ाने के लिये उस तरह से तैयार नहीं किया था जिस तरह से चीन ने हम से लड़ने के लिये अपने को तैयार किया, हमारे देश पर आक्रमण करने के लिये, अपने को तैयार किया था और हमारे देश की पवित्र भूमि को हड़प करने के प्रयास में उसने अपने को जुटाया था। सारे देश ने कठिनाइयां रहते हुए, उस उमंग और उत्साह का परिचय दिया जिस उमंग और उत्साह की तहत में सारा देश उमड़ पड़ा। ऐसे ही वातावरण में हमने अपने सदन का स्थगन किया और एक नया वातावरण बनाने के लिये विभिन्न दलों के साथियों ने, इस बात का वचन दिया कि वे इस देश की संकट की घड़ी के अवसर पर उस नये वातावरण के बनाने में अगुआ रहेंगे और उन सारे बोझों को भी उठाने के लिये उद्यत रहेंगे, जो बोझा इन परिस्थितियों के कारण इस संकटकालीन अवस्था के बीच में पड़ने वाले थे। लड़ाई का अवसर हर एक से त्याग की मांग करता है। हर एक को कठिनाइयां और दिक्कतें भुगतने की प्रवृत्ति को अपने अन्दर पैदा करने का मार्ग दिखाता है। लड़ाई का अवसर कठोर परिस्थितियों का मुकाबला करने के लिये हर एक को आमंत्रित करता है और यही बात थी जिसने विभिन्न विचारों के लोगों को, उन तमाम बातों के ऊपर विचार करने के लिये प्रेरित किया कि जो बातें हमारे बीच में साधन मुहय्या कर सकता है, जो बातें हमारे बीच में उन चीजों को प्रदान कर सकती हैं जिन चीजों की बुनियाद पर हम लड़ाई को तैयार कर सकते हैं, लड़ाई के साधन उपलब्ध कर सकते हैं और लड़ाई के साधन उपलब्ध करके सारे देश के प्रति वातावरण को जगा रखने का प्रयास कर सकते हैं, जो वातावरण सारे देश में पैदा

हुआ। विभिन्न विचारों के लोग, विरोधी दलों के प्रतिनिधिगण आपस में मिलकर बैठे और उन्होंने बावजूद इसके कि जो उनकी घोषित नीतियां थीं उनके विरुद्ध उन्हें कुछ अमल करना पड़ा, एक तहैय्या किया, एक निर्णय लिया और निर्णय उस वातावरण के अन्तर्गत लिया जो २४ अक्तूबर को कदाचित् जब हम उठ रहे थे उस समय हम सबने मिलजुल कर अपने बीच में बनाया था। यह हमारा दुर्भाग्य है कि वे विभिन्न दलों के नेतागण जिन्होंने उस नये वातावरण को बनाने के लिये एक भारी प्रयास किया, अपनी घोषित नीतियों और विचारों के विरुद्ध भी उन चीजों को अपनाने का प्रयास दिखाया, किन्हीं परिस्थितियों के कारण कुछ हमारे वे साथीगण अपने उस मार्ग से विचलित हो गये और विचलित होकर दुर्भाग्य से जो उस समय सब ने मिलकर तय किया था उस चीज के समर्थन में वे यहां इस सदन में बोल नहीं सके। मैं नहीं जानता कि क्या परिस्थितियां कुछ साथियों के बीच में पैदा हुई, परन्तु जो भी परिस्थितियां पैदा हुई हों मैं इतना ही कह सकता हूं कि वे परिस्थितियां अवश्य ऐसी हैं कि जिनसे प्रत्येक के हृदय में चिन्ता पैदा होती है और कभी-कभी उन उच्च आदर्शों से प्रेरित होकर हम एक वास्तविकता का मुकाबिला करने के लिये कुछ अप्रिय निर्णय भी लेते हैं तो वह वातावरण जोकि उन आदर्शों के वातावरण से हमें विचलित करता है, अलाहिदा करता है, वह हमारे बीच में क्षोभ की प्रवृत्तियां पैदा करता है। मैंने एक साथी को जब यह बात मुझे विदित हुई कि वह साथी उस विधेयक का समर्थन नहीं करेंगे तो उन्हें यह लिखा था कि उनकी इस नीति ने मुझे बहुत आघात पहुंचाया और मैं आज अध्यक्ष महोदय, यह निवेदन करना चाहता हूं कि जो मैंने उन साथी को लिखा था मेरे भाव और विचार आज भी उसी प्रकार के हैं और मैं ऐसा एहसास करता हूं कि उन साथियों ने जिन्होंने कि अपनी रजामन्दी देकर उस रास्ते का समर्थन नहीं किया जो कि सबकी रजामन्दी से तैयार हुआ था, उन्होंने मुझे और इस सदन के अधिकांश लोगों को आघात पहुंचाया क्योंकि राजनैतिक जीवन में, सार्वजनिक जीवन में सदा हमारे बीच में ऐसे अवसर आते रहते हैं जब हमें कुछ परम्पराओं के अन्तर्गत कार्य करना पड़ता है और लड़ाई का अवसर एक ऐसा अवसर होता है कि सबको अपने विचारों को जेब में रखकर कुछ परम्परायें बनाने का कार्य करना पड़ता है। तब हम सब मिलकर लड़ाई में मुकाबिला कर सकते हैं विरोधी का, दुश्मन का और तब हम एक वातावरण वैसा बना सकते हैं कि जिससे जो उमंग और उत्साह से बढ़ रहे हैं वह हमारे पीछे चल सकें और हमारी उन चीजों को पालन कर सकें जिनका निर्देश समय-समय पर सार्वजनिक जीवन के नेतागण, अधिकारीगण और साथीगण जनता के बीच में करते हैं। मैं उस तर्क को समझ नहीं पाया जिसने कुछ साथियों को अपनी उस बात से विचलित किया जिस बात को पूरा करने की स्वीकृति उन्होंने स्वतः दी थी और उन्होंने यह कह कर उस मार्ग से विचलित होने की अभिलाषा प्रकट की कि साथीगण इस उद्देश्य के समर्थक नहीं हैं। मैं उन व्यक्तियों में से हूं कि जो ऐसा मानते हैं कि कभी-कभी ऐसे अवसर आते हैं कि जो दल के विशेष व्यक्ति होते हैं उनको बहुत बड़ी मात्रा में बहुत से विचारों का नेतृत्व करना पड़ता है और साथियों को नेतृत्व करके राजी करना पड़ता है और उनको राजी कर के उस दिशा में चलने के लिये प्रेरित करना पड़ता है जिस दिशा में चल कर वे उस उद्देश्य को प्राप्त कर सकते हैं कि जिसकी पूर्ति करने के लिये हम वचनबद्ध होते हैं। हम कुछ फैसले करते हैं। यह हम सब के लिये बड़े अफसोस और दुख की बात है कि वे नौजवान साथी जो किसी जमाने में उस गुरुतर भार को अपने कंधों पर ओढ़ेंगे, आने वाले वर्षों में और जिन्हें देश की बहुत-सी समस्याओं का समाधान करना पड़ेगा, यदि उन परम्पराओं के विपरीत कार्य करने लगते हैं तो उससे दुख तो होता ही है परन्तु उससे उस आशा को भी धक्का लगता है कि जो आशा कल जो हमारे नागरिक जीवन के अगुवा बनने वाले हैं और जो देश और प्रदेश का नेतृत्व करने वाले हैं, उनसे की जा सकती है, और वे इस प्रकार उस आशा को हमारी नजरों से ओझल करने की चेष्टा करते हैं। कल का नेतृत्व उन के हाथ में होगा जो आज यद्यपि उस उम्र के नहीं हैं जो उम्र बहुत से उन साथियों की हो चुकी है जिन्होंने वर्षों तक सार्वजनिक जीवन में कार्य किया है। ऐसे साथियों से, भले ही वे दूसरे विचार रखते हों, मुझसे विपरीत विचार रखते हों, हम सब उन उच्च आदर्शों के पीछे चलने की भावना उत्सुकता से उन के अन्दर पैदा होते हुए देखना चाहते हैं और उन उच्च

[श्री चन्द्रभानु गुप्त]

आदर्शों की भावना को उन के अन्दर प्रदर्शित होते हुए देखना चाहते हैं और उनसे मैं निवेदन करना चाहता हूं कि जो बात इस अवसर पर सदन में कुछ साथियों द्वारा कही गयी उसने हमारी राजनीतिक चेतना को हमारे राजनीतिक व्यवहार के सिलसिले में जो परम्परायें बननी चाहिये उनके विषय में ऊंचा उठाया नहीं है। मैं कदाचित् ऐसा अनुभव करता हूं कि फिर से उस तंग दायरे में हम लोग घिर गये हैं जो कभी-कभी दलगत नीतियों के अन्तर्गत हमें ऊंचा उठने नहीं देता है, लेकिन आपको यह मालूम होना चाहिये कि लड़ाई का अवसर एक ऐसा अवसर है जबकि हमको दलगत नीतियों से ऊपर उठने की बहुत आवश्यकता होती है। वह हमें ऊपर उठने के लिये मार्ग प्रदर्शित करती है। आज भी इस अवसर पर जब कि यह विधेयक विचारार्थ प्रस्तुत है। इस सदन में तो मैं यह कहना चाहता हूं कि आज हमको इफ्स और बट्स की जरूरत नहीं है। हमको एक उत्तरदायित्व सम्भालना है और इसलिये हमको विचारों की एकता को कायम रखना है। हमको उन भिन्न विचारों का त्याग करना है जो कि कभी हम प्रकट कर चुके हैं। उनको दबाकर हमको काम करना है, उनको दूर रखकर काम करने की आज नितान्त आवश्यकता है। मैं यह मानता हूं कि ऐसे अवसर पर वे साथी हमारे साथ सहयोग कर रहे हैं जिनसे कि इस बात की आशा थी कि वे उन तंग दायरे से निकल कर कार्य करेंगे और ऊंचा उठने की चेष्टा करेंगे, परन्तु हमारे कुछ साथी अपने को उस दायरे से नहीं निकाल सके हैं। उनको परिस्थितियों ने कुछ इस प्रकार घेर लिया है कि वे उस मार्ग को पकड़ नहीं पाये हैं। वह स्वतः उस पर चलने की चेष्टा करना चाहते थे। आप को मैं एक बात और बता देना चाहता हूं कि लड़ाई के वातावरण में उसके जमाने में धन का करोड़ों में अपव्यय होता है। अभी तो लड़ाई केवल छुई-मुई हुई है। वास्तव में लड़ाई तो अभी हमने देखी नहीं है। मैं समझता हूं कि अबतक करोड़ों का अपव्यय हो गया होगा, करोड़ों रुपया खर्च हो गया होगा। युद्ध में लड़ाई के साधनों को भी पीछे हटते समय खत्म कर देना पड़ता है, किसी स्थान से उसको छोड़ते समय ऐसा करना अनिवार्य हो जाता है। जब दूसरी जगह पर हम को मोर्चा लेना होता है तो उस समय बहुत क्षति होती है। इसलिये जिस सरकार के सिपुर्द हमने लड़ाई के कार्य भार को संभालने के लिये कर दिया है कि वह दुश्मन से मोर्चा ले तो उस सरकार के प्रति इतना तो विश्वास प्रकट करना ही होगा कि वह ठीक से अपने कार्यों को संचालित कर सके। अपने सुझावों को सरकार के समक्ष रखकर और इस बात की आशा करके कि वह जहां तक हो सकेगा उन सुझावों पर अमल करेगी और चेष्टा करेगी अपने मौजूदा खर्चे में से हर संभव कमी करने की, तथा अधिक खर्चे के साधनों को निकालने का भरसक प्रयत्न तो यह सरकार करेगी ही। इतना विश्वास तो आपको करना ही पड़ेगा और इसकी आज आवश्यकता भी है। इसलिये बार-बार यह कहना कि सरकार अपने खर्चे में कमी नहीं कर रही है और यह आरोप लगाना कि वह अपनी ओर नहीं देख रही है और एक ही बात की बार-बार दुहाई देना कि मन्त्रिपरिषद् बड़ी है, बड़ा अनुचित है। जहां अरबों रुपया खर्च होने वाला है, वहां इस बात को बार-बार दोहराना कोई अच्छी बात नहीं है। मन्त्रि परषद् में करीब ४२–४३ आदमी हैं और उनमें १२–१३ वे हैं जो इस सदन के सदस्य हैं और उनको हमने कुछ थोड़ा सा सुबीता दे रखा है। उस पर करीब ८०–९० हजार रुपया खर्च होता है। तो उसकी बराबर चर्चा करना और यह कहना कि जब तक हम यह नहीं करेंगे, तब तक आप समर्थन नहीं करेंगे, उचित नहीं है। जहां पर अरबों रुपया खर्च होने वाला हो, जहां अरबों रुपया का अपव्यय होने वाला हो, वहां हमारे वे साथी जो डेमोक्रेसी में हमारी मदद करना चाहते हैं, वे अगर प्रत्येक क्षेत्र में ऐसा वातावरण पैदा करें कि हमारे बीच में एक असंतुलन पैदा हो जाय, तो यह कोई बुद्धिमत्ता की बात नहीं होगी। आप यह कह सकते हैं कि यह सरकार न रहे, यह नेता न रहें। आखिर जो नेता चुना गया है, वह अपने उत्तरदायित्व को समझता है, वह अपने साथियों के बीच में उनके सहयोग से काम करना चाहता है, आज उससे आप यह चाहते हैं कि वह यह कर दे, तो मैं बहुत नम्रतापूर्वक यह कहना चाहता हूं कि सारे भारतवर्ष में यह सबसे बड़ा प्रदेश है और यदि यहां आनरेरी पार्लियामेंट्रीज सचिवों को छोड़ कर ३२ या ३१ आदमी हैं, तो मैं पूछना चाहता हूं कि आज बम्बई में, महाराष्ट्र प्रदेश में, मन्त्रियों और डिप्टी मिनिस्टर्स की संख्या कितनी है?

आज उनके इमाल्यमेन्ट्स कितने हैं ? यदि उनसे हमारा आप मुकाबला करें तो हमने प्रारम्भ में ही अपने इस मन्त्रिपरिषद् के सिलसिले में यह दृष्टिकोण अपनाया है कि उसका खर्चा कम से कम हो, उसके लिये हमने बराबर प्रयास किया है कि उसमें कमी आये। मैं नहीं समझता कि आज हजार रुपये अगर मन्त्री को मिलते हैं, जब कि अन्य प्रदेशों में १,५०० रुपये हैं तो यह कौन-सी बड़ी भारी रकम है जिस पर बार-बार आपत्ति की जाती है और जनता का ध्यान आमंत्रित करने की चेष्टा की जाती है और यह कहा जाता है कि यह मन्त्रिगण बड़े ऐशोआराम में जिन्दगी बसर करते हैं। मैं यह निहायत अदब के साथ कहना चाहता हूं कि अगर इस सरकार के नेता में आपको विश्वास नहीं है तो आप यह कह सकते हैं कि दूसरी मन्त्रि परिषद् बनानी चाहिये। यह सवाल आप कर सकते हैं, मगर बराबर उसी बात को दोहराना ठीक नहीं है। क्या आप चाहते हैं कि एक ही आदमी जिस तरह से सरकार को चलाता है, सारे सरकारी कर्मचारी जिस तरह से सरकार को चलाते हैं, एक ऐडवायजरी रिजीम की सरकार जिस तरह से चलती है, उसी प्रकार से यहां कार्य हो ? गणतन्त्र में लड़ाई लड़ने के लिये एक दूसरी तरह की फिजा बनानी पड़ती है, उसमें डिक्टेटरशिप नहीं चलाई जा सकती। गणतन्त्रवाद और अधिनायकवाद में फर्क होता है। अधिनायकवाद में चाहे अधिकारियों पर दुगना, चौगुना खर्चा हो जाय किन्तु गणतन्त्र में यदि चुने हुए व्यक्तियों पर कुछ खर्चा अधिक हो जाय और उसकी बराबर चर्चा की जाय, यह विवाद किया जाय कि उन्हें हटा दिया जाय, ठीक नहीं है। मैं समझता हूं कि जो हमारा उद्देश्य है, जिस उद्देश्य को लेकर हम इस लड़ाई के अवसर पर कार्य करना चाहते हैं, यह उस उद्देश्य के विपरीत है। जहां तक कटौतियों का सवाल है, यह सवाल सदा ही हमारे सामने रहा है। हमारे कुछ साथी एकोनामिक कमेटी में बैठे हुए हैं, हमसे भिन्न विचार वाले व्यक्ति भी उसमें हैं, हमारे कुछ और साथी भी हमें अपने सुझाव दे रहे हैं, उन सबके विचारों पर हम विचार करेंगे और बिना अपने उद्देश्यों की पूर्ति को दिक्कत में डाले हुए अगर हम कुछ कटौती कर सकते हैं तो अवश्य ही करेंगे। हमारे वित्त मन्त्री जी भी हमारे उन साथियों को बता चुके हैं, कुछ रूप रेखा कटौतियों के बारे में प्रस्तुत कर चुके हैं और कुछ सदन के समक्ष अवसर आने पर फिर प्रस्तुत करेंगे। यह बात नहीं है कि यह सरकार जहां खर्चा कम हो सकता है वहां भी नहीं करना चाहती है। प्रत्येक क्षण हमारा और हमारे अधिकारियों का इसी में समय व्यय होता है कि हम किस तरह से कहां खर्चा कम कर सकते हैं।

अब कुछ ऐसे भी प्रश्न हैं जो आल इंडिया स्तर से सम्बन्ध रखते हैं और जिनको हमारे साथी अक्सर उठाया करते हैं। वे कहते हैं कि स्पेशल पे को समाप्ति कर दिया जाय। उसको हम काट भी सकते हैं। लेकिन अगर केन्द्र में उनको स्पेशल पे मिलती रहेगी और हमारे यहां समाप्त हो जायगी तो हमारे यहां के जो अच्छे-अच्छे अधिकारी हैं वे यहां से चले जाने का प्रयत्न करेंगे। इसलिये सारे भारतवर्ष में हम जिस नीति के मातहत चल रहे हैं क्या उसके विपरीत काम करना हमारे लिये ठीक होगा ? हमारी यह इच्छा जरूर है कि कभी प्लानिंग कमीशन की सलाह से हम इस बात पर विचार करें कि इस प्रकार का खर्चा सब प्रदेशों में कर दिया जाय। क्या आज उत्तर प्रदेश में जो कई क्षेत्रों में और दूसरे प्रदेशों से पिछड़ा हुआ है हम ऐसा वातावरण पैदा करें जिसमें हमारे अधिकारी और कर्मचारी सदा यह सोचते रहें कि उनकी तनख्वाह कब कम की जा रही है, कब उनको हटाया जा रहा है, आज तो हमें सबों का मनोबल ही ऊंचा करना है। हां, यह हो सकता है कि आज यदि कहीं किसी व्यक्ति की आवश्यकता नहीं तो उसको वहां से हटाकर उस जगह लगायें जहां लड़ाई की वजह से उसकी अत्यन्त आवश्यकता है। इसी उद्देश्य को लेकर हम काम कर रहे हैं और ऐसा प्रयत्न करते हैं कि कर्मचारियों को उन स्थानों पर लगाया जाय जो कार्य लड़ाई के अवसर पर बढ़ रहे हैं। आज एकोनामी की बात इस तरीके से रखना कि इनको निकालना है, यह सही मनोवृत्ति नहीं है। आल इंडिया कंटेस्ट में हमारी जो मनोवृत्ति होनी चाहिये वैसी नहीं है। यह नहीं हो सकता कि बराबर के प्रान्त बिहार में कोई आदमी एक तनख्वाह पाये और हमारे यहां उससे कम तनख्वाह मिले। इस सारे प्रश्न पर तो पीस टाइम में विचार हो सकता है और सारे भारतवर्ष के नक्शे को ही सामने रख कर ऐसा किया जा सकता है। मैं इस सदन को इतना ही विश्वास दिलाना चाहता हूं कि जहां तक

[श्री चन्द्रभानु गुप्त]

कमी व कटौती का प्रश्न है वह चीज हमारे सामने है और वह सारी चीजें इकोनामी कमेटी के सामने आयेंगी और वहां उन पर विचार होगा। जो हमारी दिक्कतों के सम्बन्ध में साथीगण ने कटौती व कमी करने की बात रखी है वे भी हमारे समक्ष हैं। जहां हम कटौती कर सकते हैं वहां कटौती करेंगे और यदि आवश्यक हुआ तो अधिकारियों को एक जगह से दूसरी जगह भी ले जायेंगे। साथ ही बहुत-सी चीजें ऐसी हैं जिन पर हम खर्च नहीं करेंगे और उस खर्चे को बचा कर उन आवश्यक कार्यों में लगायेंगे जिनको आजकी दशा में प्राथमिकता देनी है। हमारे वित्त मन्त्री जी ने और योजना मन्त्री जी ने अपने सारे अधिकारियों के साथ जिनमें हमारे संचालकगण व विभिन्न विभागों के सचिव गण थे, करीब १०० घंटे तक बैठ चुके हैं और वहां उन्होंने जो विचार विमर्श किया और जिस नतीजे पर वे लोग पहुंचे हैं उस नतीजे की तहत में हम कुछ कमी करने वाले हैं। अभी कल ही की बैठक में हम कुछ दिशा में कमी करने जा रहे थे, लेकिन हमारे उन साथियों ने हमें सुझाव दिया कि नहीं, इस विषय में कमी नहीं होनी चाहिये, इस विषय में कटौती नहीं होनी चाहिये। इस तरह से हम आपस में विचारों का आदान-प्रदान करके एक दूसरे को समझे और जहां हम कटौती करना चाहते थे वहां हमें एक दूसरे के विचारों से पता लगा कि नहीं इस विषय में कटौती नहीं होनी चाहिये। इस प्रकार विचारों के आदान-प्रदान द्वारा और जानकारी के द्वारा हम बहुत-सी कमी व कटौती उन सारे स्थानों पर करना चाहते हैं जहां कि उनका करना नितान्त आवश्यक है।

अभी भी लोग एक भ्रम में पड़े हुए हैं जब कि इस सदन में कई दफा यह सूचना मैं दे चुका हूं कि जितना हमारा ऐडमिनिस्ट्रेटिव खर्चा है वह अन्य प्रदेशों के मुकाबले में कम है। पिछले बजट के अवसर पर माननीय वित्त मन्त्री जी ने भी आंकड़ों से इस बात को सिद्ध कर दिया था। यह कहना कि हमारा ऐडमिनिस्ट्रेटिव कास्ट बहुत लम्बा चौड़ा है यह बिलकुल भ्रमात्मक बात है। यदि आप और प्रदेशों के ऐडमिनिस्ट्रेटिव खर्चे के आंकड़ों का अध्ययन करें तो आपको मालूम होगा कि हमारा ऐडमिनिस्ट्रेटिव खर्च और प्रदेशों के मुकाबले में कम है। इस बात को इस सदन में मैं कई दफा व्यक्त कर चुका हूं। जिस पैटर्न का हमारा शासनतन्त्र है क्या आप समझते हैं कि यदि सेंट्रल गवर्नमेंट या बम्बई या बिहार के मुकाबले में यहां के अधिकारियों की तनख्वाह कम रहे, तो कोई अधिकारी यहां रहना पसन्द करेगा? यहां फिर कोई रहना नहीं पसन्द करेगा। यह बात हमेशा सामने रखी जाती है कि जो चीज आवश्यक हो और उसे स्थगित किया जा सकता हो तो उसे स्थगित कर दिया जाय। हमारे वित्त मन्त्री जी भी इस बात को बता चुके हैं। बार-बार राजनीतिक दृष्टिकोण को सामने रख कर इस तरह की बात कुछ साथियों द्वारा उपस्थित करने की चेष्टा करना अच्छा नहीं है और वे हमारे साथ न्याय नहीं कर रहे हैं। जो वातावरण वे अब तक बना चुके हैं उस वातावरण को वे स्वतः खतम करने की चेष्टा कर रहे हैं।

यह जो विधेयक आया है जिसमें किसानों की मौजूदा मालगुजारी पर २५ प्रतिशत बढ़ाने की बात है यह तो समय और मौके के अनुसार आया है और जो इमर्जेंसी पीरियड के लिये ही है। मैं इस बात को मानता नहीं हूं कि किसान इस बिल से अपने मार्ग से विचलित हो जायगा, जो उमंग और उत्साह वह दिखा रहा है उससे हटकर वह निरुत्साहित हो जायगा। मैं उन व्यक्तियों में से हूं जो प्रदेश के कोने-कोने में घूमने की चेष्टा करता हूं और कह सकता हूं कि इस दौरान में भी मैंने काफी दौरा किया है, मैं काफी देहातों में गया हूं और काफी ऐसे क्षेत्रों में गया हूं, जहां गरीब ही बसते हैं और वहां मैंने इस विधेयक की चर्चा भी की है और इस विधेयक के सम्बन्ध में पूरा प्रकाश डाला है, लेकिन मैंने तो कहीं किसी भी किसान को आज की परिस्थिति में जो आज देश की हालत है, जो संकट देश पर आया हुआ है, उस संकटकालीन अवस्था में कहीं भी इस विधेयक के विरोध में कहते हुए नहीं सुना है। हजारों की संख्या में भी मैंने लोगों को वहां सम्बोधित किया है और कहीं-कहीं बहुत से स्थानों पर लाखों की संख्या भी रही है, लेकिन कहीं ऐसा विचार व्यक्त नहीं हुआ है। तो यह कहना कि किसान मार्ग से विचलित हो जायगा, किसान के साथ

न्याय करने की बात नहीं है। यह एक ऐसा अवसर है कि जब सारे देश के नागरिकों का एक विशेष उत्तरदायित्व है हमें एक ऐसे मास अवेयरनेस को कायम करना है जिसके तहत में हमें काम करके सब को बताना होगा कि जो दुश्मन दगाबाजी से हमारी सीमाओं पर बैठा है और जो हमसे मुकाबला करना चाहता है उसका मुकाबला करने के लिये हमें कैसी तैयारी करनी है। हमारी फौजी सुरक्षा के लिये कदम उठाये गये हैं लेकिन यह भी सही है कि जहां फौज काम करेगी वहां हम इस प्रदेश में जिस की सीमायें दुश्मन की सीमाओं से मिलती हैं और जिस की सीमाओं पर दुश्मन घुसा भी हुआ है, यदि उस दुश्मन का मुकाबला करना है तो यह आवश्यक है कि हम उत्तरोत्तर अपने प्रदेश के निवासियों के दिल में यह भावना पैदा करते रहें कि हमें हर हालत में उस विश्वासघाती दुश्मन का मुकाबला करना है। हमें यह विश्वास नहीं था कि हमें ऐसा करना पड़ेगा जिसको हमने पंचशील का साथी समझा था, जिसके साथ हमने सहअस्तित्व का नारा लगाया था, उसने उन सिद्धान्तों को भूलने की चेष्टा की और जिन विचारों को उसने अपनाया और उनकी घोषणा की थी उन्हीं के विरुद्ध उसने काम किया। हमारे प्रति उसने पड़ोसी के नाते का भी परिचय नहीं दिया जिसका परिचय देकर ही हमने उसका सम्मान किया और हमने उसको राष्ट्रसंघ में स्थान दिलाने की चेष्टा की, ऐसे पड़ोसी का हमें मुकाबला करना है। क्या आज हमारे ऊपर यह जिम्मेदारी नहीं है कि हम सचेष्ट रहें, जागृत रहें और आज हम ऐसी कोई अवस्था अपने बीच में पैदा न करें जिस से साधन इकट्ठा करने में बाधा उत्पन्न हो। लड़ाई के जमाने में साधनों की बड़ी आवश्यकता होती है। हमारा वित्त विभाग और सचिव और मन्त्रिगण सब इस बात की तरफ सचेत हैं कि जहां भी एकोनामी की जा सकती है, वह की जाय। मेरा विश्वास है कि राजनैतिक प्रपंचों को दूर करके कोई भी इस सदन का सदस्य न होगा कि जिसके हृदय में यह उत्सुकता नहीं है कि हमारा प्रदेश ऐसी अवस्था में जब उसे हमले का शिकार बनना पड़ा किन्हीं दशाओं में कमजोर पाया जाय, ऐसा पाया जाय कि उसकी तैयारी अमुक चीज में नहीं थी। आज हमें उस वातावरण से ऊपर उठना है। मैंने अभी बताया कि हम तो पड़ोसी से लड़ने की तैयारी में थे नहीं, न हमारे देश की सरकार ने कभी इस बात की कल्पना की थी कि चीन इस प्रकार से आक्रमण करेगा, परन्तु जो सबक उसने दिया है क्या उससे हम सचेत नहीं होंगे? और यदि जागृत होंगे, सचेत होंगे तो क्या उस उत्तरदायित्व का तकाजा नहीं होगा कि हम कोई भी ऐसी चीज के करने में बाधा न डालें जिससे हमारे बीच में वह कमी दिखाई पड़े जो कभी-कभी राष्ट्रों को, प्रदेशों को, दिक्कत में डाल देती है, कभी-कभी सिविल पापुलेशन को उस देश की दिक्कत में डाल देती है। तजुर्बे ने हमें कुछ सिखाया है, उससे फायदा उठाते हुये आज हमारा कर्तव्य है कि हम अधिक से अधिक साधनों को इकट्ठा करने की चेष्टा करें, अधिक से अधिक जनता को, व्यक्तियों को उस खतरे की अवेयरनेस से बराबर परिचित रखें। यह नहीं जो खतरा हमारे बीच में है उससे हम उस किसान को दूर रखें। किसान स्वतः उत्सुकता दिखाता है, उमंग रखता है, वह किसान जो अपने बच्चों को देश की आजादी की रक्षा करने के लिये १५, १६ हजार फीट की ऊंचाई पर इस सर्दी में, पाले में, बर्फ में वहां भेजता है, वह किसान हमारा साथी है जो सदा हमारे बीच में हमारी मदद करता रहा है, वह आज २५ फीसदी लगान अधिक देगा। क्या उससे वह अपना मुंह मोड़ेगा? कदापि नहीं। जो किसान अपने बच्चे को दुश्मन से लड़ने के लिये भेज सकता है उससे भी ज्यादा क्या कोई कीमत हो सकती है? यदि आज आपस में तय करके साधनों को इकट्ठा करने के लिये कोई बात तय करते हैं तो अगर हम किसान को उस मार्ग से विचलित करने की कोशिश करें तो मैं समझता हूं हम अपने उत्तर-दायित्व से उस किसान को दूर कर रहे हैं।

मैं फिर से अध्यक्ष महोदय, आपकी आज्ञा से विभिन्न विचारों के साथियों से निवेदन करता हूं यह अवसर ऐसा नहीं है जिसमें हम आपस में दाव-पेंच की बात करें और राज-नीतिक दाव-पेंच आपस में खेलने की चेष्टा करें। यदि ऐसा करेंगे तो दुर्भाग्य की बात होगी और उस वातावरण के प्रतिकूल होगा जो हम देश में पैदा करना चाहते हैं। मैं अनुगृहीत हूं उन सभी साथियों का जिन्होंने अपने विचारों की विभिन्नता रखते हुए भी इस विधेयक का समर्थन

[श्री चन्द्रभानु गुप्त]

किया और मैं इस आशा से अपनी जगह लूंगा कि वे साथीगण जिन्होंने आवेश में आ कर इस विधेयक का विरोध किया है वे समय की गम्भीरता को देखते हुये अपने को ऊंचा उठायें और उन विचारों के दायरे में अपने को न फंसायें जिनमें कभी राजनीतिक दल में रहते हुये अपने को लोगों के बीच में प्रदर्शित करने की चेष्टा करते हैं। यदि इस दृष्टिकोण को अपनाकर वे विधेयक का समर्थन करेंगे तो वे उन विचारों के अगुवा बन कर रहेंगे जिनके अगुआ बन कर हम सब ने सारे देश में एक नई एकता पैदा करने का परिचय दिया और जिसकी तहत में उस एकता ने सारे संसार को प्रभावित किया। आज यदि ७४ देश दुनिया के हमारे राजनीतिक दृष्टिकोण से सहमत हैं और बड़े-बड़े देश हमारा समर्थन कर रहे हैं और हमारी सहायता करने को उद्यत हैं वे इसलिये उद्यत हैं कि हमने बहादुरी और एकता दिखाई है और वह जोश दिखाया है जो सदियों के बाद देखने को हमें इस देश में मिली है। इन चन्द शब्दों के साथ इस विधेयक के सम्बन्ध में विभिन्न विचारों के साथियों से मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि वे इसका समर्थन करें और उस उच्च आदर्श का परिचय दें जिस आदर्श का उन्होंने २४ सितम्बर को तिलक हाल में परिचय दिया था प्रदेश की जनता के समक्ष। मैं इस विधेयक को सदन के समक्ष इस आशा के साथ अपने सहयोगी राजस्व मन्त्री जी की भावनाओं के साथ रखता हूं कि आप इस पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करेंगे और आशा करता हूं कि जो शब्द और जो दृष्टिकोण मैंने आपके सामने प्रस्तुत किया है वह आपके दिल में अपने लिये स्थान बनायेगा।

*श्री हिम्मतसिंह (जिला बुलन्दशहर)---माननीय अध्यक्ष महोदय, जो बिल प्रस्तुत है उस पर माननीय उपप्रधान ने जो संशोधन दिया है उसका मैं समर्थन करता हूं। समर्थन करने का मुख्य कारण यह है कि आज किसान पर जो दो तरफा मार पड़ रही है उसको किसी ने नहीं सोचा है। जिस समय श्री जेड० ए० अहमद ने भाषण दिया तो इस सदन का ट्रेंड ही चेंज हो गया। हर आदमी अपनी बचत के लिये इस बिल की आड़ लेने लगा। जेड० ए० अहमद साहब ने अपनी सफाई बड़ी खूबसूरती के साथ दी। श्री चन्द्रजीत यादव ने लोगों को प्रतिक्रियावादी कह कर खूब कोसा। जेड० ए० साहब ने कम्युनिस्टों की वकालत करते हुये कहा कि फारमूसा में बैठे होने पर भी च्यांग काई शेक जो कम्युनिस्ट नहीं है उसने भी यही कहा कि मेकमोहन लाइन के दक्षिण का भी इलाका कम्युनिस्ट चीन का ही है। जेड० ए० अहमद साहब जहां कम्युनिस्ट चीन का दृष्टिकोण रख रहे थे वहां उन्होंने भारत का दृष्टिकोण और अपनी पार्टी का दृष्टिकोण नहीं बतलाया कि हमारा दावा कहां तक है और तिब्बत जो चला गया है उसको लेंगे या नहीं लेंगे। इस तरह वह चीन की वकालत अच्छे ढंग से कर गये। इस देश के लिये क्या चाहिये, लड़ाई की हालत में क्या करना चाहिये, प्रोक्डशन बढ़ना चाहिये, सुरक्षा होनी चाहिये इसमें दो रायें नहीं हो सकतीं। मैं इसको मान कर चलता हूं और सोचता भी हूं कि आ आज हमारे प्रोजेक्ट बन रहे हैं, उत्पादन में जो सहायता दी जा रही है, इसको न रोका जाय और उन पर बिना सोचे समझे आंखे बन्द कर स्वीकृति दे दी जाय मैं इसका पक्षपाती हूं।

आज हमारे सामने सवाल दूसरा भी है और वह यह कि किसान पर दो तरफा मार पड़ रही है। उस पर विचार करना पड़ेगा। मेरे जिले में किसान ने स्वेच्छा से ८ आना पर बीघा इस चन्दे में देने की स्वीकृति दी और चन्दा वसूल हुआ, लेकिन किसान को मालम हुआ कि उसके लगान पर टैक्स बढ़ने जा रहा है तो वह तिलमिलाया और उसने चन्दे में ढील कर दी। हमको इस पर विचार करना पड़ेगा। किसान यह समझता था कि जो उसके पास सम्पति है समाज की उसका व कस्टोडियन है, उसकी वह रक्षा कर रहा है और वही मनोवृति आज भी काम कर रही है। आप सब कुछ ले लीजिये उससे उसको उफ नहीं होगी

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

लेकिन यह हमको देखना पड़ेगा कि एक तरफ तो उसकी सम्पति में से कुछ हिस्सा हम प्राइम मिनिस्टर डिफेंस फंड में ले रहे हैं और दूसरी तरफ उस पर टैक्स लगा कर ले रहे हैं तो ले लीजिये वह तो कुछ नहीं कहेगा, लेकिन प्रोडक्शन पर जरूर असर पड़ेगा और इससे उसका मनोबल आप तोड़ेंगे, । इस पर आपको विचार करना पड़ेगा। एस० डी० एम०, बी० डी० ओ०, लेखपाल, डी० एस० ओ०, सभी तो जाते हैं उस किसान के पास और अपनी अपनी रसीद बहियां उसको मढ़ते हैं।

आज मुझे मालूम है कि जिला बुलन्दशहर के अन्दर जो मजिस्ट्रेट हैं वह रसीद बही लेकर एक-एक किसान के पास जाते हैं और पैसा वसूल करते हैं, यहां तक कि १००–१०० रुपये तक वसूल करते हैं। अगर माननीय मन्त्री जी इन सब बातों को बन्द करने के लिये तैयार हैं तो जो प्रधान मन्त्री का कोष खुला है तथा जो लोग बुलन्दशहर के अन्दर २७ लाख रुपया इस कोष में देने के लिये कहते हैं वह क्या इस बढ़ोत्तरी के बाद भी दे सकेंगे ? मेरे जिले के अन्दर एक शुगर मिल है जिसने पहले एक चन्दा ५० हजार रुपये का दिया था और सुरक्षा के सवाल पर सिर्फ १० हजार का ही चन्दा दिया है। यह देखने की बात है और देखना भी चाहिये। जो दे सकता है उससे लेना पड़ेगा। मैं यह भी जानता हूं कुछ ऐसी फर्में हैं जो टैक्स दे सकती हैं और उनको टैक्स देना चाहिये तथा एक ऐसी भी फर्म है जिसपर काफी टैक्स बाकी है, परन्तु अदा नहीं हो पाया है। ये लोग अपनी सुरक्षा की बात सोचते हैं। तो मैं माननीय मन्त्री जी से कहूंगा कि अपनी मशीनरी को भी जरा कस दें जिससे कि हमारा रुपया जाता है वह बच जायेगा। माननीय मन्त्री जी ने भी अपने भाषण में कहा था कि किफायत करेंगे, लेकिन यह धारणा हर एक के दिल में घर कर गई है कि आज संकट आ गया है जिसके जरिये से प्रत्येक चीज हमको देखनी पड़ेगी वह यह कि हर चीज को कम करें, क्योंकि हमको संकट का मुकाबला करना है । क्या किसान के बेटे पर ही लड़ाई का भार पड़ेगा ? आप जरा महाराजा प्रताप को देखिये, राम चन्द्र जी को देखिये उस समय की लड़ाई में भी सब लोगों के साथ गरीबों का भी सहयोग था। आज वही होने जा रहा है, लेकिन आपको और भी कुछ उनके साथ में रियायत करनी पड़ेगी और देखना पड़ेगा कि लोगों को और चेतना देने की आवश्यकता है। आज प्रजातन्त्र के युग में हरएक को समानता में लाना पड़ेगा। आप को यह भी साफ करना पड़ेगा कि जो १८ प्रतिशत वाली बात कही जाती है उसमें भी जिनके लोग मिलेटरी में जाना चाहते हैं वह भी पीछे हटते हैं, ऐसी बात तो नहीं है कि उनमें संख्या कम है अवश्य कोई बात है। इसे सिर्फ बात ही नहीं समझना चाहिये, बल्कि सोचना चाहिये। लेकिन उनको कैसा लगता है। आज हमने देखा कि मौका मिल गया लोगों को कि अपनी-अपनी पार्टी की बहुत खूबी के साथ वकालत कर रहे हैं। हम टैक्स क्यों बढ़ा रहे हैं, क्या बढ़ा रहे हैं और कहां-कहां कटौती कर सकते हैं, यह बात हमें सोचनी पड़ेगी। आज हमारे बी० डी० ओज० के पास जीप कार हैं उनका इस्तेमाल कैसे होता है। मैंने देखा है कि लोग उनमें बैठकर गंगाजी के घाट पर जाते हैं या अलीगढ़ सिनेमा देखने के लिये उनका इस्तेमाल किया जाता है, क्योंकि वे अपने क्षेत्र में घूम नहीं पाते हैं। इसलिये उनसे ये जीप वापस ले ली जायं। मैं जानता हूं कि अब भी संकटकालीन स्थिति में अधिकारी लोग टी० ए० बनाते हैं और कभी-कभी तो इनका टी० ए० इतना अधिक हो जाता है जो इसके लिये धन निर्धारित होता है उससे भी ज्यादा बढ़ जाता है। यह बात हम लोगों को सोचनी पड़ेगी। आज लड़ाई लड़ने के लिये मुख्य मन्त्री जी ने वार लोन लिया होता और उसका भुगतान कैसे हो इसके लिये तैयार हो जाता कि जितना चाहे किसानों से ले लीजिये। वार लोन लेना चाहिये। अगर मन्त्री जी कहें कि ५ करोड़ रुपये का सवाल है कहां से आयगा तो आप इसकी जिम्मेदारी हमारी पार्टी पर छोड़ दीजिये और हम एक हफ्ते के अन्दर रुपया जमा करके दे सकते हैं क्योंकि हममें रुपया इकट्ठा करने की सामर्थ्य है। पहले आप जो रुपया बेकार पड़ा है या मिसयूज हो रहा है उसको लेने का प्रयत्न करें। कच्चे आढ़तियों पर आप टैक्स लगा दीजिये तो काफी रुपया आ जायगा, क्योंकि सारा रुपया घपले में चला जाता है। इसके अलावा सेल्स टैक्स बढ़ा दीजिये।

*श्री बलवानसिंह—श्रीमन्, मैंने बड़े गौर से मुख्य मन्त्री जी का भाषण सुना और मुझे ऐसा लगा कि इधर के विरोध होने से उनका ऐसा खयाल है कि जो त्याग की भावना है या जो मुल्क कुरबानी चाहता है उसमें हम रुकावट पैदा कर रहे हैं। विरोधी दल से मेरा खयाल है सोशलिस्ट पार्टी और प्रजा सोशलिस्ट पार्टी, इनकी न ऐसी भावना है और न रहेगी। हमारा एक ही उद्देश्य था और वह साफ है कि आपके इस बिल के लाने से ५ करोड़ की वसूली का जो आपका उद्देश्य है, उससे साढ़े सात करोड़ जनता का उत्साह गिरेगा और कोई उद्देश्य नहीं है। अगर सरकार की तरफ से किसी किस्म में मेजरमेंट्स आयेंगे तो हमारा पूरा-पूरा सहयोग होगा। इसको समझकर हमने कहा कि किसानों से वसूल न करें, इसपर मुख्य मन्त्री जी ने खयाल बना लिया तो यह उनका भ्रम है और मुझे खुशी हुई कि कम्यूनिस्ट पार्टी कांग्रेस का साथ देने को तैयार है तो एक समाजवाद का नक्शा बन रहा है। समाजवाद का यदि कम्यूनिस्ट पार्टी साथ देती है तो हमें सोचना होगा। हमारा पड़ोसी देश नेपाल है। इसके अन्दर एक अखबार छपा है। चीन के अन्दर पांचवीं छठी क्लास के बच्चों के सामने नक्शे में दिखाया गया है कि कितने ही एशियाटिक कन्ट्रीज उसके अंग हैं। सन् १९१४ और सन् १९३८ में इम्प्रीरियालिस्टिक पावर्स का जो इटेंशन था, जो भावना हिटलर की थी, वही भावना कम्यूनिस्ट चीन के अन्दर आ गयी है। चीन का ख्वाब था कि क्यूबा के अन्दर वेस्टर्न पावर्स उलझ जायंगी और वह हिन्दुस्तान को चीरता हुआ चला आयेगा, लेकिन चीन का वह ख्वाब टूट गया। रूस ने इस दुनिया को मिटने से बचा लिया। लेकिन रूस ने भी अपनी फौजें भेज कर पोलैंड को रौंदा था। आज कम्यूनिज्म एक नयी शक्ल के अन्दर आ रहा है। उस ने हिन्दुस्तान की १४ हजार वर्ग मील भूमि को हड़प लिया। आज चीन वियटनाम, बरमा, मलाया पर, अपना अधिकार बता रहा है। मंगोलिया रूस से मांग रहा है। आज चीन, जिसकी करोड़ों की तादाद में फौज है, जानबूझ कर हिन्दुस्तान की जमीन के अन्दर घुसा। चीन की टैक्टिक्स है कि असन्तोष पैदा करो और कम्युनिज्म का प्रचार करो। आज पीकिंग रेडियो से पंडित जवाहरलाल नेहरू के खिलाफ कौन-कौन आवाजें नहीं आयीं? हो सकता है कि डाक्टर साहब ने कुछ कहा हो, लेकिन कम्युनिस्ट पार्टी कांग्रेस को एक पूंजीवादी पार्टी मानती है। कैपिटलिस्ट पार्टी मानती है, हिन्दुस्तान में दाल्मिया और टाटा का राज्य है गोविन्द सहाय जी यू० एस० ए० का दौरा करके आये हैं। उन्होंने इशारा किया था कि चीन ने उस उद्देश्य से हमला किया कि वह जानता था कि क्यूबा पर झगड़ा होगा। आज आप पांच करोड़ की मांग करते हैं, और एक बाम्बर जहाज ७५ लाख रुपये में आता है। हमारा पांच करोड़ का टार्गेट लड़ाई के अन्दर एक बूंद होगा, इस जमीन को बचाने के लिये। अगर आपको पांच करोड़ से सन्तोष होता हो, तो आज प्रजासोशलिस्ट पार्टी, सब पार्टियां तैयार हैं। किसानों से हम कहेंगे कि अपना पैसा दें। किसान अपनी गर्दन दे रहा है। जो आदमी अपनी गर्दन देता है वह पैसे के लिये इनकार नहीं कर सकता। जिस जबान ने अपने चीथड़ों से निकाल कर पैसा दिया, उसने अपनी गर्दन को दिया, मैं पूछता हूं कि क्या जरूरत आ गयी थी उस जबान के लेने की? अगर आप गांव के अन्दर जायं तो मेरा खयाल है कि बुलन्दशहर के अन्दर, मेरठ के अन्दर बहुत से गांव नजर आयेंगे.....

श्री अध्यक्ष—आप प्रवर समिति के पक्ष में बोल रहे हैं या माननीय उग्रसेन के पक्ष में या किस पर बोल रहे हैं?

श्री बलवानसिंह—उनका तो यह है...

श्री अध्यक्ष—अगर प्रवर समिति के सुपुर्द करने के ऊपर आप बोल रहे हैं तो.....

श्री बलवानसिंह—इस प्रवर समिति के लिये कल्पनाथ सिंह और कमला सिंह जी का प्रस्ताव था और प्रवर समिति को अख्तियार है कि वह इस बिल को रिजेक्ट भी कर दे, यह

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

मानकर मैं बोल रहा हूं। मुझे ताज्जुब हुआ जब बहुगुणा जी ने कहा कि प्रवर समिति को भेजने के माने उसके इंटेशन को मान लिया.....

श्री अध्यक्ष---रामायण राय जी ने यह कहा था। रामायण राय जी को बहैसियत नेता के बोलने का अधिकार आपने दिया था कि जो बोलेगा उसकी जगह रामायण राय जी बोले और रामायण राय जी ने यह कहा था और नियम भी यही है कि प्रवर समिति के सुपुर्द करने का अर्थ यह होता है कि आपने बिल के सिद्धान्तों को मान लिया। अब आप जो चाहें बोल सकते हैं।

श्री बलवान सिंह---श्रीमन, बेसिक प्रिंसिपल्स की बात आपने कही। लेकिन बेसिक प्रिंसिपल यह भी है कि प्रवर समिति उसको रिजेक्ट कर सकती है। इसी को मानकर मैं बोल रहा हूं। (व्यवधान) इंग्लैन्ड में ऐसा है आप पढ़ लीजिये। रामायण राय जी की बात आपने कही। प्रजा सोशलिस्ट पार्टी पर बड़ा लांछन लगाया जा रहा है और माननीय गेंदा सिंह जी का भी जिक्र हुआ। माननीय गेंदासिंह जी का इस्तीफा इसी उद्देश्य से हुआ। उन्होंने कहा कि उनका एक कमिटमेंट हो गया, वह उनसे गलती हुई। गेंदा सिंह जी ने यह स्वीकार किया कि २५ परसेंट लगान का बढ़ाया जाना किसान के साथ ठीक नहीं है। इसलिये मैं यह आपसे कह रहा हूं और बिलकुल साफ कह रहा हूं, अगर कोई सज्जन और कोई सवाल करना चाहें तो कर सकते हैं।

मेरा कांग्रेस पार्टी से सीधा सवाल है कि आज आप हमारे ऊपर इस बात के लिये सोच रहे हैं कि देश की सुरक्षा का सवाल जब कहीं आये तो उसमें हम लोग रुकावट डालेंगे? मैं तो कहता हूं कि महात्मा गांधी ने सन् १९४२ में नारा दिया था। कांग्रेस वालों नें गांधी जी को फालो नहीं किया, लेकिन प्रजा सोशलिस्ट पार्टी ने उनको फालो किया। गांधी जी ने कहा कि करो या मरो। (व्यवधान) राय साहब को यह भ्रम है कि उस समय हमारी प्रजा सोशलिस्ट पार्टी नहीं थी, लेकिन उस समय कांग्रेस के अन्दर हमारी कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी थी। (लाल बत्ती होने पर) श्रीमन्, देखिये मेरे पांच मिनट तो इसी में लग गये। आपने कुछ सवाल पूछे, कुछ और लोगों ने पूछे।

श्री अध्यक्ष---आपने नाहक जवाब दिया। दो मिनट और हैं।

श्री बलवानसिंह---पांच मिनट और दे दीजिये। मैं यह कह रहा था कि गांधी जी ने डू आर डाई का नारा दिया था, करो या मरो। तो उस समय सन् १९४२ में उस डू आर डाई के लिये हम लोग जेलों से कूदे। हमारे बहुत से साथियों के शरीर पर गोलियां लगीं। तो सन् १९६२ में जब इस देश की सुरक्षा का प्रश्न आया तो एक छोटे से बिल को लेकर जिसमें कुल २५ परसेंट बढ़ाने की बात हो, हमारे कांग्रेस पार्टी के लोग हमारे इंटेशन को यह कहें कि सोशलिस्ट पार्टी और प्रजा सोशलिस्ट वाले इसका विरोध करते हैं, यह उनका खयाल गलत है और आज मुझे बड़ा दुख हुआ मुख्य मंत्री जी की बात को सुनकर। मैं माननीय मुख्य मंत्री जी से कुछ सुनना चाहता था। लेकिन माननीय मुख्य मंत्रीजी ने कहा कि हजार दो हजार या तीन हजार पाने वाले आई० सी० एस० और आई० ए० एस० वालों से वह कभी नहीं करा सकते, क्योंकि वह दूसरे सूबों के अन्दर चले जायेंगे, लेकिन आज चीन जब हिन्दुस्तान को छीनता चला जायगा तो ये आई० सी० एस० और आई० ए० एस० कहां जायेंगे और फिर किसान से तो आप उसके चिथड़े को भी छीनने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन इन हजार रुपया पाने वालों से कुछ भी कमी आप वालंटरी बेसिस पर भी कराने की हिम्मत नहीं रखते। यहां पर बहुत से एकोनामिक

[श्री बलवान्तसिंह]

मेजर्स दिये गये थे। क्या मैं पूछ सकता हूं कि मंत्रियों के बंगलों की पुताई बन्द हो गई? कोई मिनिस्टर पांच सौ रुपया से ज्यादा तनख्वाह न ले इसके लिये तो किसी आई० सी० एस० या आई० ए० एस० से पूछने की जरूरत नहीं थी? मेरा आपसे कहना है कि १९६१ में १५६ करोड़ रुपये का बजट था और वह अब १९१ करोड़ रुपये का हुआ। आसानी से ३४ करोड़ की बचत हो सकती है। आसानी से दो तीन करोड़ रुपया स्टेशनरी में बचाया जा सकता है। बड़ी आसानी से डी० आई० आर० द्वारा कानपुर में रुपया वसूल किया जा सकता है। जब मुख्य मंत्री जी वहां गये थे तो मैं भी था, अकेले पद्मपत सिंहानिया ही ५ करोड़ रुपया दे सकते हैं। आज देश की सुरक्षा के नाम पर उन से रुपया वसूल किया जा सकता है। यहां के हजारों अफसर ऐसे हैं कि जो ५०० रुपये से ज्यादा तनख्वाह पाते हैं। जो इकोनामी कमेटी है उसमें इन बातों पर विचार किया जाना चाहिये। अगर मुल्क में खतरे की बात है तो मैं बनारसीदास जी से कहना चाहता हूं कि वह किसान से २५ परसेंट की बात न कहें। जिसने अपने लाल को दे दिया, जिसने अपनी मांग की सिंदूर को दे दिया उससे आप २५ फीसदी लगान बढ़ाने की बात करते हो? बांध दो जितना चाहते हो और प्रजासोसशिस्ट पार्टी आप के साथ है, लेकिन जो कम्युनिस्ट और स्वतंत्र पार्टियां आपकी दोस्त बन कर बैठी हैं उनके लिये मैं गुप्त जी से निवेदन करना चाहता हूं कि वह आपकी असली दोस्त नहीं हैं और इसलिये उनकी बात को सुन कर मुझे दुख हुआ। असली दोस्त वही होता है जो आलोचना करता है जो आपकी खराबियों को बतलाता है चापलूसी नहीं करता। अन्त में मैं यही कहना चाहता हूं कि प्रजा सोशलिस्ट पार्टी हर तरह आपके साथ हैं।

श्री उग्रसेन—माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरे संशोधन प्रस्ताव पर जिन माननीय सदस्यों ने चाहे वे इस पक्ष के हों अथवा उस पक्ष के भाग लिया है, मैं उनका अत्यन्त आभारी हूं। श्रीमन्, यह बहस दो दिन से चल रही है और इस से कुछ नतीजे निकले हैं। आरदणीय सदन का मैं अधिक समय नहीं लेना चाहता, लेकिन जो नतीजे मैंने निकाले उनमें पहली बात तो यह है कि सरकारी पक्ष को इस बात का बड़ा खतरा है कि कहीं उनका मंत्रिमण्डल हमारी मांग पर छोटा न हो जाय। यह बात उनके दिमागों में है और जब मुख्य मंत्री जी, नियोजन मंत्री या जेल मंत्री बोलें, जो अभी न्यूयार्क से हो कर आये हैं, उनकी बात में यह एक बात झलकती रही। मैं मनोविज्ञान ज्यादा नहीं पढ़ा हूं, हां, जेल में जरूर कुछ उसका अध्ययन किया है और प्रोफेसर राजाराम शास्त्री की कुछ किताबें देखी हैं। जो बात दिमाग में होती है वह किसी न किसी तरीके से बाहर आ ही जाती है। इसमें मंत्रिगण को नाराज होने की बात नहीं है, लेकिन वे रात को सोते नहीं। जब से यह खतरा हो गया तो सोचना पड़ गया कि कहीं मंत्रिमंडल कम न करना पड़ जाय। उधर प्रतापसिंह कैरो ने यह कह दिया कि हमको भी सोचना पड़ेगा मंत्रिमंडल कम करने के लिये। अगर कहीं पंजाब में कमी हो गयी तो हम मर जायेंगे। तो इसलिये बेचारे रात को सोते नहीं।

श्री हुकुमसिंह विसेन—रात की बात आप कैसे जानते हैं?

श्री उग्रसेन—और सारा राष्ट्रीय संकट इस हेरफेर में आ गया मंत्रिमंडल की। मैं सदन को स्पष्ट कर देना चाहता हूं और प्रदेश की जनता को बतलाना चाहता हूं कि हम इन शर्तिया बातों में आने वाले नहीं हैं कि अगर मंत्रिमंडल घटा दिया जाय तो हम इसका विरोध नहीं, समर्थन करेंगे। हम सोशलिस्ट दल के सदस्य जो अपना सर्वस्व लुटा रहे हैं, उनके लिये यह बात मनोबल कम करने वाली है और हम न इसका समर्थन किये हैं और न करने वाले हैं और न करेंगे। यह बात आदरणीय सदन और जनता को साफ हो जानी चाहिये। मैं मुख्य मंत्री जी से कहता हूं कि इसकी सफाई करने की जरूरत नहीं कि मंत्रिमंडल क्यों न छोटा किया जाय या क्यों छोटा किया जाय। मैं जानता हूं कि आगे क्या होने वाला है। राजनीति में भविष्य-वाणी नहीं करनी चाहिये। कहीं कहीं राजनीतिक मनीषी लोग भविष्यवाणी करने को बेवकूफी की संज्ञा दे देते हैं, पर हमको ऐसा लगता है कि हम सुनते थे कि नारों का असर होने दो।

दो नारे लगे। एक तो मंत्री लोग कार पर चलना छोड़ दें और दूसरा यह कि मंत्री लोग मामूली एम० एल० एज० हो जायं। यह दो नारे लगे और हमको ऐसा लग रहा है कि कहीं इसका असर न होने लगे और अगर असर हुआ तो ऐसा होगा कि जिससे मुख्य मंत्री जी भी प्रसन्न हो जायेंगे। वह जानते हैं कि हमारा सीमा प्रान्त है। महाराष्ट्र और पंजाब का उदाहरण देता हूं। वह सीमा प्रान्त नहीं है। मगर महाराष्ट्र की विधानसभा ने जो प्रस्ताव किया, आप वह देखिये। यह उड़ीसा नहीं है कि जहां पर पटनायक ने पूरा फंड बिना मांगे ही दे दिया। इसलिये कि वह सीमा प्रान्त है। यह स्थिति बड़ी गड़बड़ है। वहां इकोनामी कमेटी बैठी हुई है। मैं यह मानता हूं कि उसने १०० घंटे से ज्यादा काम लिया और उसमें हमारे गुरु जी भी काम कर रहे हैं। आपको दिखाने के लिये कुछ तो काम करेंगे ही। जहां तक योजनाओं का सवाल है वह सोशलिस्ट पार्टी कभी यह नहीं कहती है कि उनको बन्द कर दिया जाय या उनमें कटौती की जाय। यह मैं मानता हूं कि मोर्चे पर काम करने वाले लोगों के लिये, उन जान देने वाले जवानों के लिये, उनको खड़ा करने के लिये हम जो कुछ भी हो सके करने को तैयार हैं। मैं यह भी नहीं कहता हूं कि यह लेजिस्लेचर बन्द हो जायं। मैं यह नहीं कहता कि आप ऐसेम्बली को तोड़ दीजिये। सोशलिस्ट पार्टी यह अवश्य कहती है कि कम्यूनिस्टों पर नजर रखी जाय, क्योंकि हम यह जानते हैं कि मुल्क में बड़ी बड़ी विभूतियां हैं। एक शेर है—

चमन में गुल कितने हैं और गुलों में खार कितने हैं।

इसका अपने आप स्पष्टीकरण हो जायगा। एक बात यह कही गई कि चीन के संबंध में कि रूस ने कुछ ऐसा दबाव डाला कि बोमडिला में आकर चाऊ-माऊ रुक गये। रूस ने कहा और उसके प्रवदा ने कहा जो कि रूस का एक मुख्य पत्र है और जिस तरह से सरकार का समर्थन वह करता है उतना समर्थन तो यह नेशनल हेराल्ड भी नेहरू जी का नहीं करता है। मैं प्रवदा के उस अंश को पढ़ देना चाहता हूं जिसमें उसने यह कहा कि चीन हमारा भाई है और हिन्दुस्तान हमारा दोस्त। अंग्रेजी में एक कहावत है कि ब्लड इज थिकर दैन वाटर। खून गाढ़ा होता है पानी से। रूस ने पहले मिग देने का वायदा किया था, परन्तु वह दे ही रहा है। मैं आपको बता दूं कि वह मिग नहीं मिलने वाले हैं। यदि ४-६ मिग उसने दे भी दिये तो क्या फर्क पड़ जायगा। मैं आपकी जानकारी के लिये बता दूं कि जो आपको मिग मिलेंगे उससे ज्यादा मिग चीन के पास पड़े हुये हैं। वह चीनी रूई की जो बंडी पहनते हैं वह कोल्ड प्रूफ होती है और चेकोस्लोवाकिया से बनकर आती है वहां की फैक्ट्री से। मैं आपको यह बता दूं कि दुनियां की सब कम्यूनिस्ट पार्टियां आज चीन की मदद कर रही हैं।

(व्यवधान)

श्रीमन्, मेरा यह कहना है कि डांगे जो दुनियां के कम्यूनिस्टों को सिखाने के लिये गये हैं उसका कोई फल नहीं होगा। वहां ख्रुश्चेव जैसे कूटनीतिज्ञ लोग बैठे हुये हैं जिन्होंने अपनी जिन्दगी सिर्फ इन्हीं बातों को सोचने में लगा दी है। यह सब बातें आपको बाद में मालूम होंगी।

मैं यह कहता हूं कि जो भी देश की सहायता करना चाहता है, हम उनका स्वागत करते हैं। मैं आपको बता दूं कि बात उन्होंने भी कही थी कि जिनके कदमों में चन्द्रभानु जी बैठते थे। वह आचार्य नरेन्द्र देव जी को नहीं भूले होंगे। जब जब देश की आजादी पर खतरा आया है पार्टी सोशलिस्ट पार्टी ने हमेशा मदद की है। पहले तो हमारे मुख्य मंत्री जी भी इसी सोशलिस्ट पार्टी में ही थे। माननीय गौतम जी तो उस जमाने में सोशलिस्ट पार्टी के मंत्री थे। जब भी देश पर कोई आपत्ति आई सोशलिस्ट पार्टी किसी से पीछे नहीं रही। मुझे एक बात सुन कर बड़ी ठेस लगी, आप अगर उस समय यहां होते तो उनको डांटते। वे कहते कहते यह कह गये कि खुदा न करे उनको हमारी मदद की जरूरत पड़े। मालूम होता है उनको अपने बेटे की शादी में बारात ले जाना है? यह कौन कह सकता है कि आज उनको हमारी जरूरत नहीं है या आज माननीय गुप्ता जी की जरूरत नहीं है? इब्तदाये इश्क है रोता है क्या, आगे आगे देखिये होता

[श्री उग्रसेन]

है क्या ? आप यह देखेंगे कि सोशलिस्ट पार्टी और प्रजा सोशलिस्ट पार्टी क्या मदद करती है ? आज गरीबों की तरफ से हम यह मांग करते हैं कि आप इसको वापस ले लीजिये । बात का बतंगड़ न बनाइये । उनके मनोबल को गिराइये मत । हमारी बातों पर विश्वास कीजिये । हम कभी गद्दार नहीं रहे । हम सब बातों को समझते हैं और हर मदद करने को तैयार हैं चाहे हमें नेफा में कटवा दीजिये, चाहे जो मदद लीजिये, हम तैयार हैं, मगर एक प्रार्थना है, आप मोटर पर चढ़ना छोड़ दीजिये, मंत्रि मंडल छोटा कर दीजिये । माल मंत्री ने वार लेवी की बात कही । वह लगाइये, बड़े बड़े पूंजीपतियों पर, मिल मालिकों पर लगाइये । सोशलिस्ट पार्टी की कथनी और करनी में कभी अन्तर नहीं रहा है । देश पर जहां तक आपत्ति का सवाल है, यहां पर खुल कर शस्त्रार्थ हो जाय ?

श्री अध्यक्ष---आपका समय समाप्त हो गया ।

श्री उग्रसेन---इसलिये मैं यह कहता हूं कि इस बिल को जनमत संग्रह के लिये घुमाया जाय ।

श्री हुकुमसिंह विसेन---माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने दो रोज से इस विवाद को सुना और बराबर यहां सदन में बैठा रहा । बहुत से हमारे मित्रों ने, इस तरफ से भी और उस तरफ से भी, दो एक को छोड़ कर बड़े नियंत्रित ढंग से अपनी बातों को यहां रखा । जहां तक संशोधनों का सवाल है एक उग्रसेन जी का है कि ६ महीने के लिये जनमत संग्रह के लिये घुमाया जाय, दूसरा कमलासिंह जी का है कि इसको प्रवर समिति में भेजा जाय, ८ दिन में वह रिपोर्ट आये। माननीय रामायण राय जी ने उसका समर्थन किया और सम्भवतः उन्होंने यह कहा कि जहां तक विधेयक के प्रिंसिपल का संबंध है वे उनको मानते हैं । जहां तक उग्रसेन जी के तथा और दूसरे संशोधनों का संबंध है यह रस्मन पेश किये गये हैं । कंसीडरेशन के मोशन की बात, यही २,३ बातें ज्वाइंट सेलैक्ट कमेटी, सैलेक्ट कमेटी, और सरकुलेशन के लिये ये संशोधन पेश किये जा सकते हैं । हम कम से कम १९२२ से देख रहे हैं जब हमारे भाई उग्रसेन जी बहुत नाबालिग रहे होंगे, और बलवान सिंह जी भी (हंसी) कि हमेशा ऐसे ही संशोधन पेश होते आये हैं । ८,९ क्लाज का यह विधेयक है । चार्जिग क्लाज ३ है, जिसमें २५ परसेंट की बात है । कौनसी पेचीदगी की बात इसमें है जो सेलेक्ट कमेटी को रैफर किया जाय ? एमर्जेंसी में यह कानून पास होना चाहिये और आप इसे टालना चहते हैं । आप यह भी चाहते हैं कि हम किफायत करें और यह भी कि सेलेक्ट कमेटी की रिपोर्ट आने पर असेम्बली फिर बैठे । एक तरफ किफायत की बात और दूसरी ओर खर्चा बढ़ाना चाहते हैं । ये दुधारी बातें हैं । यह सदन काबिल और योग्य है । जो नुक्स नजर आते हों उनके लिये संशोधन पेश किये जा सकते हैं और यह औजार आपके हाथ में है । मैं इन दोनों संशोधनों का विरोध करता हूं ।

हमारी और उग्रसेन जी की राय कभी मिलती नहीं है, लेकिन आज एक बात उन्होंने ऐसी कही जिससे हम मजबूर हैं कि उनकी राय में राय मिलावें । उन्होंने कहा है कि किसी खास पार्टी में पंचमार्गी नहीं है, ये सब जगह हैं । सरकार को इसका नोटिस लेना चाहिये । सरकार सतर्क रहेगी । बिल का चाहे कोई समर्थन करे या अपोज करे मगर यदि कोई वार एफर्ट में मुजहमत करता है सुरक्षा के काममें दखल देता है- तो यह सरकार उसे सहन नहीं करेगी ।

श्री उग्रसेन---मेरे कहने का दूसरा मतलब था । मैंने कहा कि वही नहीं है, बाहर भी बहुत गद्दार हैं ।

श्री हुकुमसिंह विसेन---जाने दीजिये । एक मर्तबा हमारी और आपकी राय मिली तो । मैं कोई राजनैतिक स्पीच नहीं देना चाहता हूं और न मुझमें क्षमता है ।

बिल की बहस के दौरान में मैं यह सुनता रहा कि हमारी दिक्कतें हल होती हैं या नहीं । मैंने अपनी तकरीर में कहा था कि यह बिल करेंट ईयर के लिये महज है । भानुप्रतापसिंह जी ने

एश्योरेंस चाहा था। मैं उसे फिर दोहराता हूं कि यह विधेयक करेन्ट इयर के लिये है, जब तक बहमजेंसी है। हमारा एश्योरेंस एक ही मर्तबा बहुत काफी हुआ करता है। हम उनमें से नहीं हैं जो आश्वासन देकर बैकआउट कर जाते हैं।

जो धन इस वक्त चन्दे की शक्ल में नेशनल फंड में है वह सेन्टर को चला जायगा और सेन्टर को ही उसे खर्च करने का अधिकार होगा। अगर कोई अंश राज्य सरकार को मिल जाय तो मिल जाय, उस पर हमको अधिकार हो सकता है, वरना नहीं, लेकिन जो डिफेंस का काम हमारे सामने है उसको हम करेंगे। सिविल डिफेंस का काम हमको करना है, हमारी जो सड़कें हैं, जो स्ट्रेट्रेजी की जगहें हैं, जो पुल हैं उनको हमें ठीक रखना है। फैक्ट्रियां, जहां वार मेटीरियल बनता है उनका ठीक इन्तजाम करना है। मिलों में जवानों के लिये ठीक कपड़े बनते रहें, बन्दूक कारतूस बनते रहें, जूते बनते रहें, इन सब का हमें प्रबन्ध करना है। हमें अपने और उनके खाने के लिये अन्न भी पैदा करना है, अगर खाना न होगा तो जवान कैसे लड़ेंगे। जो पैसा हमको मिलेगा वह इन्हीं कामों में खर्च होगा। यह सिविल डिफेंस नहीं तो क्या है? सड़कें, कलवर्ट, पुल, पी० आर० डी०, पी० ए० सी०, विलेज कमेटी, डिफेंस कमेटी, यह सब सेकिंड लाइन आफ डिफेंस हैं। यह सब डिफेंस का ही खर्चा है, दादा का तो है नहीं।

यह किसान क्यों देता है क्योंकि किसान समझता है कि चीन एक ऐसी कौम है जो देश को जीत कर केवल दिल्ली में बैठकर ही नहीं रह जायगी। चीन गांवों में भी घुसेगा और किसानों के खेतों पर कब्जा करेगा। अभी तक जो भी परिवर्तन हुये हैं वे इस हद तक नहीं हुये हैं। इसलिये किसान सतर्क है। श्रीरामचन्द्र विकल ने कहा कि गांवों में रुपया है लेकिन हम तो चाहते हैं कि वह कंसोलिडेटेड फंड में आये। लेकिन अगर हम इसमें खामी करते हैं या किसी ने इसमें कोई रुकावट पैदा की तो उसकी बड़ी भारी जिम्मेदारी होगी जिसकी कोई जवाबदेही नहीं कर सकता। लिहाजा हमारा यह प्रयास हमेशा रहा है कि सबसे मिलजुल कर काम करें। हम पहले भी एक विधेयक लाये थे लेकिन उसकी बड़ी मुखालफत थी और हमसे कहा गया कि इसे स्थगित कर दिया जाय, बैठकर उसको सोचा जाय। सरकार ने उस हुक्म की तामील की। जब आपने कोई हुक्म दिया तो उसकी तामील करना गवर्नमेंट का फर्ज होता है लेकिन अगर आप उस फर्ज से पीछे हट जाते हैं किसी वजह से तो गवर्नमेंट पीछे नहीं जा सकती है, उसकी मजबूरी है। इस बात को साबित करने की जरूरत नहीं है कि कुछ लोग अपने वायदे से हट गये। कुछ नेताओं ने यहां खड़े होकर बयान दिया कि हमने वायदा किया था। माननीय गेंदासिंह ने इस्तीफा दिया वह एक ऐसा वाकया है जो सरकमस्टेंशल एवीडेंस है। एक उपनेता केवल बैठे रहे कुछ बोले ही नहीं। कहीं खत का हवाला दिया गया, कहीं परिपाटी का हवाला दिया गया, ये सब बातें ऐसी हैं जो यह साबित करती हैं कि उसमें सबकी रजामंदी थी। अब आप पिछड़ जायं तो मैं कैसे पिछड़ूं। यह तो सांप छछूंदर की हालत हो गयी। आप उसे निगल सकते हैं लेकिन मैं न तो उसे निगल सकता हूं और न उगल सकता हूं। यह हमारी दिक्कत है। यह विधेयक बहुत ही सीधा सादा और जरूरी है और इसका पास होना निहायत जरूरी है। हमारे भाई बलवान सिंह जी ने न मालूम कहां की बात कह दी कि सन् १९४२ में कांग्रेस वालों ने गांधी जी की बात नहीं मानी। मैं कहता हूं कि उस वक्त आप ही मान लेते, कोई हमारे लिये पट्टा तो लिखा हुआ नहीं था कि हम ही मानें। एक कहावत है कि नया मुसलमान पियाज-पियाज ही चिल्लाया करता है। उस वक्त न पी० एस० पी० का वजूद था और न आपका वजूद था, फिर उस समय पी० एस० पी० के होने का सवाल ही कहां से पैदा होता है। मैंने इस बात को बनारसी दास जी से पूछ लिया है कि उस वक्त पी० एस० पी० का वजूद ही नहीं था, बहुत दिनों तक पर्दा नहीं रखा जा सका और आपका पर्दाफाश यहां बहुत जल्दी हो गया। अगर माननीय बलवान सिंह जी बुरा न मानें तो एक बात और कह दूं। एक किस्सा मुझे मालूम हुआ है कि हमारा भाई गेंदा सिंह जी हमारा बहुत पुराने मित्र है और जिसका आदर मैं दिल से करता हूं, उम्र में तो वह मुझसे छोटे हैं लेकिन उनको मैं अपने से बड़ा ही मानता हूं यहां एक ऐसा वातावरण पैदा हो गया कि जिससे उनको इस्तीफा देना पड़ा। उसके लिये मुझे वाकई खेद है। मैं इसे किसी राजनीतिक दृष्टिकोण से नहीं

[श्री हुकुमसिंह विसेन]

लेता और न मैं कोई बनावटी बात करता हूं, मैं तो सीधी सादी बात करता हूं कि मुझे बहुत दुख है और मैं आशा करता हूं कि वे फिर आवेंगे और यहां रहेंगे। कुछ ऐसी खबर उड़ी लोगों में कि वे न आवें तो हम नेता बन जायं, ऐसी कुछ लोग चाहते हैं। इस सिलसिले में एक किस्सा है कि एक मौलाना साहब कहीं सफर में गर्मी के दिनों में मई-जून में जा रहे थे। धूप बड़ी तेज थी और वे एक नीम के पेड़ के नीचे बैठ कर सुस्ताने लगे। वे बड़े परेशान थे, उन्होंने कहा कि या खुदा मेरे लिये कोई सवारी अता कर। एक फौजी सवार अपनी घोड़ी पर उसी रास्ते से जा रहा था संयोगवश उसकी घोड़ी वहीं ब्याह गयी। फिर उस फौजी सवार ने मौलाना साहब से कहा कि ऐ मौलाना चलो इस घोड़ी के बच्चे को ले चलो। इस पर मौलाना ने कहा कि खुदा ने मेरी मुराद तो पूरी की लेकिन तले को ऊपर कर दिया। मैंने सुना है कि गेंदा सिंह की जगह अभी किसी नेता का चुनाव नहीं होगा और आफिशियेटिंग नेता चलते रहेंगे, तो यह भी तले का ऊपर हो गया।

(हंसी)

श्री कल्पनाथ सिंह जी की बात का जवाब मैं क्या दूं। मेरी आदत किसी की जबान से जबान लड़ाने की नहीं है। उनके साथ माननीय उग्रसेन जी जबान लड़ा सकते हैं क्योंकि उनको इसका मौका अक्सर मिलता रहता है। मैं तो खामोशी अख्तियार कर लेता हूं और अन्त में मैं सदन से सिर्फ यही इस्तदुआ करता हूं कि वह इस विधेयक के कंसीडरेशन के प्रस्ताव को स्वीकार करे।

श्री अध्यक्ष—अब जो मूल प्रस्ताव है माननीय राजस्व मंत्री जी का उसे मैं आप के सामने रखूंगा और अगर वह स्वीकार हो जायगा तो जो संशोधन रखे गये हैं वह स्वतः गिरे हुए समझे जायंगे।

श्री उग्रसेन—क्या संशोधनों पर पहले मत नहीं लिया जायगा ?

श्री अध्यक्ष—मैं दोनों तरीकों में से कोई अख्तियार कर सकता हूं।

श्री उग्रसेन—ऐसी परम्परा रही है श्रीमन् कि संशोधनों पर पहले मत लिये जाते हैं।

श्री अध्यक्ष—मैं मूल प्रस्ताव ही ले रहा हूं।

प्रश्न यह है कि उत्तर प्रदेश मालगुजारी तथा लगान पर आपातिक अधिभार विधेयक, १९६२ पर विचार किया जाय।

(प्रश्न उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ।)

श्री अध्यक्ष—अब केवल खंड रह जाते हैं और उस के लिये सोमवार को साढ़े दस बजे फिर बैठेंगे।

(इसके बाद सदन ५ बजकर २१ मिनट पर सोमवार, १० दिसम्बर, १९६२ के १० १/२ बजे दिन तक के लिये स्थगित हो गया।)

देवकीनन्दन मित्थल,
सचिव, विधान सभा,
उत्तर प्रदेश।

लखनऊ :
८ दिसम्बर, १९६२।

पी० एस० यू० पी०—ए० पी० २५४ एल० ए०—१९६३ (प्रो०)—८३०।